वजूद के अक्स

ज़िंदगी, रिश्तों और एहसासों की अनकही दास्तान

अमन

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

BLUEROSE PUBLISHERS
India | U.K.

Copyright © Aman 2026

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author. Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the publisher assumes no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

BlueRose Publishers takes no responsibility for any damages, losses, or liabilities that may arise from the use or misuse of the information, products, or services provided in this publication.

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

For permissions requests or inquiries regarding this publication,
please contact:

BLUEROSE PUBLISHERS
www.BlueRoseONE.com
info@bluerosepublishers.com
+91 8882 898 898
+4407342408967

ISBN: 978-81-69956-52-9

Cover Design: Ajay Dhyani
Typesetting: Sagar

First Edition: July 2026

उद्धरेदात्मनात्मानं नात्मानमवसादयेत् ।
आत्मैव ह्यात्मनो बन्धुरात्मैव रिपुरात्मनः ॥

"मनुष्य को अपने द्वारा (अपने मन और बुद्धि के बल पर) स्वयं का उद्धार करना चाहिए, अपने आप को कभी निराश या पतित (नीचे गिरना) नहीं होने देना चाहिए। क्योंकि इंसान स्वयं ही (उसका अपना मन ही) अपना सबसे बड़ा मित्र है, और वह स्वयं ही अपना सबसे बड़ा शत्रु भी है।" श्रीमद्भगवद्गीता (अध्याय 6, श्लोक 5)

अनुक्रमणिका

मान और जीत 1

फट्टू और वो 13

उजड़ा दयार 70

परत दर परत Layer by layer 94

धुंध और दीप 129

द्वंद 139

चटक 143

फ़र्ज़ के पहिए 149

लेखक की ओर से 165

मान और जीत

पिछले कुछ दिनों से मान घर पर ही था, क्योंकि उसके पांचवीं कक्षा के इम्तिहानों का नतीजा आना अभी बाकी था । और फिर अगली कक्षा के लिए उसका दाखिला भी किसी दूसरे स्कूल में कराया जाना था, क्योंकि उसका पहले वाला स्कूल केवल पांचवीं कक्षा तक ही था ।

कुछ दिनों बाद जब उसने अपने पिताजी को, स्कूल के हेडमास्टर जी के साथ देखा, तब उसे पता चला कि अगली कक्षा के लिए उसका दाखिला, गांव के ही सरकारी स्कूल में करवा दिया गया है । और अब कल से उसे स्कूल जाना है ।

मान जो पांचवीं कक्षा तक गांव के ही एक निजी स्कूल में पढ़ा था, सरकारी स्कूल के रंग ढंग से बिल्कुल बेखबर था ।

अगले दिन सुबह स्कूल जाने के लिए तैयार हो, जब वह स्कूल पहुंचा, तब उसे पूछने पर पता चला कि उसकी जमात दूर पेड़ के नीचे लगी है ।

वहां मैडम से पूछ कर वह अपनी जमात में नीचे टाट पर सबसे आगे वाली पंक्ति में बैठ गया, मान जो अब तक बैंच पर बैठता आया था । नीचे टाट पर बैठने का अभ्यस्त न था, अचानक से नीचे टाट पर बैठ कर उसे कुछ असहाय महसूस हुआ, थोड़ी ही देर में उसे अपने कूल्हों के नीचे खुजली होने लगी, मगर वह चुपचाप बैठा रहा ।

कुछ देर बाद जब मिड- डे-मिल के लिए मध्याह्नत्र की छुटी हुई, तब जाकर उसे कुछ आराम महसूस हुआ, इतने में उसकी पहचान कक्षा के कुछ विद्यार्थियों से हो गई थी । उनमें से एक था जीत, और दूसरा अख्तर अली, जिनसे उसकी दोस्ती हो गई, जीत कुछ ही दिनों में मान का परम मित्र बन गया था । जीत पढ़ने में होशियार था, और कक्षा का मॉनिटर भी । दोनों कक्षा में सबसे आगे बैठते थे, मान जो पढ़ने में पहले से ही अच्छा था, कुछ ही दिनों में कक्षा का दूसरा मॉनिटर बन गया ।

पर सरकारी स्कूल में पढ़ाई उसके पहले वाले स्कूल के माफिक सुचारु रूप से नहीं होती थी । कभी कक्षा में मास्टर जी अपना विषय पढ़ाने आ जाते तो कभी नहीं भी । पर इनके विपरीत गणित व विज्ञान विषय की मैडम, नियमित रूप से अपनी कक्षाएं लेती । धीरे – धीरे मान की इन विषयों में रुचि अन्य विषयों से अधिक होने लगी थी ।

अन्य विषयों के अध्यापकों का नियमित रुप से कक्षा न लेने की वजह से, मान का उन विषयों की तरफ रुझान कम होने लगा । अगर कभी कक्षा में मास्टर जी विषय पढ़ा कर, दैनिक गृह कार्य के रुप में घर से प्रश्न याद करने को दे भी जाए, तो मान ये सोचते हुए प्रश्नोत्तर याद करना टाल देता, कि क्या पता मास्टर जी कल कक्षा आयेंगे भी या नहीं ।

पर इसके विपरीत जीत नियमित रुप से, घर जाकर हर विषय को पढ़ता । और स्कूल में उस विषय की कक्षा का समय हो जाने पर जब मास्टर जी कक्षा में नहीं आते । तब जीत मान के लाख मना करने पर भी स्टाफ रूम से मास्टर जी को बुला लाता । “मास्टर जी चलिए कक्षा में आपके विषय का समय हो गया है, और आपने कल घर से काम भी दिया था” । फिर उधर से जीत आगे - आगे और मास्टर जी पीछे -पीछे, कभी – कभी तो विपरीत हो जाता, मास्टर जी जीत को अपनी बांहों में उठाए कक्षा

की तरफ, आ रहे होते, क्योंकि जीत छोटे कद का हल्का सा और सदैव से हसमुखी लड़का था ।

और फिर तब पूरी कक्षा में जीत को छोड़कर, सभी की प्रश्नोत्तर याद न किए जाने के कारण डंडे से पिटाई होती । और इस क्रम में मान भी कई दफा सबसे आगे खड़ा मिलता । यह देख जीत बैठा – बैठा, मान को देख मुस्कुरा रहा होता ।

बाद में मान जीत से रुठा भी रहता, पर क्योंकि पूरी कक्षा में जीत मान का परम मित्र था । तो इसलिए मान ज्यादा देर तक रुठा भी नहीं रह पाता, यूं तो मान और जीत की अख्तर अली से भी अच्छी दोस्ती थी, किंतु वह कक्षा के शरारती बच्चों में पीछे अधिक बैठता था । जिस वजह से उनमें इतना मिलाप न हो पाता ।

कभी- कभी मान को भी अचंभा होता आखिर जीत इतना पढ़ कैसे लेता है, कई दफा वह जीत से पूछने की कोशिश करता, लेकिन **"यह ख्याल उसके वहम-ओ-गुमान से ही निकल जाता। "**

एक दिन अचानक जब वे कक्षा में यूं ही बैठे थे, तब मान के जहन में वो सवाल आ गया, और वह जीत से पूछ बैठा ।

मान – “जीत अच्छा ये बताओ दोस्त तुम इतना पढ़ कैसे लेते हो, और कक्षा में भी हमेशा प्रथम आते हो ।”

जीत – “थोड़ा सोचते हुए, पहले तो मुस्कुराया फिर कहने लगा, है यार बस इसके पीछे भी एक छोटी सी कहानी है, जिसने मुझे बदल दिया” ।

मान – “अच्छा तो बताओ मुझे, मैं कौन सा कहीं दौड़े जा रहा हूं” ।

जीत – "तो सुनो तीन साल पहले मैडम ने घर से मेरी माँ को बुलाया, और उन्होंने मेरी माँ के सामने मेरी शिकायत करते हुए कहा कि आपका बेटा बहुत नालायक है । बिल्कुल नहीं पढ़ता, दिनभर कक्षा के शरारती बालकों के साथ बैठा रहता है । और भी बहुत कुछ, तब मेरी माँ की आँखें हल्की सी भर आई थी, उन्होंने मेरी तरफ देखा, पर कुछ कहा नहीं, और मैडम को प्रणाम करके चली गई । तब मुझे एहसास हुआ जैसे मेरी वजह से मेरी माँ को, सबके सामने शर्मिंदा होना पड़ा । उनका सर उस दिन मेरी वजह से झुक गया, और वह चोट जैसे मुझे अंदर तक लगी ।"

"बस तभी से मैंने मन बना लिया था, कि मैं इतना पढ़ूंगा कि फिर कभी मेरी माँ को मेरी वजह से स्कूल में उलहाना न सुनना पड़े । अब जब मेरी माँ, इम्तहान के नतीजों वाले दिन स्कूल आती है, और उन्हें पता चलता है, की मैं पूरी कक्षा में नंबर एक पर आया हूं, तो वे खुशी से खिल उठती है ।"

जीत एक साधारण परिवार का लड़का था, जिसके पिता गांव के बाहर टायर पंचर की दुकान करते थे । और जीत की माता जी एक कुशल गृहिणी थी । जबकि मान भी एक साधारण परिवार का ही लड़का था, मगर समाज की दृष्टि में उसका कुल जीत के कुल से कुछ ऊंचा था । और उसके पिता एक फैक्टरी में काम करते थे ।

इस सब के विपरीत मान जीत के घर घंटों व्यतीत करता, वे साथ में खेलते और अक्सर स्कूल से दिया जाने वाला दैनिक कार्य साथ में करते, इससे उन दोनों के परिवारों को जरा भी आपत्ति नहीं थी ।

हां समाज के अन्य लड़के जो उनकी उम्र के थे, अक्सर मान के साथ जीत के घर जाने को लेकर व्यंग्य करते । पर मान उनकी बातें दिल पर न लेता, शायद कम उम्र में ही वह समाज की मानसिकता समझने लगा था ।

स्कूल में अक्सर वे खाली बैठे रहते, कभी कोई मास्टर जी कक्षा में आ गए तो पढ़ लिए नहीं तो कक्षा में ही बैठे इधर उधर के खेलों में मशगूल । तब कक्षा के उद्दंड विद्यार्थी अपनी ही उद्दंडता में लगे रहते । पूरी कक्षा ऐसे ही बिखरी रहती, लड़कियां या तो अपने बस्ते से ड्राइंग की फाइल निकाल कर कुछ न कुछ चित्रकारी करने में लगी रहती, या फिर बजरी के ढेर से कुछ छोटी गोल बजरी निकाल कर ले आती । और उनसे बंटे खेलने लग जाती ।

कुछ लड़के समूह में इधर उधर बैठे रहते, तो कुछ कभी – कभी बस्ता उठाकर स्कूल की दीवार फांद भाग जाते, जैसे जेल से कैदी भागते हों, तो कुछ ऐसे अधमरे से बैठे रहते जैसे कोई कैदी अपनी रिहाई का इंतजार कर रहा हो ।

मास्टर जी और मैडम सब की स्टाफ रूम में अपनी ही गुफ्तगू चलती रहती।

इस दौरान मान और जीत कक्षा में टाट पर सबसे आगे बैठे अपने में लगे हुए एक खेल खेलते रहते । वे अक्सर इस खाली समय में अपने भारी भरकम बस्ते से वो किताब चुन कर निकालते जो उन्हें पढ़ाई नहीं जाती बस बस्ते में घर से स्कूल और स्कूल से घर, उस किताब का इतना ही काम था । और जिस दिन न लेकर आए, और पूछ लेने पर वो किताब बस्ते में न मिले, तो समझो मास्टर जी से कुटाई पक्की ।

दोनों उस किताब को खोल उसका एक – एक सिरा अपनी – अपनी और लेकर बैठ जाते, और उन लिखे हुए, शब्दों में पैन लेकर ढूंढने लग जाते, **और** शब्द । "न जाने उन दोनों को किसने ये खेल बताया था ।"

दोनों पहली लाइन से अंत तक, पूरे इत्मीनान के साथ अपने -अपने पन्ने में ढूंढते **और** शब्द, और फिर किताब में अपने – अपने पन्ने की अदला बदली करते हुए, एक दूसरे की त्रुटियां खोजने लग जाते, की कहीं उन दोनों में से किसी ने कोई **और** छोड़ तो नहीं दिया, जिसे वे न ढूंढ पाए हों । अंत में जिसे एक दूसरे की त्रुटियां अधिक मिल जाती वह जीत जाता ।

उनकी किताबों के पन्ने नीले रंग के गोलों से अधिक रंगे मिलते, बजाए इसके की उन्हें वे किताबें कभी पढ़ाई गई हों, और उन पर पढ़ते वक्त कभी कोई पेन या पेंसिल चली हो ।

वे दोनों अक्सर स्कूल के मिड – डे – मिल में बने भोजन को न खाकर अपने - अपने घर से लाए गए, भोजन को खाते, क्योंकि उन्हें स्कूल के मिड – डे – मिल में बना भोजन, भोजन कक्ष व पानी की टंकी की सफाई पसंद न थी । पानी की टंकी के ऊपर वे अक्सर चढ़ कर उसमें झांकने लगते, और तब उन्हें नजर आते छोटे – छोटे हल्के लाल रंग के तैरते हुए कीड़े, और टंकी की दीवारों पर जमी काई ।

और जब पानी की टंकी में पाए जाने वाले कीड़ों का मुद्दा तूल पकड़ लेता, तब स्कूल के उदंड विद्यार्थियों के जिम्मे उस पानी की टंकी की सफाई का काम सौंपा दिया जाता ।

इसके साथ ही वे देखते थे, उनके लिए जो भोजन पकाया जाता है, उसमें से अध्यापकों के लिए अलग से निकालकर उसे अच्छे से मसालों व तड़के के साथ स्टाफ रूम में परोसा जाता है ।

“वे अक्सर एक दूसरे से हंसते हुए कहते, “वो चला मास्टर जी का कुकर ।”

ऐसे ही एक दिन कक्षा में जब मास्टर जी उन्हें पढ़ा रहे थे, तब जीत की नजर कक्षा में आई आंटी पर जा पड़ी, वे वही आंटी थी, जो स्कूल में मिड – डे – मिल का खाना बनाया करती थी । तब उनके हाथ में एक सफेद रंग की थैली थी । जिसमें लगभग चार से पांच किलो चीनी होगी । उस वक्त उन आंटी ने मास्टर जी की और थैली को बढ़ाते हुआ कहा, लीजिए सर ये आपका हिस्सा है । और फिर मास्टर जी ने उनसे कहा वहां सामने अलमारी में रख दीजिए मैं ले जाऊंगा ।

उस दिन जीत और मान को समझ आया कि उनकी मिड – डे – मिल की खीर में मीठा क्यों कम रह जाता है, “दोनों मन ही मन एक दूसरे की तरफ देख कर मुस्कुराने लगते हैं” ।

जब कभी वे दोनों किताबों में **और** ढूंढने में मशरूफ रहते थे, तब उन्हें कभी – कभी उनसे बड़ी जमात के बच्चे बुलाने आ जाते, की तुम दोनों को हमारी कक्षा में विज्ञान वाली मैडम जी ने बुलाया है ।

दोनों उन के साथ - साथ चल पड़ते और पहुंचने पर सामने देखते, पूरी कक्षा को खड़ा किया हुआ है । क्योंकि उन्होंने विज्ञान के प्रश्नोत्तर याद नहीं किए, जो उन्हें दैनिक गृह कार्य में घर से याद करने के लिए दिए गए थे ।

तब मैडम उन दोनों के हाथ में, एक - एक डंडा पकड़ाते हुए कहती कि ये लो, और जरा इन सब के हाथों पर दो – दो डंडे जोर से लगाओ । और अगर तुमने नहीं लगाए, तो तुम्हें मैं लगाऊंगी ।

“शायद इनमें थोड़ी शर्म आ जाए, अपने से छोटी जमात के बच्चों से डंडे खाकर ।”

कभी – कभी इसके विपरीत भी हो जाता, जब कभी मान विज्ञान विषय का दैनिक गृह कार्य किसी वजह से नहीं कर पाता, तब उसे मैडम जी से डांट सुनते हुए माफी मांगनी पड़ती, पर ऐसा कभी नहीं हुआ की जीत ने दैनिक गृह कार्य न किया हो ।

धीरे – धीरे दिन बीत रहे थे ।

दोनों अब आठवीं जमात में आ गए थे, जो अब इस स्कूल की अंतिम जमात थी, क्योंकि उनके गांव का यह स्कूल माध्यमिक स्तर तक ही था ।

एक दिन विज्ञान विषय की मैडम कक्षा में पढ़ाते हुए, सब से बारी – बारी सवाल पूछने लगती है, की वे सब बड़े होकर क्या – क्या बनना चाहते हैं । जब मान की बारी आती है, तब मान बताता है, की वह बड़ा होकर पंडित बनेगा, इस पर मैडम हल्का सा हंसने लगती है । और अगले ही पल, कक्षा समाप्ति की घंटी बज जाती है ।

तभी मान जीत से पूछता है, अच्छा जीत तुम बड़े होकर क्या बनोगे?

जीत – “मैं बड़े होकर मास्टर बनूंगा ।”

मान – “अच्छा”, और वह क्यों?

जीत – “क्योंकि मास्टर बन कर फायदा है, सुबह आठ बजे आओ, और दोपहर को दो बजे छुटी ।”

मान – “ हां यार वैसे बात तो तुमने बड़ी सही कही ।”

जीत – “वो तो है ही ।”

धीरे – धीरे दोनों के वार्षिक इम्तहान नजदीक आ रहे थे, अब वे दोनों कक्षा में अक्सर बैठे अपने आप से ही पढ़ते रहते । और कक्षा के उद्दंड

बालक हमेशा की तरह अपनी उद्दंडता में लगे रहते, उन्हें देख कर कक्षा की कुछ अन्य लड़कियां भी खेल को छोड़ पढ़ने बैठ जाती, की कहीं वे फेल न हो जाए । ऐसे मे उन सब का एक समूह बन जाता, कुछ पूछना होता, तो आपस में एक दूसरे से पूछ लिया जाता ।

“पर वे सब इस बात से बिल्कुल बेखबर थे, कि सरकार की नई शिक्षा नीति के तहत आठवीं जमात तक किसी भी विद्यार्थी को फेल नहीं किया जाएगा । “और शायद यही इस नीति की विसंगति रही, कि मास्टर जी उन्हें पढ़ाने से ज्यादा स्टाफ रूम की गुफ्तगू में ज्यादा दिलचस्पी रखते थे ।”

दोनों ने इस साल भी अपनी और से मन लगाकर पढ़ाई की, और हमेशा की तरह जीत कक्षा में प्रथम आया, और मान द्वितीय, इम्तहान के नतीजों वाले रोज जीत की माता जी भी आई थी । जिनके मुख पर, मान जीत के प्रथम आने की खुशी साफ देख पा रहा था । किंतु मान के घर से इस बार भी कोई नहीं आया था ।

आगे की पढ़ाई के लिए, दोनों ने पास के ही गांव के एक सरकारी स्कूल में, दाखिला लेने की योजना बनाई । जो इंटर तक था, और जाकर एक दिन दाखिला ले लिया । लेकिन दाखिला लेने के कुछ ही दिनों बाद जीत ने उस स्कूल से नामांकन रद्द करवाकर पास के दूसरे सरकारी स्कूल में दाखिला भर दिया । क्योंकि उसे वह स्कूल पसंद नहीं आया । लेकिन मान को कुछ पारिवारिक कारणों से उसी स्कूल में पढ़ाई जारी रखनी पड़ी ।

"बस इस मोड़ पर आकर दो जिगरी दोस्त अलग हो गए ।"

पर गांव में दोनों एक दूसरे से मिलते रहते, कभी खेतों की तरफ घूमने निकल जाते तो कभी पास के कस्बे की ओर ।

जीत को क्रिकेट खेलना बहुत पसंद था, और मान को उसे क्रिकेट खेलते देखना, अक्सर जब जीत खेलने के लिया जाया करता । तब मान को अपने साथ साइकिल पर बैठाकर ले चलता, पर आधे रास्ते में ही उसे बोल पड़ता कि अब साइकिल तुम चलाओगे । और कभी – कभी तो दोनों तरफ से मान को ही साइकिल चला कर लानी पड़ती, और जीत पीछे बैठा, मान को चिल्ला – चिल्ला कर कहा करता, और तेज मान और तेज ।

जीत अब जिस स्कूल में पढ़ता था, उसमें मान के स्कूल के मुकाबले, ज्यादा बेहतर ढंग से पढ़ाई होती थी । थे तो दोनों ही सरकारी स्कूल, पर दोनों ही स्कूलों के प्रबंधन में खासा अंतर था ।

नतीजा मान दसवीं जमात के प्रथम समेस्टर के बोर्ड इम्तहान में गणित विषय में फेल हो गया । उसकी अंग्रेजी भी जीत के मुकाबले बेहतर नहीं थी, फिर भी मान ने प्रयास किया ।

एक दिन जब मान योंही अपने गणित के विषय को लेकर परेशान बैठा था । तब जीत उसे देखते ही समझ गया, और डांट लगाते हुए कहने लगा, “क्या हुआ इतना भी उदास होने वाली बात नहीं है, देखना तुम अगली बार गणित में पास हो जाओगे, मैं तुम्हें पढ़ाऊंगा”, “क्या सच में जीत”, “अरे हां भाई ।”

और अब तो उस दिन से जीत भी मान को कभी – कभी गणित विषय पढ़ने में उसकी मदद कर दिया करता । बोर्ड के अंतिम समेस्टर के इम्तहान नजदीक आ रहे थे, दोनों ने परीक्षा को ध्यान में रखते हुए मेहनत दुगनी

कर दी । अंत में जब परीक्षा के नतीजे आए तब दोनों उत्तीर्ण थे, हां बस मान के अंक जीत के मुकाबले थोड़े कम रहे, पर दोनों दोस्त खुश थे ।

लेकिन वे दोनों नहीं जानते थे, उन दोनों की ये खुशी ज्यादा दिन की नहीं है ।

और फिर अचानक एक दिन, जीत का परिवार, कुछ निजी कारणों से गांव छोड़ कर कहीं दूर चला गया । इतनी दूर की मान के पास जीत का न कोई पता था, न ही जीत से संपर्क करने का कोई साधन । हाँ जाने से पहले जीत एक बार, मान से मिलने उसके घर जरूर आया था । उस दौरान दोनों के दरमियान कुछ गुफ्तगू हुई थी ।

जीत- "यार हम आज शाम को चले जाएंगे, जाने के सभी तैयारियां हो चुकी हैं।"

मान – "भरे मन से अच्छा ।"

जीत – "हाँ"

मान – "पर यार तूने पहले क्यों नहीं बताया था हां?"

जीत – "यार मुझे खुद कल ही पता चला है, परिवार वाले बस मेरी परीक्षा के नतीजे आने का इंतजार कर रहे थे, वरना हम कब के चले जाते ।"

मान – "अच्छा"

जीत – "हां"

मान – "अच्छा जा कहां रहे हो ये तो बता ।"

जीत – "ज्यादा नहीं पता पर फिलहाल कुछ दिनों के लिए, नानी के घर पर ही रुकने वाले है, उसके बाद ।"

मान – “अच्छा”

जीत – “हूं”

मान – “मिलने तो आता रहेगा न यार?”

जीत – “हां जरूर कोशिश करुंगा, वादा नहीं ।”

फिर कुछ देर सन्नाटा सा छाया रहा...,

जैसे हवाएं भी रुक सी गई हों, मानो दोनों को देखते हुए सूरज ने भी अपना ताप कम कर लिया हो । सामने के चबूतरे पर कबूतर भी चुपचाप बैठे थे, जैसे उनके अंतिम मिलन के साक्षी बन रहे हों । पेड़ पर गिलहरियां जो घोंसला बना रही थीं, वे भी जैसे अपना काम छोड़ एकटक इसी तरफ देखने लगी हों । दोनों की आंखों में हल्की सी नमी थी, पर पूरी तरह से आंसू नहीं, जैसे दोनों ने अपनी - अपनी पीड़ा को व्यक्त न करके, मन ही मन में दबा लिया हो ।

और फिर कुछ देर बाद जीत उठ खड़ा हुआ, और कहने लगा, अच्छा यार अब चलता हूं, तब मान ने जीत को गले लगा लिया ।

और फिर **"यूं दो गहरे रफ़ीक हमेशा के लिए बिछड़ गए।"**, न कभी जीत वापस गांव आया, न ही कभी मान को उसका सही पता मिला ।

फट्टू और वो

सूरज सर पर चढ़ आया था, और आकाश अपने इंस्टीट्यूट के पार्क में पेड़ की छाया के नीचे बैठा था । वैसे तो वह वहां अक्सर अकेले बैठा अपनी किताबों में मशगूल रहता, मगर आज उसके साथ एअर फोर्स में अकाउंट्स विभाग के एक कर्मचारी बैठे थे । जो कुछ ही महीनों बाद अपनी नौकरी से रिटायर होने वाले थे । आकाश और उनमें ऐसे ही नौकरी और मानव जीवन से संबंधित विषयों पर चर्चाएं चल रही थी

आकाश - "मोहित सर आप यहां कैसे?"

मोहित सर – "असल में मैं यहां ट्रेनिंग के सिलसिले में आता हूं ।"

आकाश – "ट्रेनिंग कैसी ट्रेनिंग सर?, और अभी तो आपने बताया, की आप कुछ ही महीनों बाद रिटायर होने वाले हैं ।"

मोहित सर – हाँ ये सच है, मैं रिटायर होने वाला हूं, किंतु हमें सरकार की तरफ से रिटायरमेंट से पहले, कुछ दिनों की ट्रेनिंग के लिए भेजा जाता है ।"

आकाश – "अच्छा", माफ कीजिएगा सर, किंतु मुझे नहीं पता था ।"

मोहित सर – "कोई बात नहीं इसमें माफी की कोई बात नहीं है ।"

आकाश – “अच्छा सर इस ट्रेनिंग का उद्देश्य क्या होता है", मेरे कहने का अर्थ अब तो आप रिटायर होने वाले है, अब ट्रेनिंग की क्या जरूरत ।”

मोहित सर – “पहले थोड़ा हंसे, और फिर कहने लगे, “असल में सरकार की तरफ से हमें ट्रेनिंग के लिए इसलिए भेजा जाता है । ताकि हम रिटायर होने के बाद भी देश के विकास में कुछ अच्छा योगदान कर सकें, यहां हमें बताया और समझाया जाता है, की हम रिटायर होने के बाद क्या – क्या काम कर सकते है । अर्थात जैसे अपना कोई छोटा सा व्यवसाय करना, डेयरी फार्म लगाना, साइबर कैफे खोलना, या फिर कोई टीचिंग इंस्टीट्यूट ।”

आकाश – “ये तो बहुत सही है सर ।”

आकाश भी इसी इंस्टीट्यूट में, कंप्यूटर एप्लीकेशन में डिप्लोमा कर रहा था । दोनों के दरमियान बातें हो ही रही थी, की अचानक दूर से आकाश को किसी ने पुकारा, आकाश....आकाश...., उसने देख तो अंजू दीदी थी, और उनके साथ में निता ।

अंजू आकाश की बैच मेट थी, पर उम्र में आकाश से बड़ी थी, तो आकाश उन्हें दीदी कह कर ही पुकारा करता था । पास जाकर उसने पूछा हां दीदी, तब उन्होंने निता की तरफ मुस्कुराते हुए देख कर कहा । “आकाश निता को तेरा फोन नंबर चाहिए, मेरे पास से मांग रही थी, मेरे पास था नहीं तो, मैं इसे तेरे पास ले आई ।”

ये सुनकर एक पल के लिए आकाश अचंभित सा हो गया, “क्योंकि ऐसा पहली बार हुआ था कि जब कोई लड़की सामने से आकाश से, उसका नंबर मांग रही थी ।”

आकाश ने खुद को थोड़ा संभालते हुए निता की तरफ देखा, जो सर नीचे किए किसी गुड़िया की तरह खड़ी थी, मानो लज्जा से उसका सर झुक गया हो ।

अगले पल आकाश ने निता से कहा “तो लाओ दो अपना मोबाइल फोन, उसमें ऐड किए देता हूं”, निता ने सर उठाकर आकाश की तरफ देखते हुए कहा, “फोन तो हम अपना आज सुबह जल्दी में घर पर ही भूल आए, तुम मुझे लिख कर दे दो ।”

आकाश ने जेब से अपना पर्स निकाला, और उसमें से पहले से लिख कर रखे हुए फोन नंबर की पर्ची निकालते हुए निता के हाथ पर रख दी । शायद आकाश ने भी ये नंबर पर्ची पर इसी दिन के लिए लिख रखा था ।

फिर वे दोनों आकाश की तरफ देख कर मुस्कुराते हुए, वहां से चली गई । और आकाश वापिस से पेड़ की छाया के नीचे जाकर बैठ गया ।

मोहित सर से फिर उसकी ज्यादा देर वार्तालाप नहीं हुई, उनकी क्लास का समय हो गया, और वे आकाश के पास से चले गए । अब आकाश अकेला ही पेड़ की छाया के नीचे बैठा था, वह मन ही मन आज बहुत अधिक प्रसन्न था, और इसी प्रसन्नता में वह निता से उसका नंबर भी लेना भूल गया था ।

यूं तो आकाश निता को पहले दिन से ही पसंद करता था । जब उसने निता को क्लास में पहली दफा देखा था, उसे आज भी याद था वो पल, और उस पल निता का मुस्कुराता हुआ वह चेहरा । मानो तब "उसके लबों की वो तबस्सुम आकाश के ज़हन में बस गई थी।", आकाश को ये भी याद था, कि जब उसने निता को पहली दफा देख था, तब उसने लाल रंग का सूट पहना था । उस समय उसके रूप और मुस्कान के सामने आकाश

एक पल के लिए ठहर सा गया था, उसके रोंए - रोंए में मानो उस वक्त बिजली सी दौड़ गई हो ।

निता के इस रूप को, वह रोज ही अपने मन में देखा करता था, उसके मन में निता से बातें करने की चाह उठती, मगर शरमाते हुए, वह कभी कोई बात कर ही नहीं पाता । और फिर निता उसके बैच की भी नहीं थी, पर जब भी उन दोनों की नजरें एक दूसरे से मिलती, उनके लबों पर अपने आप मुस्कान आ जाती ।" जैसे चुपचाप दिल कह देते हों, तुम्हें देखकर दुनिया आसान लगती है ।"

आकाश ज्यादातर पार्क में अकेला बैठा रहता, कभी – कभी तो वह निता की एक झलक पाने की उत्सुकता में बैठा उसका इंतजार करता रहता, तो कभी अपनी किताबों में लगा रहता ।

आकाश को आज बैठे, बीते कुछ दिनों की घटनाएं याद आने लगी थी । ऐसे ही जब वह एक दिन रोज की तरह पार्क में बैठा था । तब अंजू दीदी के साथ निता भी वहां आई थी, तब वे दोनों आकाश के पास ही आकर बैठ गई थी । उस वक्त अंजू दीदी ने अपने पर्स से चिप्स का पैकेट निकालकर, उन दोनों की तरफ बढ़ाते हुए कहा, "लो खाओ ।"

तब निता ने आकाश की तरफ देखते हुए कहा था, कि "नहीं जी हम तो बिस्किट खाएंगे", जो आकाश वहां पहले से ही बैठा खा रहा था । आकाश ने तब बिस्किट का पैकेट उनकी तरफ कर दिया था, तब एक पल के लिए उन दोनों की नजरें मिली, और फिर नीचे झुक गई ।

निता ने उसमें से एक बिस्किट ले लिया, तब शायद मामले की गंभीरता को समझते हुए, थोड़ी देर बाद अंजू दीदी फोन कान को लगाए, उन दोनों के पास से उठ कर एक तरफ चली गई । और तब वे दोनों नीचे सर झुकाए

खामोश बैठे रहे, एक तरफ चिप्स तो दूसरी तरफ बिस्किट, आदान - प्रदान तो हुआ मगर दोनों ने खाए नहीं । कुछ देर बाद अंजू दीदी के साथ निता वहां से चली गई । तब उन दोनों के दरमियान मानो खामोशी – खामोशी में ही कुछ बातें हुई थी ।

और फिर उसके कुछ देर बाद आकाश अपने घर को ।

पर आज निता ने आकाश से उसका फोन नंबर लिया था, और इसी सोच में आकाश को घर जाकर पूरे दिन उसके फोन का इंतजार रहा । मगर न निता का फोन आया, न ही मैसेज । अगले दिन जब वह इंस्टीट्यूट पहुंचा, तो उसे पता चला निता आज नहीं आई । और न ही अंजू दीदी, और फिर आज भी आकाश के फोन पर निता का फोन नहीं आया, “करीब दो दिन ऐसे ही रहा ।”

उससे अगले दो दिन के लिए इंस्टीट्यूट का साप्ताहिक अवकाश था । जब आकाश से रहा नहीं गया, तब आकाश ने निता के बैच के एक लड़के को रोकते हुए, उससे निता का फोन नंबर मांग लिया । पर सामने से उस गहरे सांवले रंग के लड़के ने ना जाने किस बात की अकड़ दिखाते हुए, गुमान से कहा । “मैं नहीं दूंगा”, पर आकाश जानता था, कि यह निता से जरूर बात करता होगा । और इसी से उसका काम हो गया था, उस लड़के ने निता से आकाश की शिकायत और बुराई, करते हुए निता को मैसेज कर दिया ।

और फिर क्या था, उसी शाम आकाश को एक अनजान नंबर से, मैसेज आ गया, आकाश ने जैसे जानते हुए, न जानने का बहाना करते हुए पूछा, “हाँ जी कौन?”, सामने से उत्तर था “जी जिन्हें नंबर दिया था” ।

आकाश – “अच्छा निता ।”

निता – "हाँ जी"

और फिर यूं दोनों के दरमियान गुफ्तगू का दौर शुरू हुआ, **गोया महीनों से दोनों अपने अंदर जज्बात और खयालात का एक सैलाब दबाए बैठे हों।**"

निता – "उस कालू से नंबर क्यों मांगा?, मुझसे क्यों न मांग लिया ।"

आकाश – "अरे यार, तुम दो दिन से आई कहां थी, और फिर उससे से तो जान बूझकर मांगा, ताकि मेरा पैगाम तुम तक पहुंचा दे, सो उसने पहुंचा दिया ।"

निता – "अच्छा जी, आप तो बड़े चालक हो ।"

आकाश – "हाँ जी, क्यों न हों ।"

निता – "पर साथ में बड़े फट्टू भी हो ।"

आकाश – "फट्टू क्यों"?

निता – "अच्छा जी, आखिर एक लड़की को ही फोन नंबर मांगना पड़ा ना आप तो ठहरे फट्टू ।"

आकाश – "ठीक है जनाब, हम ठहरे फट्टू बस, पर आप तो बड़ी हिम्मती निकली ।"

निता – "अच्छा, पर पता है, हमें तब कितनी शर्म आ रही थी, आप से ऐसे आपके फोन का नंबर मांगते हुए, पहली दफा हमने इतनी हिम्मत की ।"

आकाश – "अच्छा ।"

निता – “ हाँ, वैसे लगता है आप भी पहले से तैयार थे, जो ऐसे पर्ची पर नंबर लिख कर रखे थे पर्स में ।”

आकाश – “हां अब आप जो समझो ।”

निता ने मानो व्यंग्य करते हुए आकाश से पूछा, “और ऐसी कितनी पर्चियां रखे हो पर्स में?”

आकाश – “नहीं जी वो पहली और आखिरी थी ।”

निता – “अच्छा जी ।”

आकाश – “हाँ जी ।”

निता आकाश को चिढ़ाते हुए, “देख लो, अगर आप कभी किसी और को देना चाहो, तो हम आपको वापिस कर देंगे ।”

आकाश – “नहीं जी जरूरत नहीं, और अब बस भी करो ।”

निता – “अच्छा ठीक है, हम इस पर्ची को अपने पर्स में संभाल कर रख लिए लेते हैं ।”

आकाश – “अब जैसी आपकी इच्छा ।”

"दोनों के दरमियान गुफ़्तगू का सिलसिला इस कदर बढ़ा कि उस रोज़ शाम के छह कब ढले और रात के बारह कब बजे, उन्हें खबर तक न हुई। "

अब भी दोनों का फोन एक तरफ, रखने का मन न हुआ, "बातों के इसी सिलसिले के दरमियान, उन्हें कब नींद की आगोश ने अपनी गिरफ्त में ले लिया, उन्हें खबर तक न हुई।"

सुबह जब आकाश की नींद खुली, उसके फोन पर निता का गुड मॉर्निंग का मैसेज पहले से ही आया पड़ा था । जिसे देख उसके चेहरे पर एक अलग ही मुस्कान आ गई, ऐसी जो उसने पहले कभी अपने चेहरे पर महसूस न की थी । सुबह का नाश्ता भी फोन पर बात करते – करते मानो दोनों ने साथ में ही किया । इंस्टीट्यूट की आज और कल इतवार की छुट्टी थी, पर आकाश शनिवार और रविवार को घर पर न रहकर, सप्ताह के इन दो दिन पास के रश्मि चाचा की फैक्टरी में काम करने चला जाया करता, जहां से उसे कुछ जेब खर्ची, और फीस के लिए पैसे मिल जाया करते थे ।

पर उसने यह निता को न बताने के फ़ैसला किया, ये सोचते हुए, की पता नहीं वह उसके बारे में क्या सोचेगी ।

शाम को जब काम से फुर्सत पा कर, आकाश ने निता का मैसेज देखा, तब उसने उसे जवाब दिया । "अरे यार कुछ कामों में लगा था, इसलिए ध्यान नहीं दिया, मैं रात में तुमसे बात करता हूं ।"

रात के आठ बज गए थे, आकाश ने निता को मैसेज करते हुए, उसका हाल जानना चाहा ।

आकाश – "हैलो निता, कैसी हो?"

निता ने कुछ रुखसइयत के साथ जवाब दिया, "तो अब याद आई है, जनाब को हमारी ।"

यूं तो उन्हें बातें करते, महज दो ही दिन हुए थे, पर लगता ऐसे था कि न जाने, कितने बरसों के मिले हों ।

आकाश – "अरे नहीं यार, ऐसा नहीं है, बताया तो था दिन भर व्यस्त था, और कल भी रहूंगा, घर के काम हैं कुछ ।"

निता – “अच्छा, और ऐसे क्या काम हैं जनाब को?”

आकाश – “मिल कर बताऊंगा सोमवार को ।”, आकाश ने जैसे बात को टालते हुए कहा ।

निता – “ठीक है, चलो खाना खा लो, मुझे पता है तुमने अब तक खाया नहीं होगा, और हाँ हम इंतजार कर रहे हैं, जरा जल्दी खा कर आना ।”

आकाश – “जी हुजूर, हम बस यूं गए, और यूं आए ।”

और लगभग दस मिनट बाद ।

आकाश – “जी हम आ गए ।”

निता – “तो फरमाइए क्या खिदमत करे ।”

आकाश – “क्या खिदमत करोगे हुजूर, आपका साथ होना ही, बोहोत है बस ।”

निता – “अच्छा जी ।”

आकाश – “हाँ जी, अच्छा निता तुम्हें कुकिंग आती है?”

निता – “हां, आती है ।”

आकाश – “तो हुजूर को हमारी फरमाइश ये हैं, की हमारे लिए आलू के परांठे, अपने हाथ से बनाकर सोमवार को लाएं आप ।”

निता – “हम”

आकाश – “हाँ आप, और नहीं तो कौन आपका भूत ।”

तभी आकाश को निता के लिए नाम सुझा "चुड़ैल", सोचा बोल दे, फिर सोचा नहीं, अभी नहीं, दो दिन तो बातें करते हुए हैं, कहीं बुरा न मान जाए ।

निता – "अच्छा देखते हैं ।"

आकाश – "क्या देखते हैं ।"

निता – "अरे हमारा मतलब ठीक है, सुबह समय कहां हो पाता है उतना, फिर भी हम कोशिश करेंगे ।"

आकाश – "हां ये हुई ना बात ।"

दो दिन में ही, दोनों एक दूसरे को, काफी अच्छे से जान गए थे, एक दूसरे की पसंद न पसंद, और परिवारों को भी, निता एक अच्छे संपन्न परिवार से आती थी, और आकाश एक साधारण मध्यवर्गीय परिवार से ।

रात को सोने जाते वक्त, आकाश ने फोन में अलार्म ये सोचते हुए, लगाया कि कल सुबह वह निता को उसके उठने से पहले, गुड मॉर्निंग का मैसेज भेज देगा, लेकिन काम की थकान की वजह से उसे कब उठने में सुबह के सात बज गए, उसे पता ही न चला । और न ही उसे पास में बजता अलार्म सुनाई दिया ।

मोबाइल उठा कर देखा तो, निता का दस मिनट पहले ही गुड मॉर्निंग का मैसेज आया हुआ था । पर उसने तुरंत जवाब देना गैर जरूरी समझा, ये सोचते हुए कि अगर उसने अभी जवाब दिया तो कहीं बातों का सिलसिला शुरू न हो जाए, और फिर उसे रश्मि चाचा के यहां काम पर भी तो जाना था ।

"फ़राग़त पा लेने के बाद उसने निता के, गुड मॉर्निंग के मैसेज का जवाब दिया, सामने से कुछ देर बाद जवाब और सवाल आया, नाश्ता हो गया?”

आकाश – “हाँ हो गया है, और आपका?”

निता –“ हाँ बस करने ही जा रहे हैं ।”

आकाश – “ठीक है कर लीजिए, हम आपसे शाम को बात करते हैं ।”

निता – “ठीक है फिर ।”

शाम के छह बज गए थे, कल की ही तरह काम से फुर्सत पा कर आकाश ने अपना फोन देखा, निता का कोई मैसेज नहीं था । आखिरी मैसेज सुबह आकाश का ही भेजा हुआ था, जो निता ने सीन किया हुआ था । फिर उसने एक लंबी सांस भरी, और घर को चल दिया ।

रात के आठ बज रहे थे, आकाश खाना खाने बैठा ही था, कि सामने से निता का मैसेज आ पड़ा ।

निता – “हेलो आकाश, कैसे हो?, क्या कर रहे हो, फुर्सत पा लिए या नहीं?”

मानो एक ही सांस में उसने आकाश से इतने सवाल पूछ लिए, और आकाश जो सामने खाने की थाली रखे बैठा था, मैसेज पढ़ कर मुस्कुराने लगा । और इसी मुस्कुराहट और उत्सुकता में वह खाने का ध्यान भूलकर मैसेज का जवाब लिखने लगा, इतने में पीछे से आवाज आई, “क्या फोन में लगा है सामने थाली रखी है पहले खाना तो खा ले ।”

उसने फोन एक तरफ रख दिया, पर मन में चल रहा था कि एक बार निता को जवाब दे दूं । की खाना खाने बैठा हूं, और बस पांच मिनट में उससे बात करता हूं, पर फिर से डांट सुनने के डर से उसने फोन को न छूते हुए,

ख़ाना फटाफट खा लेना उचित समझा । और रोज के मुकाबले दो रोटी कम खाते हुए जल्दी से उठ गया, मानो एक - एक कोर उसे निता के मैसेज की याद दिला रही हो ।

उसने जल्दी से हाथ धोकर निता के मैसेज का जवाब दिया ।

आकाश – "हां निता मैं फ्री हो गया, बस अभी खाना खा कर उठा हूं कि देखा तुम्हारा मैसेज, और तुम ठीक हो?"

कुछ देर बाद निता का जवाब आता है ।

निता – "हाँ आकाश हम ठीक है, हमने तुम्हें ये बताने के लिए मैसेज किया है कि हम आज तुमसे ज्यादा बात नहीं कर पाएंगे ।"

आकाश – "क्यों?"

निता – "अरे आज हम एक बर्थडे पार्टी में आए हैं, साथ में घर से सब है, इसलिए, तुम हमारा इंतजार न करना और समय से सो जाना ।"

आकाश जो निता के मैसेज का जवाब देने और उससे बात करने की जल्दी में, आधा अधूरा भोजन करके उठ गया था, उसे अब खुद पर गुस्सा आने लगा, वह दोबारा भी खाने नहीं बैठ सकता था । क्योंकि वह पहले ही ये कहते हुए उठ पड़ा था कि "उसे आज ज्यादा भूख नहीं है ।"

और इसी अधूरे से मन, और पेट के साथ उसने जवाब दिया, "ठीक है निता ।"

निता ने थोड़ी देर बाद उसका मैसेज तो सीन कर लिया, पर कोई जवाब नहीं दिया ।

आकाश अपने बिस्तर पर लेटा फोन को देखते हुए सो गया, बीच में जब उसकी आंख खुली । उसने फोन उठा कर देखा रात के दो बजे हुए थे,

फिर पता नहीं क्या हुआ कि उसे नींद नहीं आई, वह यूं ही बिस्तर पर करवटें बदलता रहा, जब उसे ऐसे करीबन बीस मिनट से ऊपर हो गए, तब वह उठ कर बैठ गया । और फोन का इंटरनेट ऑन कर सोशल मीडिया का रुख करने ही लगा था, की उसके फोन पर खट से एक के बाद एक कई मैसेज आए, ये मैसेज निता के थे । उसने देखा की निता ने रात के एक बजे आकाश को गुड नाइट का मैसेज भेजा है । साथ में एक प्यारा सा संदेश भी, “मेरे दिल ए अजीज माफी चाहूंगी, हम आपसे आज बात न कर सके, पास में सब थे इसीलिए । और साथ में आपका शुक्रिया जो आपने सामने से मैसेज नहीं किया, अपना ख्याल रखना हम आपसे कल सुबह मिलेंगे ।”

ये मैसेज पढ़ते ही, आकाश जिसे पहले ही नींद नहीं आ रही थी, अब उसकी नींद बिल्कुल ही गायब हो गई । उसे समझ नहीं आ रहा था, वह निता को जवाब क्या दे, जवाब दे भी या नहीं, पर उसने मैसेज सीन कर लिए थे, तो अब जवाब देना भी जरूरी हो गया था । यही सब सोचते – सोचते उसे सुबह के चार बज गए, जब उसकी समझ में कुछ नहीं आया, तब उसने एक लाइन में जवाब लिखते हुए कहा, अरे कोई बात नहीं निता, इतना नहीं सोचते, हां सुबह मिलते हैं ।

सुबह रोज हि की तरह वह सात बजे उठ पड़ा था, उसके कमरे के बाहर चिड़ियों के चहकने की आवाजें वह साफ सुन पा रहा था । जिन्हें सुनते ही एक मनोरम सी मुस्कान उसके लबों पर अक्सर आ जाती थी । फिर अगले ही पल उस तरफ से ध्यान हटाते हुए, उसने अपना फोन उठा कर देखा । निता का कोई जवाब नहीं आया था, न ही अभी उसने आकाश के भेजे हुए रात के मैसेज को देखा था । एक पल के लिए आकाश के मन

में आया वह गुड मॉर्निंग का मैसेज भी कर दे, पर फिर वह कुछ सोचते हुए रुक गया, और जाकर अपने दैनिक दिनचर्या के कामों में लग गया ।

सुबह इंस्टीट्यूट वह रोज की तरह ही समय से पहले पहुंच गया था, निता का समय उससे एक घंटे बाद का था ।

वह यही सोचते हुए की निता रोज की तरह अपने समय से आएगी, पार्क से बिल्डिंग की ओर रुखसत होने के लिए कुछ कदम चला ही था । की पीछे से एक आवाज गूंजी आकाश..,आकाश.., एक पल के लिए उसके दिल में खुशी की लहर सी दौड़ उठी, और उसके मन से आवाज आई निता, पीछे मुड़ कर देखा तो दीपिका अपनी स्कूटी के पास खड़ी थी ।

दीपिका एक समान कद काठी की लड़की थी, जिसकी आंखों पर लगे चश्मे उसके चेहरे की सुंदरता को कुछ और बढ़ा देते थे । पर दीपिका को औरों की तरह ज्यादा फैशन में रहना पसंद नहीं था, उसको लेकर एक लाइन में अगर कहना हो तो कह सकते हैं, वह सादगी पसंद होशियार लड़की थी ।

आकाश उसके पास चला गया ।

दीपिका – “अरे आकाश कहां जा रहे हो?”

आकाश – “मैं वो क्लास में जा रहा था ।”

दीपिका - “पर अभी तो आधे घंटे से ऊपर पड़ा है ।”

आकाश – “हां वो तो है, मैं बस ऐसे ही ।”

दीपिका – “अच्छा, चलो छोड़ो, अभी वक्त पड़ा है, आओ कुछ देर पार्क में बैठते हैं ।”

आकाश ज्यादा कुछ कह न सका और उसके साथ – साथ हो पड़ा, पार्क में जाकर वे दोनों पेड़ की छाया के नीचे घास पर ही बैठ गए । तब उन दोनों के बीच में बातें नहीं हुई, बस कुछ पल का शांत मौन था । दूर से उन्हें कुछ लड़के देख रहे थे, जो निता के बैच के थे ।

अचानक से आकाश बोला, "दीपा", दीपिका ने नजरें उठा का मुस्कुराते हुए उसकी तरफ देखा, और पूछने लगी, "क्या कहा तुमने?"

आकाश – "दीपा", क्यों क्या हुआ?"

दीपिका – "नहीं कुछ नहीं, तुम्हें मेरा ये नाम किस ने बताया?"

आकाश – "किसी ने भी नहीं, क्यों क्या हुआ?"

दीपिका – "इस नाम से मुझे घर पर सब बुलाते हैं, यहां पर मेरा यह नाम किसी को नहीं पता ।"

आकाश – "मुस्कुराते हुए, अच्छा ऐसा क्या, पर मुझे नहीं पता था, अचानक से मेरे दिल से तुम्हारा ये नाम उठा और मैंने तुम्हें पुकार लिया ।"

दीपिका थोड़ी देर मुस्कुराने के बाद बोली, "अच्छा बोलो, क्या कहना था ।"

आकाश – "वो मैं कह रहा था, तुम मुझे अपनी नोटबुक दे दो, मैं तब तक बैठा कॉपी कर लूंगा ।"

दीपिका – "अच्छा क्यों मेरे साथ बैठना, उबाऊ लग रहा है?"

आकाश – "अरे नहीं ऐसी बात नहीं है ।"

दीपिका – "अरे मजाक कर रही हूं, ये लो ।"

आकाश – “अच्छा जी, मुझे नहीं पता था, ये लड़की मजाक भी कर लेती है ।”

दीपिका – “मुस्कुराते हुए, अच्छा अब बातें न बनाकर कॉपी बना लो ।”

थोड़ी देर बाद देखा तो अंजू दीदी भी अपनी स्कूटी से आ गए, उन्होंने पार्क में आकाश और दीपिका को बैठे देखा तो फौरन उन दोनों के पास ही आ गए । दीपिका और अंजू दीदी कॉलेज में क्लास मेट रह चुके थे । तो लिहाजा वे दोनों पहले से दोस्त थी, किंतु आकाश अंजू को दीदी कहता, और दीपिका को केवल दीपिका ।

अगले ही पल तीनों क्लास की ओर चल पड़े ।

अंजू दीदी ने एक कुटिल हंसी हंसते हुए आकाश से पूछा “और भाई ठीक है, सब मस्त चल रहा है ना?”

आकाश “मानो उनके पूछने का अर्थ समझ गया था, और मुस्कुराते हुए बोला, “हां दीदी सब बढ़िया, बस अब दीदार हो ।”

अंजू दीदी – “ओ हो देखो तो लड़के को ।”

आकाश हल्का सा शरमाते हुए मुस्कुरा दिया, और इसी के साथ उसकी नजर उसके पास चल रही, दीपिका पर पड़ी, जिसके चेहरे का रंग इन सब बातों से फीका पड़ गया था । इसके बावजूद उसने आकाश और अंजू की बातों में ज्यादा दिलचस्पी न दिखाते हुए, उन्हें अनसुना करना चाहा ।

क्लास आ गई थी, तीनों क्लास में अपने – अपने कंप्यूटर पर बैठ गए, देखते ही देखते बैच के अन्य लड़के लड़कियां भी आने लगी ।

क्लास का समय जैसे ही खत्म हुआ, आकाश तुरंत पार्क में पहुंच गया । निता को उसने देख तो नहीं था, पर उसे लग रहा था कि निता अपनी

क्लास में ही बैठी होगी । और इसी उम्मीद के साथ वह पार्क में बैग से अपनी किताब निकालकर बैठ गया । उसके बैच के अन्य सभी चले जाते थे, कभी - कभी कोई लड़का कुछ देर के लिए आकर उसके पास रुक जाता था, पर उसे अकेला बैठना ज्यादा पसंद था ।

थोड़ी देर बाद उसे वहां अंजू दीदी आते हुए दिखाई दी, पर वे कान को फोन लगाए आकाश से कुछ दूर बैठी थी, लेकिन आकाश अपनी किताब में लगा रहा । उसका निता को मैसेज या कॉल करने का भी मन न हुआ, की अचानक से उसकी नजर मुड़ी और उसने देखा कि निता उसके सर के ऊपर खड़ी है, जो आकाश को देख कर मुस्कुरा रही थी । आकाश को एक बार के लिए यकीन नहीं हुआ, उसने पलकें झपकाई और फिर से नजरें उठा कर देखा, निता ही थी । उसने उसे बैठने को कहा, और निता अपने कंधे से बैग उतारते हुए उसके पास बैठ गई ।

कुछ देर दोनों मौन रहे, फोन पर इतनी बातें करने वालों के जैसे सामने होंठ सी गए हों । फिर कुछ देर बाद निता ने आकाश से उसकी किताब को देखते हुए पूछा “ये क्या पढ़ते रहते हो?”

आकाश – “अरे वो मैं कोर्सपोंडेंस से बी.ए कर रहा हूं ना, उसी का बस, पेपर पास आने वाले हैं ।”

निता – “अच्छा, तो हम भी तो प्राइवेट बी.ए कर रहे हैं, कब हैं पेपर?”

आकाश – “बस कुछ ही महीनों बाद ।”

निता – “अच्छा, तो तुम मुझे भी पढ़ा दिया करो ।”

आकाश – “अच्छा, इसमें पढ़ाना क्या, जरूरी के टॉपिक पढ़ लो, और जो जरूरी के हैं वो हम बताए दिए देते हैं तुम्हें ।”

निता – “नहीं हमें समझ नहीं आता ।”

आकाश – “अच्छा ठीक है, घर जाकर हमें कॉल कर लिया करो, हम तुम्हें रोज एक टॉपिक समझा देंगे बस ।”

निता – “हां सही है, पता है हम तुम्हें रोज पढ़ते देखते थे, हमें लग ही रहा था, बी.ए का पढ़ते होंगे ।”

आकाश – “अच्छा ।”

निता – “हाँ, इसलिए ही हम दीदी से तुम्हारा नंबर मांग रहे थे ।”

इस पर आकाश कुछ बोला नहीं, "आकाश को लगा मानो निता ने उसकी मोहब्बत की इमारत को ज़रूरतों की बुनियाद पर खड़ा कर दिया हो । क्या वह सिर्फ़ एक 'ज़रिया' था, या वाकई उसके लिए निता के दिल में कोई जगह थी?"

उसे एक और निता का कल रात वाला मैसेज याद आने लगा, तो दूसरी और अभी जो उसने कहा था । वह उसके मन में चलने लगा, सिर्फ काम पड़ने को इसने मेरा नंबर लिया, या कुछ, मन ने दोहराया नहीं – नहीं छोड़ ।

कुछ देर मौन के बाद जब दोनों की नजरें मिली, तो दोनों के लबों पर मुस्कुराहट सी दौड़ गई । फिर दोनों ने अपनी पलकें नीचे झुका ली ।

निता ने वहां से उठ कर चलना चाहा, मगर आकाश ने उसे, “अभी बैठ जाओ चले जाना”, कहते हुए रोक लिया । पर दोनों को समझ नहीं आ रहा था कि आखिर बोलें क्या, कुछ देर दोनों बैठे रहे, जब धूप ज्यादा लगने लगी तो दोनों ने इशारों – इशारों में बात करते हुए वहां से चल पड़ना उचित समझा ।

घर पहुंच कर निता ने आकाश को मैसेज कर दिया, की हम पहुंच गए, सामने से आकाश ने जवाब दिया “हां मैं भी पहुंच गया ।”

निता – “ठीक है, मैं चार बजे कॉल करूंगी, टॉपिक समझा देना ।”

आकाश – “ठीक है ।”

आकाश बैठा कुछ खयालों में डूबा था, की उसे याद आया कि उसने तो निता को आज परांठे लाने को भी कहा था, पर क्या वह लाई थी, मानो उसके मन ने उससे सवाल किया । उसने खुद को जवाब दिया लाई होती तो क्या दे न देती, इन्हीं सब खयालों में खोए उसे कब नींद की झपकी लगी पता नहीं चला । आंख खुली तो देखा शाम के चार बजने वाले थे, वह हाथ मुंह धो, पानी पी, निता के कॉल का इंतजार करने लगा ।

अगले पल उसे उसके दोस्त उपेश का कॉल आ पड़ा, की “चल भैंसों के लिए खेतों से चारा लेने चलना है”, आकाश जो उपेश के साथ अक्सर जाता रहता था । उसने आज अपने दोस्त को मना कर दिया, ये कहते हुए कि आज उसका मिजाज जरा ठीक नहीं ।

शाम के चार कब के बज चुके थे, घड़ी की सुइयां भी टक – टक करते हुए गुजरते वक्त की गवाही दे रही थी । की अचानक आकाश के फोन की घंटी बजी, सामने से निता का फोन था । फोन उठाते समय आकाश जो निता के इंतजार में गुस्से से जला जा रहा था । उसकी आवाज सुनते ही शांत पड़ गया, मानो किसी ने उसके ऊपर ठंडा पानी उड़ेल दिया हो ।

निता – “आकाश क्या कर रहे हो?”

आकाश – “किसी ने चार बजे कॉल करने का बोला था, बस उसके कॉल का इंतजार ।”

निता – “माफ करना यार, हम सो गए थे, फिर वक्त का पता ही न चला ।”

आकाश – “अच्छा, चल कोई नहीं, आगे से जरा ध्यान रखना ।”

निता – “ठीक है, बाबा ।”

आकाश – “अच्छा पढ़ना क्या है?, मेरा मतलब कौन सा सब्जेक्ट ।”

निता – “तुम ही पढ़ा दो, खुद से कोई भी ।”

आकाश – “लो ये भी कोई बात हुई, चल फिर इंग्लिश पढ़ा देता हूं, इतिहास और राजनीति तो खुद से भी पढ़ लोगी तुम?”

निता – “ठीक है ।”

आकाश – “तो तुम अपनी किताब निकाल लो, इधर से हम पेज नंबर बताए दिए देते हैं ।”

निता – “हां ठीक है ।”

आकाश – “अच्छा एक बात पूछूं?”

निता – “अब क्या, अच्छा पूछो ।”

आकाश – “वो तुम परांठे बना कर लाई थी आज, हमारी बात हुई थी ना, तुमसे सोमवार का इकरार हुआ था ।”

निता – “ओ हो आकाश, तुम भी ना, कहां पढ़ने के वक्त खाने की बातें लेकर बैठ गए । फिर कुछ रुककर बोली……, हां हम लाए थे, तुमने पूछा ही नहीं, और फिर हमारे दिमाग से भी उतर गया ।”

आकाश – “अच्छा, पर हम तो तुम्हारी बातों में उलझ गए थे, फिर कमबख्त होश ही न रहा ।”

निता – “अच्छा, चलो छोड़ो अब, हमें जरा टॉपिक समझा दो, परांठे हम फिर से किसी दिन बना कर ले आएंगे, बस ।”

आकाश – “अच्छा ठीक है बाबा, तो निकालो पेज नंबर, 43”

निता - “सीधा 43?”

आकाश – “हां पहले तुम्हें आसान और जरूरी वाले करवा दूं, फिर बाकी ।”

निता – “अच्छा ठीक है ।”

आकाश ने करीब चालीस मिनट तक निता को इंग्लिश का टॉपिक समझाया, जब उसे समझ आ गया, तब आकाश ने उससे कहा कि वह इसे आज ही याद कर ले । तो यह अच्छे से दिमाग में बैठ जाएगा, उसने आकाश की बात को काटते हुए जवाब दिया, “अरे बाबा मैं कर लूंगी ।”

थोड़ी देर तक दोनों के दरमियान कुछ गुफ्तगू हुई, तब तक शाम के छह बज चुके थे, दोनों ने रात के आठ बजे मैसेज करने का इरादा करके फोन रख दिया ।

थोड़ी देर आकाश यूं ही बैठा रहा, और फिर अपनी किताब उठा कर पढ़ने लगा, जब साढ़े सात बज गए तब जाकर वह उठा । तब तक रात हो चुकी थी, पढ़ते वक्त उसे समय का एहसास ही नहीं हुआ था । इतने में उसके फोन की घंटी बजी, देखा तो उपेश का कॉल था, जो उसे अपने घर पर बुला रहा था ।

घर पर बताकर वह उपेश के घर चला गया, उपेश के साथ वह अक्सर इस समय गांव में घूमता रहता था, ये उनकी दैनिक दिनचर्या का ही एक हिस्सा था । शाम को एक दफा गांव का चक्कर लगा आना, इससे उन्हें

पूरे गांव की खोज खबर भी रहती, और साथ में थोड़ी देर के लिए दोनों यारों को आपस में वक्त बिताने का एक बहाना मिल जाया करता । पर उपेश अक्सर आकाश से कुछ बातें छुपाता रहता था, जिससे आकाश को थोड़ा बुरा लगता कि मैं आए दिन की अपने जीवन की सभी घटनाएं इसके साथ सांझा करता हूं, और ये है कि मुझसे ही छुपाता है ।

आज भी कुछ ऐसा ही हुआ, जैसे ही आकाश उपेश के घर पर पहुंचा दोनों यार वहां से गांव की सैर को निकल पड़े । रास्ते में कोई बड़ा मिलता तो दुआ सलाम हो जाती, और छोटे या हमउम्र मिलते तो उनके साथ हंसी ठिठोली । आठ बज गए थे, कुछ ही पलों बाद आकाश के फोन पर निता का मैसेज भी आ गया, “हेलो आकाश”, तब आकाश के साथ में ही उपेश था, जब उसे निता का मैसेज आया, तो उसने भी देखा ।

उपेश – “अरे वाह यार”, ये कब हुआ, तूने निता का नंबर ले लिया, साले बताया भी नहीं, या पार्टी नहीं देना चाहता ।”

आकाश – “अरे नहीं भाई ऐसी बात नहीं है, तुझसे भला क्यों छुपाऊं, तुझे तो आज बताने ही वाला था, की सामने से इसका मैसेज ही आ गया ।”

उपेश – “अच्छा, पर बात बनी कैसे?, जरा ये तो बता ।”

आकाश – “अरे भाई क्या बताऊं, कुछ दिन पहले निता ने ही सामने से आकर नंबर मांगा था ।”

उपेश – “क्या बात कर रहा है भाई, लड़की ने सामने से आकर तुझसे तेरा नंबर मांगा, क्यों मजाक कर रहा है ।”

आकाश – “अरे मजाक नहीं भाई सच में, तेरी कसम बस ।”

उपेश – “अगर ये सच है भाई, तो तेरी तो निकल पड़ी ।”

आकाश – “अरे कहां यार, खाली काम के लिए नंबर मांगा है, कहती है आप मुझे बी.ए का कुछ पढ़ा दिया करो, इसलिए मैंने आपसे आपका नंबर मांगा था ।”

उपेश – “अच्छा, अरे कोई नहीं यार, लड़कियां ऐसे बोलती ही हैं शुरुआत में ।”

आकाश – “अच्छा”

उपेश – “हां, तू मन न मार अपना, कर ले बात देख ले क्या कहती है ।”

आकाश – “हां असल में बात करने का समय हो गया है, इसलिए इसका मैसेज आया है ।”

उपेश – “अच्छा, तो बात यहां तक पहुंच गई है, की समय तय करके बातें की जाने लगी है, सही है गुरु, और तू ऐसे ही अपना मन गिरा है ।”

आकाश अक्सर अपनी हर बात उपेश को बता दिया करता था, पर उपेश मन में कोई चोर रखते हुए, अपनी ज्यादातर कॉलेज की बातें, आकाश से छुपा कर रखता था । अगर कभी आकाश के सामने उसके फोन पर किसी लड़की का कोई मैसेज भी आता, तो वह एक तरफ फोन कर लेता, न वो बताता न आकाश पूछता कौन थी ।

आकाश ने निता के मैसेज का जवाब देते हुए उसे मैसेज किया ।

आकाश – “निता सॉरी यार, ज्यादा लेट नहीं करूंगा, बस दस मिनट बाद घर जाते ही बात करता हूं, थोड़ा काम से बाहर आया था ।”

निता – “ठीक है, पर हमें ज्यादा इंतजार न करवाना, नहीं तो हम बात नहीं करेंगे कह देते हैं ।”

आकाश – “अरे हां बाबा ।”

उपेश हां हो गई बात, क्या कह रही थी?

आकाश – “नहीं कुछ नहीं, मैंने बोल दिया घर जाकर बात करता हूं ।”

उपेश – “अच्छा”

आकाश - “हां, अच्छा चल चलें ।”

कुछ देर बाद दोनों अपने - अपने घर को पहुंच गए, आकाश ने सबसे पहले पहुंचते ही निता को मैसेज किया, निता मैं घर आ गया ।”

निता – “अच्छा”

आकाश – “हां”

निता – “खाना तो अभी तुमने खाया नहीं होगा ना?”

आकाश – “नहीं, पर मैं खा लूंगा थोड़ी देर में ।”

निता – “थोड़ी देर नहीं, अभी खाओ, और हां मुझे फोटो भेजो थाली की, कि तुम खाने बैठे हो ।”

आकाश मन ही मन मुस्कुराया “अच्छा ठीक है यार, रुको भेजता हूं, और तुम ने खा लिया?”

निता – हां हम भी खाने जा रहे हैं, लो भेज दी तुमको फोटो, इससे पहले तुम मुझसे कहो, हम खुद ही भेज दिए ।”

आकाश – “क्या बात है, स्मार्ट लड़की हां ।”

निता – “वो तो मैं बचपन से ही हूं ।”

एक दूसरे से दूर – दूर होते हुए भी मानो जैसे दोनों साथ में खाना खाने बैठे हों । कुछ देर बाद खाना खत्म करके निता ने ही मैसेज किया ।

दोनों के दरमियान गुफ्तगू होने लगी……,

आकाश ने निता से पूछा भी की, “जो टॉपिक तुम्हें समझाया था । क्या तुमने उसे दोहराया भी या नहीं?” इस पर निता ने जवाब दिया, “अरे हम पढ़ लेंगे, अभी बात करते हुए अच्छे नहीं लग रहे क्या, कहो तो फोन रख दें हम”, “अरे नहीं हमारे कहने का वो मतलब नहीं था, चलो जब तुम्हें अच्छा लगे बस ।”

दोनों के दरमियान फिर गुफ़्तगू का वो सिलसिला शुरू हुआ कि रात के बारह बज गए, दस बजे सो जाने वाला आकाश, आज कल आधी – आधी रात तक जगा रहता । **“शायद लड़कपन की उम्र का ये इश्क ऐसा ही होता है, जो आंखों से नींद ले जाता है, और खुली आंखों में सपने दे जाता है”,** आखिर में आकाश ने ही फोन रखने का मन बनाया और, गुड नाइट का मैसेज भेजते हुए इस गुफ्तगू को विराम देना चाहा ।

मगर सामने से निता, “क्यों नींद आ रही है आकाश?”

“अरे नहीं वो बात नहीं ।”

निता “तो फिर सो जाना थोड़ी देर बाद ।”

पता नहीं वे ऐसी कौन सी बातें थी, जो करते दोनों के जी ना भरते थे ।

आकाश - “अच्छा हम एक शायरी सुनाए?”, सामने से निता, “हां क्यों नहीं जरूर”, “देखो हमें शायरी आती तो नहीं पर इस गुफ्तगू से कुछ शब्द जुड़ गए” आकाश ने निता से कहा ।

निता “अच्छा बाबा अब सुनाओ भी ।”

आकाश – “ऐसे नहीं कॉल करो ।”

निता – “कॉल अभी इस वक्त ना बाबा ना, मरवाओगे ।”

आकाश – “अब इतना तो कर ही सकती हो ना”, “अच्छा ठीक है हम जरा छत पर जा रहें हैं फिर कॉल करते हैं ।”

छत पर जब निता पहुंची तो वह नीले अम्बर में सितारों को एक पल के लिए देखने लगी, ठंडी हवाएं जैसे उसे छेड़ रही हों, पूरे वातावरण में एक अलग ही सरगोशी सी छाई हुई थी । पर इस सब से ध्यान हटाते हुए उसने आकाश को कॉल लगाया ।

कुछ ही देर बाद आकाश के फोन की घंटी बजती है, स्क्रीन पर निता का नाम चमक रहा था । कॉल उठाते ही दूसरी तरफ से धीमी सी आवाज आई —“तो हुजूर, फरमाइए...”

आकाश “हां तो ग़ौर फरमाइएगा ।”

"अभी तो बस लफ़्जों का सिलसिला शुरू हुआ है,

तुम्हारी बातों से दिल का राब्ता शुरू हुआ है

न जाने किस मोड़ पर ले जाएगी ये गुफ़्तगू,

पर सच कहूँ तो एक खूबसूरत सफर शुरू हुआ है ।"

निता मुस्कुराते हुए, “अच्छा जी, इतना ना उड़ो अभी से”, आकाश “अरे हमने क्या कहा ऐसा”, निता “अच्छा जी रहने दो बड़े चालक बनते हो ।”

आकाश – “अरे नहीं जनाब गुस्ताखी माफ ।”

निता – अरे नहीं मजाक कर रहे हैं, आप तो डर गए ।”

आकाश - अरे नहीं, “अच्छा एक और सुनाए”, निता “नहीं जी हमें अब जाना है, कोई देख लेगा तो हमारी खैर नहीं”, आकाश “अरे बस आखिरी एक”, निता “अच्छा चलो पर जल्दी हां.......?”

आकाश - “तो ग़ौर फरमाइए ।”

निता - “जी हुजूर ।”

"कुछ खास है तुम्हारी इन बातों में जो दिल को भा जाता है,

वरना यूँ हर किसी से घंटों बातें करना हमें कहाँ आता है ।

चेहरे की मुस्कान तो खैर दुनिया देख ही लेती है,

पर तुम्हारी रूह का सुकून इन लफ़्जों में नज़र आता है ।"

निता की मानो खुशी का ठिकाना ना रहा, अपनी भावनाओं पर काबू पा कर कहने लगी, “अच्छा जी हमें इंप्रेस कर रहो हो?”, आकाश “अब जो मर्जी समझो आप, अच्छा मतलब आपको अच्छी लगी?”, निता “हां ठीक ही थी ।”

आकाश - “ठीक ही झूठ तो मत बोलो निता ।”

निता सामने से, “अच्छा अब हम फोन रखते हैं बाय गुड नाइट”, आकाश “हां ठीक है गुड नाइट, अपना ख्याल रखना ।”

आकाश की आदत थी वह अक्सर अपनी नींद पूरी करके देर से उठता था, सुबह जब वह उठा तब तक साढ़े सात बज चुके थे । उसके फ़ोन की स्क्रीन पर निता के किए हुए मैसेजेस की नोटिफिकेशन ब्लिंक कर रही थी । आखिरी मैसेज निता ने जो किया था, “ओ हो आकाश अब उठ भी जाओ कितना सोना है”, आकाश ने झट से फोन उठाया और रिप्लाई कर दिया, पर सामने से उतर न आया, रोज की तरह तैयार होकर समय से पहले वह

साढ़े नौ बजे इंस्टीट्यूट पहुंच गया, और जाकर पार्क में जा बैठा, अचानक फोन की स्क्रीन चमकी, देखा तो निता का मैसेज था, आकाश हम नहीं आ रहे आज ।

लेकिन आकाश के मन में निता को सोचते हुए, कुछ शब्द पहले ही जन्म ले चुके थे ।

"तुम सर्दियों की उस धूप की तरह हो,
जिसके आने का इंतजार बेसब्री से लगा रहता है ।।"

आकाश – "अच्छा पर क्यों?"

निता – "ऐसे ही बस मन नहीं है ।"

आकाश – "मन नहीं है ये क्या बात हुई ।"

निता – "बस नहीं है तो नहीं है ।"

आकाश नहीं जानता था, निता पार्क के दूसरी और खड़ी उसके साथ हंसी ठिठोली कर रही है ।

आकाश थोड़ा गुस्सा दिखाते हुए – "ठीक है नहीं आना है तो मत आओ ।"

निता – "हां तो हम नहीं आ रहे बाय ।"

आकाश ने कोई उतर नहीं दिया, बस फोन को एक तरफ रख कर पेड़ की छाया के नीचे बैठा रहा, पार्क के दूसरी तरफ एक बेंच पर बैठी निता उसे देख रही थी । थोड़ी देर में अंजू दीदी भी अपनी स्कूटी से आते हुए दिखाई दिए पर आकाश ने उस तरफ कुछ खास ध्यान नहीं दिया । अंजू दीदी ने निता और आकाश दोनों को देख लिया था, पर वे पहले निता के पास चली गई । निता ने उन्हें सब बताकर कैसे वह आकाश के साथ हंसी

ठिठोली कर रही है, अपने साथ कर लिया । थोड़ी देर में ही अंजू दीदी आकाश के पास जाकर उससे पूछने लगी, क्या हुआ भाई कैसे बैठा है ।

आकाश – "नहीं दीदी कुछ नहीं ऐसे ही ।"

अंजू दीदी – "हूं ऐसे ही, निता नहीं आएगी आज, इसीलिए ना ।"

आकाश – "अरे नहीं दीदी ऐसा कुछ नहीं है, वैसे आपको किसने बताया निता नहीं आएगी आज?"

अंजू दीदी – "अरे निता ने ही ।"

आकाश – "अच्छा, पर कब?"

अंजू दीदी – "अरे अभी थोड़ी देर पहले", और फिर मन ही मन आकाश के चेहरे की तरफ देखकर एक मीठी हंसी मुस्कुराने लगी ।

आकाश को पता ही नहीं चला कब इस बातचीत के दौरान निता उसके पीछे थोड़ी दूरी पर आकर खड़ी हो गई ।

आकाश – "हां सही है दीदी, नहीं आ रही तो नहीं अपने को क्या ।"

अंजू दीदी – "अच्छा अपने को क्या, शक्ल तो देख अपनी ।"

आकाश थोड़ा हड़बड़ाते हुए, "शक्ल, शक्ल को क्या हुआ मेरी", और अपनी उदासी छुपाते हुए कहने लगा, "अरे सच्ची दीदी नहीं आ रही तो नहीं सही इतना नहीं सोचते", पर उस वक्त मजनू के दिल पर क्या गुजरती है, जब उसे पता चले कि आज उसे उसकी लैला का दीदार ना होगा । बस वही हाल मन ही मन आकाश का था, उसका जी कर रहा था वह भी उठ कर घर को चला जाए । पर अचानक से उसे एक आहट सी महसूस हुई, जैसे उसके पीछे कुछ दूरी पर कोई खड़ा है, उसे हवाओं में एक अलग ही खुशबू का एहसास होने लगा, जो अक्सर उसे निता के पास होने पर

महसूस हुआ करता था, तब वह मन ही मन मुस्कुराने लगा जैसे निता की इस शरारत को समझ गया हो ।

अंजू दीदी – “आकाश क्या हुआ भाई, क्यों चुप सा हो गया?”

आकाश – “आकाश हंसते हुए बोला, निता चल आ जा सामने अब ।”

ये सुनकर अंजू दीदी और निता के होश उड़ गए, अगले ही पल निता ने आकाश की कमर में एक मुक्का जमाते हुए कहा, “मतलब तू समझ गया था कमिने ।”

आकाश – “और नहीं तो क्या और ये मुक्का भारी पड़ेगा निता”

निता – “अच्छा अब तुम मुझे मरोगे?”

आकाश – “अरे नहीं यार सपने में भी नहीं, ऐसे ही बोल रहा था । पर तूने आज बोहोत खूब की, और दीदी आप भी इसके साथ हो लिए, मजे ले रहे थे मेरे हां ।”

अंजू दीदी – “अरे नहीं भाई ऐसा कुछ नहीं है, वो तो इसने बोला, पर ये मजाक और आगे बढ़ सकता था अगर तुझे पता न चलता निता पीछे खड़ी है, पर तुझे पता कैसे चला हां ।”

आकाश – “अरे वो राज की बात है दीदी, और राज खोले नहीं जाते ।”

अंजू दीदी – “ओ हो लड़के के राज”

निता यह सब बाते सुनकर मुस्कुरा रही थी, और आकाश निता की तरफ देखते हुए इशारों - इशारों में मानो कह रहा था, तुझे तो बाद में बताऊँगा ।

अंजू और आकाश की क्लास का समय हो चुका था, पर निता की क्लास में अभी समय बाकी था, तो उन दोनों ने चल पड़ने का फ़ैसला किया । निता भी इस इरादे से कि अकेले क्या बैठेगी उनके साथ ही चल दी । रास्ते में निता आकाश की तरफ देखते हुए, अंजू दीदी से कहने लगी, "पता है दीदी आकाश शायरी बोहोत अच्छी सुनाता है ।", और आकाश जो निता के पास में ही चल रहा था, निता की तरफ हल्की सी आंखें निकालने लगा, की मानो कह रहा हो, तुमने इन्हें क्यों बताया, वो तो बस मैंने ऐसे ही अपने दिल में उठ रहे शब्दों को जोड़कर तुम्हारे सामने अपने दिल की प्यास बुझाई थी, पर वह चुप रहा । और अंजू दीदी आकाश की तरफ देख कर पूछने लगी, "अच्छा भाई ऐसा है क्या?"

आकाश – "अरे नहीं दीदी ऐसा कुछ नहीं है, ये तो बस यूँ ही ।"

इतने में क्लास आ गई, और क्लास में घुसने से पहले निता ने आकाश की तरफ देखते हुए, धीरे से कहा, "हूं फट्टू", आकाश ने ये सुन लिया था पर कुछ कहा नहीं ।

निता भी आज आकाश की क्लास में बैठी थी, एक अलग खाली पड़े पी.सी पर वह अपनी प्रैक्टिस करने लगी । पर आकाश ने उससे क्लास में कोई बात नहीं की, ना ही उसके पास गया । वह अपने कंप्यूटर पर बैठकर लेंग्वेज की प्रैक्टिस कर रहा था । क्लास में दीपा (दीपिका) आकाश से कुछ ही दूरी पर बैठती थी । उन दोनों के दरमियान बस कुछ ही लोगों का फांसला रहता था, पर जैसे ही आकाश उससे कुछ पूछता वह तुरंत उठ कर आकाश के पास आ जाती । आज भी कुछ ऐसा ही हुआ, आकाश को लेंग्वेज की कोडिंग में कुछ असुविधा हो रही थी, उसे नहीं समझ आ रहा था कि वह क्या कमांड दे, फिर जैसे ही उसने हर बार की तरह दीपिका को पुकारा वह अपने डेस्क से उठकर आकाश के पास

आ गई । आकाश ने नोटिस किया कि निता उसकी तरफ तिरछी नजरों से देख रही है, पर वह अपने काम में लगा रहा ।

क्लास खत्म होने के बाद आकाश का पार्क में रुकने का मन नहीं था । और ना ही निता से बात करने का कोई खास मन, पर उसके मन में कुछ सवाल उठ रहे थे । की अगर वह न रुका तो निता क्या सोचेगी, कहीं उसे बुरा न लगे या वह गुस्सा न हो जाए । यही सवाल उसके मन में उठ रहे थे कि उसे दीपिका की आवाज सुनाई दी, आकाश...., जो उसकी और ही बढ़ रही थी । जब वह आकाश के पास आ गई तब आकाश ने उससे पूछा “हां निता?”

ये सुनकर दीपिका झल्ला सा गई, और गुस्से से कहने लगी क्या कहा तुमने आकाश?

आकाश – “नहीं दीपा कुछ नहीं, वो बस दिमाग पता नहीं कहां था, माफ करना पता नहीं चला ।”

ये सुनकर दीपिका जबरदस्ती हल्का सा मुस्कुरा दी ।

‘कोई बात नहीं आकाश...’

पर इस बार उसकी मुस्कान उसकी आँखों तक नहीं पहुंची थी ।

उसकी नज़रें एक पल के लिए ठहर गईं...... और फिर चुपचाप कहीं और मुड़ गईं ।

क्योंकि अक्सर... अपनी जगह किसी और का नाम सुनना, सिर्फ एक गलती नहीं होती

वो एक ऐसी चुभन होती है..... जो बिना कुछ कहे ही बहुत कुछ समझा जाती है ।

आकाश – “अच्छा तू कुछ कहने वाली थी?”

दीपा – “नहीं कुछ नहीं ऐसे ही बस ।”

आकाश – “अच्छा जी ऐसे ही, मत बता मर्जी तुम्हारी ।”

दीपा (दीपिका) ने इस पर कुछ कहा नहीं, कुछ देर खामोश रही, मानो अंदर कुछ गहरा चल रहा हो, और फिर कहने लगी अच्छा मैं चलती हूं, तुमसे फिर मिलूंगी ।”

आकाश – “अच्छा, चल मुझे भी छोड़ देना थोड़ा आगे, मेरा भी मन नहीं आज ।”

दीपिका ने हल्की सी फिक्र करते हुए आकाश की तरफ देखा और पूछने लगी, “क्यों तुम्हें क्या हुआ?”

आकाश – “अरे नहीं कुछ नहीं ऐसे ही यार, चल…….” और फिर दोनों साथ चल पड़े ।

आकाश घर पहुंच चुका था, न उसे निता का कोई कॉल या मैसेज आया न ही उसने निता को कोई कॉल या मैसेज किया । खाना खा कर वह थोड़ी देर के लिए सो गया, और जब नींद खुली तब शाम के चार बजने लगे थे, चाय पीकर वह अपनी टेबल पर पढ़ने बैठ गया ।

वह पढ़ने में मशरूफ हुआ ही था, कि उसके फोन की रिंग बजने लगी, स्क्रीन पर निता लिखा साफ दिख रहा था । एक पल के लिए उसने फोन न उठाने का सोचा पर चाह कर भी अनदेखा न कर सका, और उसने कॉल उठा लिया । सामने से निता “क्या बात है जनाब आज न पार्क में रुके न कोई मैसेज किया, कहां मशरूफ थे?”, सामने से आकाश, “नहीं कहीं

नहीं बस ऐसे ही मन नहीं किया, और फिर तूने भी तो कोई मैसेज या कॉल नहीं किया?"

निता – "अच्छा तू वो सब छोड़, मुझे थोड़ा पढ़ा दे ।"

आकाश – "पढ़ा दूंगा, पहले ये बता तुझे, अंजू दीदी को क्या जरूरत थी बोलने की कि मैंने शायरी सुनाई, और क्या हर बार फट्टू यार, आपस की बात है न अपनी, अकेले में जो मर्जी बोल ले ।"

निता – "अच्छा जी तो ये बात है, जनाब इस बात को लेकर मुंह फूला कर बैठे है, और अगर मैं कुछ कह दूं ।"

आकाश समझ गया था कि कहीं ये दीपिका को लेकर कुछ न कहने वाली हो ।

आकाश – "अरे नहीं मुंह फूलने वाली कोई बात नहीं ऐसे ही मेरा मन नहीं था, और तुम क्या कहने वाली थी बोलो?" (आकाश ने मानो जानकर ना पूछने के इरादे से पूछा)

निता – "अरे नहीं कुछ नहीं, ये बताओ क्या करें हम जिससे जनाब का मिजाज सही हो, हमें तो कमबख्त कोई शायरी या अफसाना भी नहीं आता ।"

आकाश – "अरे नहीं उसकी कोई जरूरत नहीं, मैं ठीक हूं, तू बता क्या पढ़ा दूं?"

निता – "जो तुम्हें सही लगे", आकाश ने उसे अंग्रेजी का एक नया टॉपिक पढ़ा दिया उसके बाद कुछ देर बातें हुई ।"

निता - "अच्छा ठीक है बाबा हम आगे से हमारी बातों का जिक्र कहीं किसी के सामने नहीं किया करेंगे बस ।"

आकाश – “हां ठीक है ।”

उन दोनों की दोस्ती हुए कब उन्हें दो महीने बीत गए, आकाश को पता ही नहीं चला ।

एक दिन आकाश जब ऐसे ही पार्क में बैठा था, तब ऊपर क्लास से उसके बैच की लड़की रेनू आई और आकर आकाश के पास पेड़ों के पीछे छुप गई । छुपने से पहले वह आकाश को कह गई, “आकाश रजत आए, और मेरे बारे में पूछे तो प्लीज़ कह देना वो चली गई ।”

रजत और रेनू एक अच्छे कपल थे, आकाश को इसके बारे में पहले से ही पता था, वे दोनों कॉलेज से साथ थे, और अक्सर रेनू रजत के साथ ही उसकी बाइक पर आती जाती थी । थोड़ी देर में वहां पर रजत आ गया, उसने आकाश से पूछा, आकाश क्या तुमने रेनू को देखा है यार । आकाश को झूठ बोलना पड़ा, “नहीं भाई, पर क्यों क्या हुआ, वो तो तेरे साथ ही जाती हैं ना?”

रजत – “हां भाई मेरे साथ ही जाती है, पर आज किसी बात को लेकर थोड़ी कहा सुनी हो गई तो वह नाराज होकर चली आई, चल ठीक है मैं चलता हूं क्या पता रास्ते में मिल जाए कहीं ।”

आकाश – “हां भाई जरूर”, रजत के जाने के बाद रेनू पेड़ के पीछे से निकल आई, और आकर आकाश के पास आकर बैठ गई, और आकाश से पूछने लगी, “चला गया भाई वो ।”

आकाश – “हां चला गया, पर थोड़ा परेशान था ।”

रेनू – “अरे कुछ नहीं होता, ऐसे ही है उसका, अगर मैं मिल जाती तो देखते अभी, वैसे क्या कह रहा था।”

आकाश – “नहीं कुछ नहीं, बस बता रहा था, किसी बात को लेकर तुम दोनों के बीच कुछ बात हो गई, वैसे बात क्या थी?”

रेनू – “कुछ नहीं भाई, ऐसे ही बस, अच्छा मैं चलती हूं, अब तक तो वह आगे निकल गया होगा ।”

आकाश – “हां ठीक है बहन, ध्यान से जाना ।”

ये सब देख कर आकाश को निता की वो शरारत याद आ गई, जब वह एक बार ऐसे ही पेड़ों को पीछे पार्क के दूसरी तरफ छुपी थी, और आकाश को बोल रही थी कि वह आज नहीं आएगी । ये सब याद करके आकाश के चेहरे पर हंसी आ गई, निता की क्लास खत्म होने में अभी समय पड़ा था । और आकाश इस बीच, अपने बैग से किताब निकाल कर पढ़ रहा था, पर आज वह अपनी बी.ए की पढ़ाई का ना पढ़कर गधे की आत्मकथा नामक एक उपन्यास पढ़ पर रहा था, जिसे कृष्ण चंद्र ने लिखा था ।

“मैं गधा हूँ... पर इतना जरूर जानता हूँ कि इंसान बनने से पहले इंसानियत सीखनी पड़ती है ।”

तुम लोग हमें गधा कहते हो, मगर हम कम से कम धोखा नहीं देते ।”

आकाश अभी ये लाइन पढ़ ही रहा था कि अंजू दीदी और निता आकर उसके सर पर खड़े हो गए ।

अंजू दीदी – “हूं, जब देख कुछ न कुछ पढ़ता रहता है, क्या पढ़ रहा है दिखा जरा, एक गधे की आत्मकथा, अच्छी है क्या ये किताब?”

आकाश – “हां दीदी, इसमें आज की राजनीति की सच्चाई दिखाई हुई है ।”

अंजू दीदी – “अच्छा, पढ़ो – पढ़ो ।”

आकाश – “अच्छा आप अब तक क्यों रुके हो?”

अंजू दीदी – “अरे भाई वो रमन को मिलते हुए जाना है ना इसीलिए”, ‘रमन अंजू दीदी के मंगेतर थे ।’
आकाश – “अच्छा, तो बैठो ।”

अंजू दीदी – “अरे नहीं चलती हूं आ गया होगा वो, और मौसम भी तो खराब होने वाला है ।”

उसके पश्चात अंजू दीदी वहां से चले गए, आकाश और निता वहां बेंच पर बैठे रहे, कुछ देर दोनों में बाते हुई कि अचानक से बारिश का मौसम हो गया, आकाश ने निता से पूछा “अच्छा तुम्हे लेने कौन आने वाला है ।”

निता – “वैसे तो तुझे पता है पापा आते है, पर वे आज यहां है नहीं, और भाई शायद आए या न आए, फोन करके पूछती हूं ।”

आकाश – “हां पूछ ले यार बारिश का मौसम भी तो हो रहा है फिर ।”

निता – “हां तो क्या हुआ, तू नहीं ले चलेगा अपने साथ?”

आकाश – “चलना जरूर पर मैं तो वैसे भी रिक्शा से आता हूं, और फिर थोड़ी आगे तो तुझे पैदल ही जाना पड़ेगा ।”

निता – “कोई बात नहीं ।” (जैसे कि निता के मन में पहले से ही कुछ था, पर उसने आकाश से कुछ कहा नहीं), देखते ही देखते बारिश शुरू हो गई, दोनों उठ कर बिल्डिंग के अंदर चले गए । कुछ देर खड़े एक दूसरे को देखते हुए, बारिश बंद होने का इंतजार करने लगे, इतने में निता के घर से उसकी माँ का फोन आ गया, “निता बेटा घर पर न तेरे पापा हैं और न भाई, तू बारिश बंद होने पर ध्यान से आ जाना ।”

निता - “हां माँ मैं आ जाऊँगी आकाश के साथ यहीं इंस्टीट्यूट में हूं ।”

आकाश के बारे में निता की माँ जानती थी, और कई दफा आकाश उनसे फोन पर बात भी कर चुका था, वे अक्सर आकाश को घर पर चाय पीने के लिए आने को कहते हुए कहा करती थी, “आ जाना बेटा कौन सा तुम्हारे इंस्टीट्यूट से घर ज्यादा दूर है ।”

आकाश निता और उसकी माँ की बातें सुनते हुए सोच रहा था, की लड़की और उसकी माँ का रिश्ता भी कितना दोस्ताना होता है ना, और एक लड़के होते है, जो अपने पिता से किसी लड़की के बारे में बात करते हुए भी कितना खौफ खाते हैं ।

बाहर बारिश अब हल्की – हल्की होने लगी थी, निता को बारिश बोहोत पसंद थी, उसने आकाश का हाथ पकड़ा और कहने लगी, “चल आकाश चलते हैं ।”

आकाश – “निता बारिश तो बंद होने दे यार, बीमार हो जाएगी ।”

निता – “ओ हो आकाश, कुछ नहीं होता, फिर मैं कुछ बोल दूं तो मुंह चढ़ा लोगे, चलो अब ।”

दोनों बारिश में भीगते हुए साथ – साथ चल दिए, इंस्टीट्यूट के गेट से बाहर निकले ही थे कि आकाश ने निता की तरफ देख कर पूछा, “रिक्शा से चलना है ना?”

निता माथे पर हाथ को मार कर हंसते हुए बोली, “पैदल चलना है बाबा, भीगते हुए बारिश में, पैर दुखते हैं क्या?”

आकाश – “अरे नहीं यार ऐसे ही पूछा चलो ।”

दोनों पैदल कदम से कदम मिलाते हुए चल पड़े, दोनों के दरमियान कुछ गुफ्तगू नहीं हुई, बस एक खाली मौन था । और आंखों के इशारों - इशारों

में ढेरों बातें, जो जुबां से अनकही थी, पर दोनों के दिल सब समझ रहे थे । मौसम की इस फिजा को देख कर आकाश के मन में हाल ही में आई फिल्म **“हॉफ गर्लफ्रेंड”** के एक गाने “**बारिश**” के बोल चलने लगे, उसका मन हुआ कि वो ये गाना गुनगुनाए पर हिम्मत न हुई । उसे लग रहा था जैसे बारिश की हर गिरती हुई बूंद उसके मन की बातें कह रही हो ।

बारिश तेज तो नहीं थी, पर दोनों भीग जरूर गए थे, कुछ देर बाद वो मोड आ गया, जब दोनों के रास्ते अलग होने वाले थे । निता ने आकाश की तरफ मानो इस निगाह से देखा, कि कह रही हो इस रास्ते को भी कमबख्त अभी खत्म होना था, मोड पर पहुंच कर निता ने आकाश से कहा “चलो मेरे साथ घर चलो । माँ मेरे से पूछेंगी कैसे आई, और अगर मैंने कह दिया कि आधे रास्ते तुम्हारे साथ आई, तो मुझे बोलेंगी कि साथ क्यों न ले आई ।”

आकाश – “अरे निता मैं जरूर चलता साथ यार, पर अभी हालत तो देख बारिश में भीग गए हैं सर से पांव तक, एक तो तेरी ये जिद्द ।”
निता – “क्या कहा?”

आकाश – “नहीं कुछ नहीं ।”

निता – “अच्छा हमने जिद्द की थी, तो तुम साथ न आते ।”

आकाश – “अरे बाबा फिकर है तेरी, बीमार पड़ गई तो, और अकेला कैसे आने देता मेरे होते हुए ।”

निता – “अच्छा ठीक है, हम माँ को बोल देंगे कि काम था तुम्हें फिर कभी आ जाओगे तुम ।”

आकाश – “हां ठीक है, और अच्छा ध्यान से जाना, साथ ही पहुंच कर मुझे मैसेज कर देना ।”

निता – “ठीक है जनाब बाय ।”

सड़क पर जाकर आकाश ने अपने घर के लिए रिक्शा ले ली, और निता आगे गली में पैदल ही चली गई, दोनों को पता ही नहीं चला था, कब उन्होंने इंस्टीट्यूट से उस मोड़ तक दो मील पैदल चलते हुए निकाल दिए थे, थोड़ी देर में आकाश को निता का मैसेज आ गया, “हम घर पहुंच गए है, और बाद में बात करते हैं ।”

उस दिन पढ़ने के लिए निता का कोई मैसेज या कॉल नहीं आया, शाम को जब आकाश ने पूछा तो पता चला घर जाने के बाद भी वह बारिश में खूब भीगी थी । और अब उसे जुकाम हो रखा है, ये सुनते ही आकाश गुस्से में उसे डांटने लगा, “बोला था ना बीमार पड़ जाओगी पर तुम समझती कहां हो, रुको आंटी जी से ही बात करवाओ, वही तुम्हें समझाएगी”, निता अरे कुछ नहीं हुआ यार खाली जुकाम ही तो हुआ है, हो जाएगा ठीक ।

आकाश – “हां करते रहना अब हाथ में रुमाल लेकर सूड – सूड ।”

ये सुनकर निता हंसने लगी और हंसते हुए कहने लगी, “हट कुछ भी बोलते हो मेरी नहीं इतनी नाक बहती ।”

आकाश – “अच्छी बात है, चल तू आराम कर कल मिलते हैं ।”

थोड़ी देर बाद आकाश देखता है कि, निता ने अपनी इंस्टा स्टोरी पर वही गाना लगाया हुआ है, जो आज दिन में साथ भीगते हुए, उसके मन में चल रहा था । ये देख कर वह कुछ बोला नहीं बस हल्का सा मुस्कुराते हुए मन ही मन कहने लगा, क्या ही इत्तफाक है यार ।

अगले दिन सुबह निता का कोई गुड मॉर्निंग मैसेज नहीं आया, जो अक्सर आकाश को उसके उठने से पहले ही एक स्माइल के साथ आ जाता था । पूछने पर पता चला निता को हल्का बुखार हुआ है, ये सुनकर आकाश निता से जिद्द करते हुए कहने लगा । "मुझे आंटी जी से बात करनी है", कुछ देर बाद जब आंटी जी के साथ आकाश की बात हुई वह उनसे निता की शिकायत करने लगा ।

आंटी – 'अरे बेटा हमारी भी कहां सुनती है, बचपन से ही इसे बारिश में भीगने की आदत है । और फिर बीमार पड़ जाती है, तू ही समझा बेटा इसे मैं और इसके पापा तो थक गए हैं इसे बोलते – बोलते ।

आकाश – "आंटी जी जब आप लोगों की नहीं सुनती तो मेरी कहां से सुनेगी, फिर भी कोशिश करूंगा ।

थोड़ी देर बाद आकाश को निता का गुस्से से भरा हुआ मैसेज आया, "अच्छा जी हमारी शिकायत लगाई जा रही थी, हमें पता था और इसलिए हम बात नहीं करा रहे थे, पर आप हो के मानते ही नहीं ।"

आकाश – "अच्छा माफी हुजूर, और फिकर है आपकी, तो कर दी शिकायत हमने, अब आप जो सजा दें ।"

निता – "सजा तो मिलेगी, हम ठीक हो जाएं मिलते है तो बताते है तुम्हें ।"

आकाश – "ठीक है बाबा पहले ठीक तो हो जाओ ।"

कुछ दिन बाद निता अपने परिवार के साथ कुछ दिनों के लिए कुल देवी मां के दर्शन को चली गई, इधर आकाश को मानो उसकी आदत सी लग गई थी । रोज उससे बातें करके खाना – खाने जाना और पार्क में उसके आने का इंतजार करना, बीते इन दिनों से वह उसे बहुत याद कर रहा था

। वह परिवार के साथ थी तो आकाश से उसकी ज्यादा बात भी नहीं हो पाती थी । बस जाने वाले दिन आकाश ने उससे इतना पूछा था, की "मेरे लिए वहां से क्या लाओगी?", और निता ने जवाब में कहा था परिवार के साथ हूं अगर मौका मिला तो कुछ ले लूंगी, नहीं तो प्रसाद तो पक्का ।

कुछ दिनों बाद जब वह लौटी, तब उन दोनों में झगड़ा हो गया, इस बात को लेकर की निता ने उसे इन दिनों उससे ज्यादा बात नहीं की, कभी – कभी तो मैसेज का जवाब भी पूरे - पूरे दिन नहीं दिया । गुस्से में निता भी कहने लगी मैं इतनी मुश्किल से तेरे लिए वहां से कुछ लाई थी, तुम्हें लेना है तो लेना नहीं तो मैं फेंक दूंगी ।"

तब आकाश अपना गुस्सा ठंडा करते हुए उसको मनाने लगा, पर अपने दिल की बातें उसे कैसे समझाता, अगले दिन जब वे मिले, तब निता ने उसे उसके लिए वहां से लाया हुआ एक छल्ला दे दिया । जिस पर दो कप्पल आपस में एक दूसरे को पकड़े खड़े थे । और उनके बीच में दिल बना हुआ था और सबसे नीचे आकाश लिखा हुआ था । देने के बाद निता ने कहा, "इस पर आकाश लिखा हुआ था तो मुझे यह अच्छा लगा बस इसीलिए मैं ले आई, अच्छा है ना?"

आकाश – "हां बहोत अच्छा है", जैसे वह कुछ और भी कहना और पूछना चाहता था, पर किसी कशमकश में कह नहीं पाया, बस इतना कहा, और प्रसाद?"

निता – "अरे माफ करना यार वो सब तो अंजू दीदी और बाकी सब ने ले लिया, बचा नहीं, ये भी मैंने छुपा कर रखा था, कहीं सवाल न करने लगे ।"

आकाश – "अच्छा चल कोई नहीं", चल चलें घर या बैठना है अभी ।"

निता - "नहीं – नहीं बस पापा को कॉल कर दूं वो आ जाएंगे, तू जा ।"

आकाश – "नहीं हर बार की तरह तेरे जाने के बाद ।"

निता – "ठीक है तो करो इंतजार, मैं चली गेट पर ।"

कुछ देर बाद निता वहां से अपने पापा के साथ चली गई, और फिर आकाश भी, अगले दिन शनिवार और फिर रविवार था । आकाश इन दो दिन रश्मि चाचा के यहां काम पर जाया करता था, ये बात निता से लाख छुपाने की कोशिश करते हुए भी वह छुपा न सका था ।

उसे वहां काम पर जाना अच्छा नहीं लगता था, पर उसे अपनी जेब खर्ची और फीस के लिए जाना पड़ता था । वहां काम पर सब निहायत बेकार आदमी थे, जिन्होंने अपनी जिंदगी में तो कुछ ढंग का किया नहीं था, ऊपर से आकाश को भी हतोत्साहित करते रहते थे । पढ़ने का कोई फायदा नहीं है, ये वो, और उन्हें अपनी निजी जिंदगी का भी तमाशा बनाने में कोई शर्म नहीं आती थी, पूरा दिन अंतरंग बातें कभी अपनी निजी तो कभी किसी साथ वाले का मज़ाक बनाते हुए ।

आकाश को सबके साथ में ही मशीन पर बैठ कर काम करना पड़ता था, जिस वजह से वह कहीं उठ कर जा भी नहीं सकता था । ऐसे ही काम करते हुए उन सब की बातें सुनकर उसके "दिलों - ओ – जहन" में खयाल आते, की ये सब दूसरों के बच्चों से तो जिस्मानी संबंधों को लेकर ऐसे खुली बाते कर लेते है, छेड़ लेते हैं, मजाक कर लेते हैं ।

पर अपने बच्चों से क्यों नहीं कर पाते, तब इन्हें कौन सी "शर्म ओ हया" मार जाती है । अगर ये सब अपने बच्चों को यौन संबंधों के बारे में, लड़के - लड़की के संबंध के बारे में अच्छे से जानकारी दें, तो दुनिया में इतने बलात्कार न हों । यही सब उसके "वहम- ओ – गुमान" में चलता रहता,

पर वह उन्हें कुछ कहता नहीं, इस डर से कि कहीं उल्टा उसे ही न समझाने बैठ जाएं ।"

कुछ दिन बाद एक शाम आकाश का बाइक से एक छोटा सा एक्सीडेंट हो गया, वह तब उपेश के साथ बाजार गया था । उपेश बाइक चला रहा था, और पीछे बैठा आकाश निता से मैसेज में बातें करने में मशगूल था, कि उपेश को पता नहीं चला कब अंधेरे में उसकी बाइक सड़क के किनारे रखे एक पत्थर से टकरा गई ।

दोनों को तब काफी चोटें आई, आकाश के माथे और चेहरे पर हल्की चोटें थी, घुटने और कोहनियां भी छिल गई, गनीमत रही कि दोनों को कोई अंदरूनी चोट नहीं आई ।

कुछ देर बाद हॉस्पिटल से छुटने के बाद आकाश ने निता को मैसेज किया, अपने शरीर पर जगह – जगह बंधी पट्टियों की फोटो को भेजते हुए ।

सामने से निता का नम आंखों से जवाब आया "ये कैसे हुआ?, कहां है अब तू, और ठीक तो है ना", और भी ढेरों सवाल ।

आकाश ने उसे कॉल करके समझाते हुए सब विस्तार से बताया, तब जाकर वह कहीं शान्त हुई । निता की इस केयर को आकाश पहले भी महसूस कर चुका था, जब एक दफा फैक्टरी में काम करते हुए उसे अंगुली पर हल्की सी चोट लग गई थी, और निता ने उसे जिद्द करते हुए दवाई लेकर आने को बोला था । तब वह तब तक नहीं मानी थी, जब तक आकाश ने उसे अंगुली पर की हुई पट्टी और डॉक्टर की दी हुई दवाई की फोटो नहीं भेज दी थी ।

इसके बाद तो निता उसकी ऐसे केयर करने लगी, जैसे वह उससे दूर हो ही ना । फोन करके पूछना दवाई ली या नहीं, और अगर नहीं, तो अभी

लो, मुझे फोटो भेजो दवाई लेने लगे हो तो, डॉक्टर के पास अब कब जाना है, खाना खाया या नहीं, फल मंगाए?, और खाए भी हैं या नहीं ।

पट्टियां खुलने के बाद वो रोज उससे उसके जख्मों की दो से तीन दफा फोटो लेकर देखने को मंगवाती यह देखने के लिए की उसके जख्म सूखे हैं या नहीं ।

जो जख्म सुखने लगे थे, उन पर वह उसे नारियल का तेल लगाने को बोलती अगर आकाश भूल जाता तो उसे उसकी डांट और गुस्से का सामना करना पड़ता ।

इस बीच आकाश को लगने लगा था कहीं निता भी उससे प्रेम तो नहीं करती । पर फिर वह खुद को समझा लेता की नहीं ऐसा कुछ नहीं है, कभी – कभी वह निता से कह भी देता “निता मुझे तुमसे कुछ कहना है ।”

निता भी ऐसे लगता जैसे सब जानती हो, कि आकाश क्या कहना चाहता है । और बोल पड़ती “तो कहो क्या कहना है”, आकाश हिम्मत न कर पता कि उससे दिल की बात बोल दे, और फिर कहने लगता “नहीं मिल कर बोलूंगा कभी । निता भी सामने से कह देती “फट्टू है तू तो”, आकाश भी कह देता, “अब जो मर्जी समझो ।”

कुछ दिन बाद जब वह इंस्टीट्यूट गया, तब ठीक से चल भी नहीं पा रहा था, ना ही घुटनों को मोड़ कर बैठ पा रहा था ।

जब वह निता से मिला, तब वह बोलने लगी, “क्या जरूरत थी आने की, कुछ दिन और आराम कर लेता”, तब अंजू दीदी बोल पड़े, “निता तू नहीं जानेगी, मैं जानती हूं इसे, रहा नहीं गया होगा इससे ।”

तब निता नीचे मुंह करके मुस्कुराने लगी, बाद में जब निता चली गई । तब अंजू दीदी ने आकाश को कुछ दिन बाद अपने मंगेतर की बर्थडे पार्टी में आने को कहा । निता को बुलाने के विषय में उन्होंने आकाश पर छोड़ दिया, बाद में आकाश को पता चला, निता को बुलाए जाने पर अन्य कोई भी सहमत नहीं था । क्योंकि वह उनके बैच की नहीं थी, और बैच के सभी लड़कों में भी केवल आकाश ही इनवाइट था । और कुछ लड़कियां, जिनमें दीपिका, रेशमा, बाला और एक दो अंजू दीदी की कॉलेज की दोस्त और उनके बॉयफ्रेंड थे ।

आकाश घर जाकर इस पार्टी में निता को इनवाइट कर, उसे प्रपोज करने की सोचने लगा । पर उसे साफ – साफ समझ नहीं आ रहा था कैसे, और एक डर की कहीं निता ने अगर उसके प्रेम प्रस्ताव को ठुकरा दिया, तो पूरी पार्टी में कहीं उसका मजाक न बन जाए । वह इस आंतरिक संघर्ष में उलझ ही हुआ था, की उसे अपने एक दोस्त की याद आई, जो इस सब में बड़ा माहिर था । आकाश ने उसे कॉल लगाई और सारी कहानी उसे बताते हुए, इसका हल पूछने लगा । आकाश ने उससे कहा कि वह एक रिंग लेने की सोच रहा है, उसने आकाश को बड़े इत्मीनान के साथ समझाया ।

“देख भाई अभी रिंग या गुलाब लेकर जाना दोनों में से कुछ भी सही नहीं है, तू पहले उससे उसकी दिल की बात जान, उसके दिल में क्या है, बातों से, केयर करने से ऐसे कुछ नहीं पता चलता ।”

आकाश अब इसी आंतरिक संघर्ष में था, कि निता के दिल में क्या है, कैसे जाने, कभी उसके मन में खयाल आता कि अंजू दीदी को बोले कि वे उससे बातों - बातों में पूछ लें, पर नहीं, निता कहीं समझ न जाए आकाश ने ही बोला होगा । तो कभी वह खुद को समझाने की कोशिश

करता कि उसका परिवार कहां और तू कहां तेरी हैसियत ही क्या है आकाश । असल में निता एक अच्छे, बड़े अमीर परिवार से ताल्लुक रखती थी । जबकि आकाश एक साधारण से परिवार से । वह तो खुद अपना खर्च निकालने के लिए, रश्मि चाचा के यहां काम पर जाया करता था ।

तो कभी बातों - बातों में निता के सामने उसके मुंह से निकाल जाता कि "निता मैं तुम्हें कुछ कहना चाहता हूं ।" तब निता भी कह देती "बोल दे ना क्या है", पर फिर आकाश कुछ और बातें करने लगता । इंस्टीट्यूट में भी जब आकाश और निता मिलते, तब निता आकाश को अक्सर कह भी देती, "फट्टू है तू तो फट्टू ।"

तब आकाश को भी लगता, कि कहीं न कहीं यह जानती है, और मुझसे कहलवाना चाहती है ।

इसी कशमकश में एक दिन वह निता को बोल देता है ठीक है, कल मैं तुमसे मिलता हूं तो कहूंगा । अगले दिन निता उससे क्लास के बाहर मिलती है, पर आकाश कुछ कहता नहीं, इस पर निता उस पर गुस्सा करते हुए, उसे फिर से फट्टू कह क्लास में चली जाती है ।

पार्क में जब वे दोनों मिले, तब आकाश ने मौका देखकर निता से कह दिया, "निता आई रियली लाइक यू यार....., ये सुनकर निता के होश से उड़ जाते हैं । वह आकाश पर गुस्सा करने लगी, और इसी गुस्से में कहने लगती है, आकाश तुम भी वही सब कह रहा है, जो बाकी सब लड़के मुझसे कहते हैं, हम दोनों, एक अच्छे दोस्त है, तू भी ऐसे करेगा तो हमारी दोस्ती......

और फिर इस घटना के बाद गुस्से में निता ने आकाश से बात करनी बंद कर दी।

“आकाश अब मैं तुझसे बात नहीं करूंगी ।”, उस दिन आकाश को निता को मनाने में शाम हो गई । “माफ कर दे यार, आगे ऐसे कभी नहीं कहूंगा ।” पूरे दिन की मशक्कत के बाद बमुश्किल से जाकर कहीं वह मानी, और फिर इस बारे में आकाश ने निता से कभी बात नहीं की ।

कुछ दिन तक उन दोनों के दरमियान कोई खास गुफ्तगू नहीं हुई, पार्क में भी मिल जाते तो ज्यादा बात न होती । आकाश को कभी – कभी लगता कि कहीं निता का कोई बॉयफ्रेंड तो नहीं है, तो अगले ही पल सोचता नहीं – नहीं ऐसा होता तो मुझे बता देती । और फिर वह सोचते हुए खुद को कहने लगता, पर मुझे क्यों बताती, और वैसे भी कुछ साल पहले ही तो उसका ब्रेकअप हुआ था ना ।

तो कभी उसके मन में पुरानी बातें आने लगती, जब निता उसे किसी लड़के के बारे में बातें करते हुए चिढ़ाने लगती थी । पर तब वह उसकी उन बातों को उतनी गंभीरता से नहीं लेता था ।

अंजू दीदी के मंगेतर की बर्थडे पार्टी में भी आकाश अकेला ही गया, "वहाँ वह अपने आकर्षक व्यक्तित्व और स्वभाव की वजह से सबके बीच चर्चा का विषय बना हुआ था।", मानो उसके हंसमुख और शायराना स्वभाव ने सब को मोह लिया हो, इस पार्टी की चर्चाएं कई दिनों तक आकाश, अंजू दीदी और दीपिका के बीच में चलती रही ।

अगले महीने आकाश का कोर्स भी खत्म होने वाला था । इन दिनों आकाश और निता में अब कुछ पहले की तरह सामान्य होने लगा था,

फिर से बातों का वह सिलसिला, पार्क की वे मुलाकातें, और कभी - कभी निता की वो मस्ती ।

और फिर आखिर वह दिन आ ही गया, जब आकाश का इंस्टीट्यूट में आखिरी दिन था, निता के कोर्स को खत्म होने में अभी कुछ महीने और पड़े थे ।

आखिरी दिन आकाश निता और अंजू दीदी के लिए तोहफे लेकर गया था । यह सोचते हुए कि अब न जाने कब मिलेंगे, पर अनजाने में वह दीपिका को भूल गया, और इसी बीच उसके लिए तोहफा ले आना भी भूल गया।

जब आकाश ने अंजू दीदी को उसका तोहफा, लाफिंग बुद्धा दिया, तब दीपिका भी वहीं पर थी । और दीपिका को देखकर अंजू दीदी आकाश से बोल पड़ी, “और भाई दीपिका के लिए?”, आकाश ने दीपिका की तरफ देखा जो नीचे मुंह किए चुपचाप खड़ी थी, अंजू दीदी के मुंह से ये सुनकर आकाश के होश उड़ गए, वह मन में खुद से सवाल करने लगा, “दीपा को कैसे भूल गया ।”, तब आकाश ने दीपिका की तरफ देख, माफी मांगते हुए कहा, “दीपा सॉरी यार, मुझे ध्यान नहीं रहा ।”

दीपिका – “बड़ी दबी आवाज में बोली, कोई बात नहीं आकाश ।”

आकाश को एकदम से याद आया कि उसके बैग में एक बड़ी वाली चॉकलेट रखी है । उसने बैग से चॉकलेट निकालकर दीपिका की तरफ बढ़ाते हुए कहा “दीपा अभी के लिए मेरी तरफ से ये, तेरा तोहफा मुझ पर उधार रहा दोस्त ।”

दीपिका ने आकाश की तरफ हल्की सी मुस्कुराहट के साथ देखा और चॉकलेट उसके हाथ से ले ली । निता को वह उसके तोहफे अकेले में देना चाहता था । इसलिए वह अकेला कुछ देर पार्क में बैठ गया, उसे पार्क में

बैठा देखकर अंजू दीदी समझ गए थे, और तब इशारों - इशारों में उनके बीच कुछ बात हुई, फिर वे वहां से चले गए ।

थोड़ी देर बाद जब निता आकाश के पास आई । तो वह आकाश की पीठ पर शरारत से मुक्का जमाते हुए बोली, “कैसे बैठा है?”

आकाश – “तू “चुड़ैल” मेरे हाथों मरेगी किसी दिन”, एक दिन आकाश ने ही अनजाने में उसका ये नामकरण कर दिया था ।

जब वे दोनों ऐसे ही पार्क में बैठे थे, तब आकाश की नजर निता के पैर पर चली गई थी, जिसमें उसने एडी के ऊपर काला धागा बांधा हुआ था । तब आकाश उससे पूछ बैठा था, कि ये धागा क्यों बंधा है । तब उसने जवाब दिया था, “ऐसे ही”, पर तब आकाश मजाक में हंसते हुए बोल पड़ा मैं समझ गया किस लिए बांधा है, निता “अच्छा तो बता किस लिए?”, तब आकाश हंसते हुए बोल पड़ा “ताकि अंदर की चुड़ैल बाहर न आए ।” तब ये सुनकर निता ने उसकी कमर में मुक्का दे मारा था, और कहने लगी “तू तो कुत्ता है कुत्ता, कबाड़ी” ।

आकाश – “तू मरेगी चुड़ैल किसी दिन मेरे हाथों ।”

निता – “अच्छा मार के दिखा, मेरे पापा तुझे छोड़ेंगे नहीं ।”

आकाश – “अरे ऐसे ही बोलता हूं तू तो ।”

निता – “अच्छा, या यूं कहो डर गए ।”

आकाश – “हां डर गया भई, बस ।”

निता – “हां ऐसे ही डर के रहा करो, अच्छा बता क्या कहना था तूने जो आज जल्दी नीचे बुला लिया क्लास से ।”

आकाश ने बैग से निता के लिए तोहफे निकालते हुए उसके सामने रख दिए, और बोला, "ये लो तुम्हारे लिए ।"

निता – "पर क्यों मेरा तो कोई बर्थडे भी नहीं है आज ।"

आकाश – "क्यों बर्थडे पर ही दे सकते है, और भूल गई, मेरा कोर्स खत्म हो गया है आज । अब डिग्री लेने आऊंगा, जब यहां से कॉल आएगी ।"

ये सुनकर तब निता की हल्की सी आंखें भर आई । जो चेहरा अभी खिला हुआ था, और आकाश से मस्ती कर रहा था, वह चेहरा अचानक से बुझ सा गया । चारों तरफ एक अलग ही सन्नाटा पसरा हुआ प्रतीत हो रहा था ।

और फिर अगले ही पल निता ने बेंच पर बैठे – बैठे आकाश को गले लगा लिया, आकाश की भी हल्की सी आंखें भर आई । कुछ देर दोनों के दरमियान कुछ गुफ्तगू नहीं हुई बस शांत बैठे रहे ।

फिर अगले ही पल आकाश निता से बोला "मिल तो लिया करेगी ना चुड़ैल", निता ने जवाब में सिर्फ इतना कहा, "कह नहीं सकती, देखा जाएगा ।"

कुछ देर बाद निता के पापा गेट पर उसे लेने आ गए थे । वह उठ कर चली गई, और कुछ देर बाद आकाश भी । उस पूरे दिन फिर आकाश मायूस सा रहा, उसका कहीं मन न लगा, मानो अपना ही एक हिस्सा कहीं छोड़ आया हो ।

कुछ दिन बाद जब आकाश डिग्री लेने इंस्टीट्यूट पहुंचा । तब उसे उस दिन वहां निता नहीं मिली, वह उस दिन आई ही नहीं थी ।

फोन पर उन दोनों की बात हुई थी, निता को परिवार के साथ कहीं जाना था जिसे वह टाल नहीं सकी । आकाश अंजू दीदी, दीपा, रेनू, रजत, बाला और बाकी सब से मिला, पर जिससे मिलने की इच्छा थी वह वहां मौजूद नहीं थी । जाते वक्त आकाश ने पार्क की तरफ देखा, पर उसका आज उस तरफ जाने को दिल नहीं किया, और तब वह सीधा गेट से बाहर की तरफ निकल गया ।

अब रश्मि चाचा के ही जान पहचान के यहां उसे कंप्यूटर पर बिलिंग की नौकरी मिल गई थी । वह अब भी शाम को घर पर आकर पढ़ता था, और रविवार के दिन निता को भी फोन पर कुछ घंटे टॉपिक समझा देता था, पर अब निता का व्यवहार उसके प्रति बदलने सा लगा था । निता अब उस पर आए दिन बेवजह गुस्सा हो जाया करती, रुखा - रुखा बर्ताव करती, कभी ढंग से प्यार से बात कर लेती, कभी बेवजह से उसके ऊपर भड़क पड़ती । आकाश को निता का ये व्यवहार समझ नहीं आ रहा था ।

वह जब उससे मिलने को कहता तो वो उसे मना कर देती । अगर कभी आकाश उससे इंस्टीट्यूट आकर मिलने को बोल देता, तो वह कह देती, तुम आ जाना मैं नहीं मिलूंगी तुमसे ।

आकाश को तब समझ नहीं आ रहा था, आखिर उसकी गलती ही क्या है, जो निता ऐसे बर्ताव कर रही है । कई दफा वह निता को मैसेज करते हुए बोल भी देता था । "निता आखिर बता तो यार, मेरी ऐसी गलती ही क्या है, अगर कुछ है तो मैं तुझसे तेरे पांव पकड़ कर माफी मांग लेता हूं, पर तू मेरे साथ ऐसे बर्ताव न कर", तब सामने से निता का जवाब आता, "नहीं कुछ नहीं ।"

इस सब से आकाश का काम में भी मन नहीं लग पाता, वह अब एक अलग ही तनाव में जीने लगा था

आकाश अब हर गुरुवार अपने पास की ही एक मशहूर दरगाह पर जाने लगा था । इस उम्मीद से कि शायद वहां की दुआओं से निता का व्यवहार उसके प्रति पहले के समान सामान्य हो जाएगा, और उसकी दोस्ती में कभी कोई दरार न आए ।

कई दफा रात में बात करते हुए निता, उसे गुस्से में ब्लॉक कर देती । तब आकाश मायूस सा चादर में सर ढक कर सो जाता । और जब सुबह उठता तो देखता, निता ने उसे अनब्लॉक कर गुड मॉर्निंग का मैसेज भेजा हुआ है । वह तब समझ न पता आखिर ये सब उसके साथ हो क्या रहा है ।

उसका कोई इतना करीबी भी नहीं था जिससे वह ये सब सांझा कर सके, अंजू दीदी की अब शादी हो चुकी थी, जिस कारण अब वह उनसे ज्यादा बातें नहीं करता था ।

वह कसरत करने के लिए कसरत खानें जाया करता, पर वह भी अब उसकी छूट गई थी । क्योंकि उसे देख कर उसके कोच समझ गए थे, उन्होंने तब उससे सिर्फ इतना कहा था, “आकाश तेरे शरीर में मुझे कोई खास बदलाव नहीं दिख रहा । जबकि तुझे इतना लंबा वक्त यहां आते हो गया, तू शायद कोई मानसिक तनाव ले रहा है, अगर कुछ लड़की का चक्र है, तो पहले उसे निपटा, फिर आ ।”, उसके बाद आकाश फिर कसरत खानें गया ही नहीं ।

निता से अब उसकी इतनी कोई खास बात भी नहीं हो पाती थी । कई दफा उसे अजनबी लोगों को देखकर लगता जैसे सामने निता खड़ी है । तब वह अपनी आंखें मलता हुआ खुद को यकीन दिलाने की कोशिश करता कि ये तेरा वहम है, वो निता नहीं कोई और है । और एक दिन इसी कशमकश में आकाश के मन में कुछ शब्द जुड़ गए……..।

“हर पल हर जगह हर किसी में,
नजर आने लगे हो तुम,
माना की तुमसे दूरियां तो हुई,
लेकिन दिलों की नजदीकियां,
कहीं ना कहीं अभी भी जारी है ।”

इसी दौरान आकाश की दोस्ती इंस्टाग्राम पर एक अजनबी लड़की से हो गई, जो उसके शहर से काफी दूर की थी । पर ऑनलाइन ही सही उन दिनों उसकी दोस्ती उस अजनबी लड़की से काफी अच्छी हो गई थी । आकाश ने उसे अपना और निता का सब बता दिया । वह अक्सर आकाश को समझाती रहती, आकाश इस सब से बाहर निकलो, और अपने भविष्य पर ध्यान दो ।

अक्सर वह भी अपने बॉयफ्रेंड को लेकर आकाश से बातें सांझा करती रहती थी, दोनों के दरमियान एक अच्छी दोस्ती कायम हो गई थी । भले ही वे एक दूसरे से मिल नहीं सकते थे, पर एक दूसरे को सलाह अच्छी दे देते थे ।

एक दिन ऐसे ही आकाश जब उससे बात कर रहा था । तब वह आकाश पर गुस्सा हो बैठी । “जब देखो, निता – निता – निता...., आकाश तुम बच्चे हो क्या?, इतना नहीं समझते, वो तुम में दिलचस्पी नहीं रखती, जब उसे टॉपिक समझना होता या अगर कुछ काम होता है, वो तुमसे अच्छे से बात कर लेती है, और नहीं तो फिर वही रुखा बर्ताव और ब्लॉक अनब्लॉक आकाश बाहर आ इस सब से, देख तू मुझे समझाता है ना, और मैं तेरी बातें मानती हूं, तो अब तू मेरी बातें मान और आगे बढ़ यार ।”

आकाश – “ठीक है मानसी, जैसे तुम कहती हो मैं वैसे ही करूंगा, पर ।”

मानसी – “पर क्या आकाश?”

आकाश – “यार वो फ्रेंडशिप डे आ रहा है तो क्या मैं उसे एक छोटा सा तोहफा, एक फोटो फ्रेम तोहफे में दे दूं, उसके बाद मैं आगे बढ़ जाऊंगा ।”

सामने से मानसी गुस्से में झलाते हुए बोली, “ठीक है, जो करना है कर, तुझे समझाने का कोई फायदा नहीं आकाश ।”

आकाश – “नहीं ऐसा नहीं है मानसी, पक्का मैं वादा करता हूं ।”

मानसी – “ठीक है ।”

आकाश को निता की मुस्कान बोहोत पसंद थी । एक दिन जब वह अपने परिवार के साथ बाहर डिनर के लिए गई थी, तब उसने जो तस्वीरें अपनी स्टोरी पर शेयर की थी, आकाश ने उनमें से एक का स्क्रीनशॉट ले लिया था ।

जिसमें निता की वह एक प्यारी और मनमोहक सी मुस्कान थी । आकाश ने उसी तस्वीर को कुछ एडिट कर, निता से उसके ऑफिस का पता लेकर भिजवा दी । पर हुआ आकाश की उम्मीद से बिल्कुल उल्टा, आकाश सोच रहा था निता ये देख कर खुश होगी । पर उसने हंगामा कर दिया, की वह इसे घर कैसे लेकर जाएगी घर पर क्या बोलेगी । ये वो, तब फिर आकाश ने उसे बमुश्किल से धैर्य रखते हुए समझाया । पर तब आकाश समझ चुका था, की उसे उसकी बिल्कुल भी कद्र नहीं है, इस रिश्ते में बस वही उसके ऊपर गिरे जा रहा है ।

अब वह धीरे – धीरे निता से दूरी बनाने की कोशिश करने लगा, अब न तो वह उसे कोई मैसेज करता न उसके कॉल का इंतजार, किसी काम से अगर निता का मैसेज भी आ जाता तो वह उसे नजर अंदाज कर देता, और घंटों बाद जवाब देता।

दिन बीत रहे थे, और आकाश अब निता के बग़ैर जीना सीखने लगा था ।

उसके बी.ए के इम्तहान का नतीजा भी आ गया था । वह फर्स्ट डिवीजन से पास हो गया था, पर उसे ये देख कर बड़ा अफसोस हुआ कि निता कुछ विषयों में फेल हो गई, पर उसने इस बारे में निता से कोई बात नहीं की वह अब अपने में मशगूल रहने लगा था । उसने कसरत खानें भी फिर से जाना शुरू कर दिया था।

और एक दिन जब वह यूं ही बैठा हुआ था, तब उसके मन में कुछ विचार आने लगे पहले तो वो उनका मतलब न समझा फिर उन्हें कलम से कागज पर लिखने लगा, और उसके बाद उसने उन्हें नाम दिया, **"प्रेम या तलाश",** जो कुछ यूं थे......

प्रेम या तलाश

हम जीवन भर बाहरी दुनिया में,
तलाशते रह जाते हैं,
स्वयं के लिए प्रेम ।
कभी किसी व्यक्ति में,
तो कभी किसी वस्तु में ।
बस देख नहीं पाते,
स्वयं के भीतर स्वयं के
लिए प्रेम ।
और रह जाते हैं निराश,
हताश, कुंठित और व्यथित ।
प्रेम को बाहरी दुनिया में वही

तलाशता है,
जो स्वयं से प्रेम नहीं करता ।
जो स्वयं से प्रेम करता है,
वह स्वयं को अनंत ऊंचाइयां देगा ।
प्रेम को बाहर नहीं,
स्वयं के भीतर तलाशिए । ।

कुछ महीनों बाद……,

साल का आखिरी दिन इक्कतीस दिसंबर था, आकाश अपने दोस्तों के साथ नए साल की पार्टी में जाने के तैयार हो रहा था । की अचानक से उसके फोन की स्क्रीन चमकी, देखा तो निता का मैसेज था, "आकाश हो सके तो मुझे माफ कर देना यार, मैंने तुम्हारा बहुत दिल दुखाया है, मैंने तुमसे गुस्से में बातें की, रुखा बर्ताव किया । और तुम बिना कुछ कहे बस सहन करते गए, "आई एम सॉरी", मुझे माफ कर देना यार ।"

तब निता के मैसेज को पढ़कर आकाश की आँखें भर आई, उसने निता से ज्यादा कुछ नहीं कहा बस एक मैसेज लिख कर छोड़ दिया, "इट्स ओके निता ।"

और फिर फोन का इंटरनेट बंद कर, फोन को साइलेंट मॉड पर लगाते हुए एक तरफ रख दिया, और निकल पड़ा, अपने दोस्तों के संग ।

उजड़ा दयार

आज उसके ब्याह को दस बरस बीत चुके थे, लेकिन उसके लिए उसके मर्द का बर्ताव वही पहले दिन के माफिक ही था । इतने बीते बरसों में उसमें जरा सा भी बदलाव नहीं आया था ।

शाम को जब वह शराब के नशे में धुत घर पर आया, तब उसे यह तक याद नहीं था, की आज उसकी सालगिरह है । और घर पर उसकी औरत उसका इंतजार कर रही है, आते ही उसकी वही रोज की ही तरह की तू, तू मैं, मैं और गुस्सा, और फिर बे-सबब का उस पर हाथ उठा दिया जाना ।

आज भी ऐसा ही कुछ हुआ, जब उसने पति को नशे में धुत देखा, तो बोले बिना रह न सकी ।

“आप आज भी पीकर आए हो, कम से कम आज तो रहने दिया होता, हमारे ब्याह की सालगिरह है आज, और आप अमित आज भी?”

“क्यों री तू कौन होती है, मुझे पूछने और बोलने वाली, चल हट । और सालगिरह, तू खुद मना, साली बड़ी आई सालगिरह मनाने वाली ।”

“चल खाना दे अब” ।

उस वक्त उसके सारे अरमान खाक हो गए, जो अभी कुछ देर पहले उसने खुली आंखों से संजोए थे । पर यह कोई नई घटना नहीं थी, ये तो उसकी जिंदगी का रोज मर्रा का किस्सा बन चुका था । मगर सरला दिल में एक उम्मीद की शमा जलाए बैठी थी, की कहीं कभी एक दिन इस पत्थर दिल आदमी का दिल मोम की तरह पिघलेगा और वे बदल जाएंगे । लेकिन इस आस में तो वह पिछले दस बरसों से जी रही थी ।

उसने आज खुशी से अपनी नौ बरस की बेटी पीहू के कहने पर, मटर पनीर की सब्जी, साथ में खीर और पूड़ी बनाई थी । और जब उसने आदमी के सामने उसे परोसा तो वह देखते ही भड़क उठा । और सीधे उसके बालों को जुड़े से पकड़ते हुए बोला, “बे साली तेरे बाप की कमाई है, जो पकवान बना- बना कर उड़ा रही है, मेरी कमाई है, मैं कमाता हूं ।”

अगले ही पल अमित ने खाने की थाली को जोर से जमीन पर पटक दिया, और जाकर अपने कमरे में लेट गया । इधर सरला आंखों में आंसू लिए, अपनी सिसकियों को इस डर से दबाते हुए रोने लगी कहीं दूसरे कमरे में सोई पड़ी पीहू ना सुन ले । लेकिन पीहू जिसकी नींद जमीन पर थाली गिरने की आवाज से ही टूट गई थी । ये सब अपने कमरे के दरवाजे पर खड़ी चुपचाप देख रही थी । और फिर जाकर बिस्तर पर लेट गई, इधर सरला भी भूखे पेट उस थाली को समेट कर पीहू के बगल में जाकर लेट गई ।

भर रात वह रोती रही और इसी बीच कब उसे नींद आई, और कब भोर हुई, उसे पता ही ना चला । सुबह जब वह उठी तो रात भर रोने से उसकी आंखों में सूजन आ गई थी, जिसे पीहू ने तुरंत पहचान लिया । और अपनी मां की तरफ देखते हुए, उसके चेहरे को अपने नन्हे हाथों में लेकर कहने

लगी, “मां पापा ने रात भी”?, ये कहती हुई अपनी बेटी को उसने उसके हाथों को चूमते हुए सीने से लगा लिया ।

सरला जो दिल में अमित के बदल जाने की आस लिए बैठी थी, पर अब बीते दस बरसों की घटनाओं पर उसका ध्यान जाने लगा । उसे उन बीते बरसों की घटनाएं ना चाहते हुए भी स्मरण होने लगती हैं । अमित का शादी के पहले दिन से उसके साथ बर्ताव, कैसे वह शादी की पहली रात उस पर भूखे भेड़िए की तरह टूट पड़ा था । और सरला के बार – बार मना करने पर भी न रुका था, यहां तक कि सरला ने पानी पीने तक का भी बहाना लगाया पर उस वक्त, हवस के नशे में चूर उस आदमी ने उसकी एक तक ना सुनी थी ।

उस रात से सरला के मन में उस आदमी के प्रति एक डर ठहर गया था । उस रात को याद कर वह आज भी सहम उठती है, कैसे वह फिर उस आदमी से खुद को बचाने की तरकीबें खोजती रहती थी । दिन तो किसी तरह निकल जाता था, पर रात पर उसका बस न चलता था ।

सरला को याद आता था, की कैसे अमित ने उसे शादी के महज दो दिन बाद बुरी तरह पीटा था । जिसकी वजह सिर्फ इतनी थी कि उसे अपने आदमी का तन-पोश बेहद खोजने पर भी नहीं मिला था, तब उसे समझ भी नहीं आया आखिर इस सब में उसकी गलती ही क्या थी ।

और ये सब सोचते – सोचते कब उसकी आँखें बह आई, उसे पता ही नहीं चला । ऐसे ही बैठे कई दफा उसके मन में आता कि क्यों ना खुद खुशी कर ले । लेकिन अपनी बच्ची पीहू के बारे में सोचते हुए वह सहम उठती, आखिर उसके लिए ही तो वह चुपचाप सब सहते हुए जिए जा रही थी । अमित से तलाक़ लेने का ख्याल जब उसके गुमान में आया था, तब पारिवारिक दबाव के चलते, और अमित की धमकियों से डरते हुए वह ये

कदम भी न उठा सकी । और फिर आखिर उस पर जो बीत रही थी, वह सब वह किससे कहती, मां तो बचपन में ही छोड़कर चली गई थी, और पिता उसकी मां के जाने के बाद अपने में ही मशरूफ रहने लगे थे । और फिर भला "मां की तरफ के रिश्ते मां के होने तक, और पिता की तरफ के रिश्ते पिता के होने तक ही रहते हैं, उसके बाद उन रिश्तों का कोई अस्तित्व नहीं बचता", और एक छोटा भाई जो विदेश में पढ़ने चला गया था, आखिर पीहू के अलावा वह इकलौता ही तो था | जिसमें उसकी जान बसती थी, विदेश में रहते हुए उसे कोई परेशानी ना हो इस डर से वह उसे भी कुछ न बताती ।

दिन बीत रहे थे, और सरला सिर्फ पीहू के लिए जिए जा रही थी । लेकिन इस दौरान उसकी मुलाकात राहुल से हुई, राहुल एक अच्छा लड़का था । पहली बार में ही उन दोनों के दरमियान एक अच्छा दोस्ती का रिश्ता बन गया था । राहुल अक्सर अपनी भतीजी को स्कूल छोड़ने आया करता था, और इस दौरान सरला पीहू को स्कूल छोड़ने जाया करती थी । तब दोनों की नजरों का तकरार हो ही जाया करता था, पर महीनों तक दोनों में कोई बात तक नहीं हुई थी । एक दिन अचानक जब सरला स्कूल से पीहू को छोड़कर लौट रही थी, तब वह दुपट्टे से अपनी गर्दन पर उभरे अमित की अंगुलियों के निशान छुपाने की गैर मुकम्मल सी कोशिश करने लगी, तब राहुल ने उसकी इस घबराहट और बेबसी को भांप लिया, और फिर जैसे ही राहुल ने सरला से इस बारे में पूछना चाहा, तब सरला डर और सामाजिक संकोच के कारण सच को पूरी तरह घुमाने लगी । उस वक्त उसने अपनी गर्दन पर दुपट्टे को और अच्छे से लपेट लिया । जैसे वे निशान नहीं उसका कोई बड़ा गुनाह हों । वह बार – बार स्कूल के मुख्य द्वार की तरफ घबराकर देखती है कि कहीं अमित का कोई दोस्त या कोई पड़ोसी उन्हें इस तरह बात करते हुए न देख ले ।

उस वक्त राहुल ने उस पर कोई दबाव नहीं बनाया, वह नहीं चाहता था कि सरला उसके सामने खुद को असहाय महसूस करे । तब उस वक्त राहुल के कहे हुए शब्द उसके दिल में घर कर गए थे, उसे यकीन नहीं हुआ कि आखिर कोई कैसे इतना अच्छा और मीठा बोल सकता है । और नारी के लिए उसके ह्रदय में सम्मान देखकर, सरला के मन में तब उसके प्रति आकर्षण और भी बढ़ गया । लेकिन जैसे ही राहुल की कोमल बातें उसके दिल को छूतीं हैं, उसके मन में अपनी माँ का ख्याल कौंध उठता है । एक अजीब सा अपराधबोध उसे घेर लेता—"क्या मैं भी अपनी माँ के रास्ते पर चल पड़ी हूँ?", यह सोचकर वह डर के मारे राहुल से दो कदम की दूरी और बना लेती है ।

लेकिन अब रोजाना सुबह नजरों का तकरार होते ही उन दोनों के दरमियान बातें अपने आप शुरू होने लगती थी । बातें भले ही सहज थीं, लेकिन सरला की एक नजर हमेशा उसकी कलाई पर बंधी घड़ी पर टिकी रहती थी, और दूसरी स्कूल के गेट की तरफ ।

राहुल से बात करने का हर एक मिनट उसे सुकून तो देता था । लेकिन घर लौटने का डर उसे भीतर ही भीतर झकझोर देता, कि अगर उसे पाँच मिनट की भी देरी हुई, तो अमित घर पर बवाल खड़ा कर देगा ।

अक्सर दोनों जब भी स्कूल के बाहर मिलते, तो एक दूसरे का हाल जानने लगते थे । और इस बीच जब फिर से राहुल ने सरला की गर्दन और चेहरे पर पड़े अंगुलियों के निशान देखे तब वह सहम उठा । और सरला से पूछ बैठा, तब सरला पहले तो पिछली बार की तरह हिचकिचाई, लेकिन फिर चाह कर भी राहुल से कुछ छुपा न सकी ।

सरला अब आए दिन की बातें राहुल से सांझा करने लगी थी, जैसे उसे इस ग़म भरी जिंदगी में गम बांटने को एक साथी मिल गया था । धीरे-

धीरे दोनों की दरमियान नजदीकियां बढ़ने लगी थी, अब कभी- कभी चोरी से वह राहुल से शाम के समय बाहर पार्क में मिल लेती थी । पर उसके मन में अमित को लेकर डर हमेशा बना रहता कि कहीं अमित उसे ना देख ले । कभी - कभी वह राहुल के साथ सिनेमा भी देख आती, मगर उसकी आंखों में एक डर हमेशा छाया रहता ।

लेकिन हमेशा से दुखी और आंखों में आंसू लिए रहने वाली सरला पहले से अब थोड़ा खिली - खिली रहने लगी थी, अब उसके मन में खुदकुशी के नहीं फिर से जिंदगी जीने की उमंग उठने लगी थी ।

एक शाम जब वह अपने घर की छत पर टहल रही थी, तब उसने उसके घर के सामने वाले पेड़ पर दो परिंदों को आपस में प्रेम भाव से तल्लीन देखा (जो एक-दूसरे के करीब बैठे, चोंच से चोंच भिड़ाए, पंखों को सहलाते हुए अपनी ही दुनिया में तल्लीन थे) तब उसके मन में कुछ विचार कौंध उठे की, "आखिर क्यों न चाहे कोई प्रेम? **"प्रकृति का हर जीव जीवन में प्रेम चाहता है । और फिर उसे वह प्रेम कहीं से भी क्यों न मिले... इस बीच फिर दिल यह कहाँ सोच पाता है कि इसमें सही क्या है, और गलत क्या, बस तब मन उस पल को, उस कोमल अहसास को, पूर्णतः जी लेना चाहता है । जो उसे सामने वाले से मिल रहा होता है, क्योंकि प्रेम ऐसा ही होता है ।"** और उधर राहुल को भी इस रिश्ते से कोई आपत्ति नहीं थी जैसे वह भी मन ही मन सरला को स्वीकार चुका था, और बैठा सोचने लगता था कि आखिर कैसे सरला को इस नरक भरी जिंदगी से बाहर निकाले, क्योंकि उसकी नजरों में सरला भी बाकी सब औरतों की तरह अच्छा जीवन जीने का हक रखती है ।

इधर सरला के मन में इस नए रिश्ते को लेकर भय जन्म लेने लगा था । अगर कभी अमित को इस रिश्ते की भनक लग गई, तो तब क्या होगा,

अमित तो उसे मार ही डालेगा, और अगर उसे कुछ हो गया तो उसके बाद उसकी बेटी पीहू का क्या होगा । तब वह खुद से मन ही मन कहने लगती है, “नहीं – नहीं वह ऐसा कुछ भी नहीं करेगी जिससे पीहू के जीवन और भविष्य पर जरा सी भी आंच आए।”

कुछ दिन बाद शाम के समय जब वह राहुल से पार्क में मिलती है, तब उस वक्त सूरज ढलने को आया था । और अमित अपने ऑफिस के काम से बाहर गया हुआ था, उन दोनों ने पार्क के कोने में वही हमेशा वाली अपनी जगह पर जाकर बैठना पसंद किया । उस तरफ पेड़ अधिक घने होने से ज्यादा कोई नहीं आता था, और ढलते सूरज को वहां से साफ देख जा सकता था । उस वक्त वहां बैठी सरला राहुल को अपने अंतर्मन में जन्मे डर के बारे में बताने लगती है, और राहुल उसे शांत करते हुए, कहने लगता है कि वह भी पिछले कुछ दिनों से यही सोच रहा था । कि कैसे सरला को इस नरक भरी जिंदगी से बाहर निकाले ।

वह सरला का हाथ अपने हाथ में ले लेता है और सरला को कहने लगता है, की “क्यों ना सरला हम यहां से कहीं दूर भाग चलें, जहां ना तुझे अमित का खौफ हो न ही हमें समाज का ।” सरला जो पहले से ही डरी सहमी सी बैठी हुई थी, अचानक राहुल के इस प्रस्ताव को सुनकर चौंक उठी । उसके मन में पीहू का ख्याल उठता है और सहसा उसके मुंह से निकलता है, “और पीहू”, राहुल कहता है, “हां – हां सरला मैं पीहू को अपनी ही बेटी समझूंगा, भला उसे साथ लिए बिना मैं कैसे जा सकता हूं ।”, राहुल के मुंह से ये शब्द सुनकर तब से डरी सहमी बैठी सरला राहुल को गले लगा लेती है, उस वक्त सरला के चेहरे पर ढलते सूरज की रोशनी पड़ने से उसके चेहरा किसी कुंदन की भांति चमकता हुआ सा प्रतीत हो रहा था । वो कुंदन जो राहुल की आंखों में साफ – साफ देखा जा सकता था ।

अगले ही क्षण सरला की आंखों से आंसू छलक उठे, जो पीड़ा के नहीं, अथाह सुख के आंसू थे, एक नया जीवन शुरू करने की उम्मीद से भरे सुख के आंसू ।

लेकिन हम जाएंगे कब?, और कहां?, और ये सब होगा कैसे राहुल?, एक ही पल में सरला ने राहुल के सामने कई सवाल रख दिए ।

अरे यार शांत रह, मैंने सब सोचा हुआ है, बस कुछ ही दिन, फिर हम यहां से बहुत दूर चलेंगे । जहां पर तुम, मैं, पीहू और बस एक नई दुनिया । तुम चिंता ना करो सरला, मैं सब संभाल लूंगा, बस भरोसा रख मुझ पर ।

“हां राहुल मुझे भरोसा है तुम पर खुद से भी ज्यादा ।”

जब सरला घर पहुंची तब पीहू ट्यूशन से आ चुकी थी, और अपने खिलौनों के साथ खेल में लगी हुई थी । अमित के घर पर न होने से माहौल पूर्णतः शांत प्रतीत हो रहा था । पीहू भी खुशी से उछल - कूद करते हुए शरारतें कर रही थी, जिसे देख कर सरला को कुछ देर पहले राहुल की दिखाई हुई उस नई दुनिया का एहसास होने लगा, जहां पर उस नए संसार में पीहू भी खुश है और वह भी ।

रात के काले अंधेरे ने बाहर पड़े हुए सन्नाटे को पूर्णतः अपनी आगोश में ले लिया था, इस काली रात के सन्नाटे में दूर कहीं केवल कुत्तों के भौंकने की आवाजें कभी – कभी बिस्तर पर लेटी सरला के कानों को सुनाई पड़ जाती, उसकी आंखों में आज नींद नहीं थी, बल्कि कुछ सवाल थे, जो अंदर ही अंदर उसे खाए जा रहे थे, क्या कल को उसकी ही तरह लोग उसकी बेटी को भी भगोड़ी की बेटी कहकर पुकारेंगे, फिर खुद को जवाब देते हुए वह कहती है, “नहीं – नहीं ।”

बिस्तर पर लेटे हुए, उसको अपने बचपन की वे सब घटनाएं स्मरण होने लगती हैं । जब उसकी मां उसे और उसके भाई को छोड़कर किसी पराए मर्द के साथ घर से चली गई थी । उसके बाद उसने और उसके भाई ने लोगों के जो ताने सहे, उन्हें और बचपन की उन बीती घटनाओं को याद कर वह सहम उठी, उसके मन में फिर से एक सवाल कौंध उठा । क्या वह भी अपनी मां के नक्शे कदम पर चल पड़ी है?,

“नहीं – नहीं”, सरला तेरी मां ने जो किया वह धोखा था, प्रेम और हवस में अंतर होता है सरला । और हम हवस को कभी भी प्रेम का नाम नहीं दे सकते । पिता ने तो उन्हें कभी अमित की तरह नहीं सताया था, यहां तक कि कभी उनसे ऊंची आवाज में बात तक नहीं की थी, उनका उस दूसरे आदमी के साथ जाना, पूर्णतः उनका निजी चुनाव था । जिसे उन्होंने अपनी हवस की आग में आकर अपने बच्चों से ऊपर वरीयता दी थी ।” उसे उसकी मां के कहे वे शब्द आज भी याद थे, जब वे घर छोड़ का जा रही थी, तब पड़ोस की औरतों ने उनसे पूछा था । “क्यों री बच्चों के बग़ैर रह लेगी तू”, तब सामने से उसकी मां के शब्द थे, “मेरे पास बच्चे पैदा करने की मशीन लगी है, जब चाहे बच्चे पैदा कर लूंगी ।” उस वक्त सरला एक कोने में चुपचाप खड़ी सब देख और सुन रही थी, उस छोटी सी उम्र में तब उसे उस मशीन शब्द का मतलब तो नहीं समझ आया था, पर हां इतना जरूर समझ गई थी, कि उसकी मां को उनका मोह जरा भी नहीं था ।

पर फिर सरला खुद को उचित ठहराते हुए खुद से मन ही मन कहती है कि, उसके लिए ये चुनाव केवल इस नरक भरी जिंदगी से और अमित के अत्याचारों से मुक्ति पाने का है ।

पर सवाल अब फिर से एक नए रूप में उसके समक्ष खड़ा था, अगर कल को वह राहुल के साथ पीहू को लेकर इस नरक से भाग निकली तब लोग क्या कहेंगे?, वे सब तब अमित के अत्याचारों को तो भूल जाएंगे । बस अगर उन्हें तब कुछ दिखेगा तो सिर्फ सरला का किसी दूसरे के साथ भागना । और फिर तब सब के मुंह पर एक ही बात होगी, आखिर भगोड़ी की बेटी भी भगोड़ी ही निकली, क्यों न निकलती आखिर खून तो वही था ना । और फिर पीहू को भी सब भगोड़ी की बेटी कह कर ही पुकारेंगे, जैसे बचपन में आस पड़ोस के लोग उसकी और उसके भाई की उपेक्षा करते थे, भगोड़ी की बेटी कह – कह कर उसे चिढ़ाते थे, वैसे ही कल को पीहू को भी चिढ़ाएंगे । "और ऐसा वह कभी नहीं होने देगी", मन ही मन उसने फिर से दोहराया ।

इस काली रात के सन्नाटे में जैसे वह फिर से अपने बचपन में पहुंच गई थी, आज उसकी आंखों में अमित का दिया दर्द नहीं था, बल्कि उसकी मां का बरसों पुराना दिया दर्द फिर से जीवंत हो उठा था । और इसकी केवल एक ही वजह थी, आज वह भी उसी मोड़ पर खड़ी थी, उसके समक्ष भी वही प्रश्न था । लेकिन एक नए रूप में, **"जैसे इतिहास खुद को दोहराता है, पहली बार किसी त्रासदी के रूप में और दूसरी बार किसी घटना या प्रहसन के रूप में ।"**

उसे भली तरह याद था, जब उसे और उसके भाई को उसकी मां छोड़ कर गई थी । तब वह महज केवल आठ बरस की थी, उसे धीरे – धीरे वह सब याद आता है जो उसने उस वक्त अपने जीवन में मां के जाने के बाद से खोया । ये सब इतने बरसों से उसके हृदय में एक ऐसे दर्द की तरह भरा था, जो टीस – टीस कर किसी नल की तरह टपकता रहता था । लेकिन

आज मानो उस नल का बहाव तेज हो चुका था, उसे याद आया कि कैसे उसने और उसके भाई ने मां के चले जाने से अपना बचपन खोया ।

जब गली पड़ोस के बच्चे स्टेडियम और मैदान में खेलने जाते थे, तब वे दोनों भाई बहन घर के कामों में लगे रहते थे, जिसका नतीजा ये हुआ कि वे कोई खेल सीख ही नहीं पाए ।

दूसरा जो उन्होंने खोया वह था, मां का प्रेम और ममता । आखिर जिस उम्र में बच्चे समझना शुरू करते हैं, मां के प्रेम और ममता को, उस लाड को, उस उम्र में वे उन्हें छोड़ कर चली गई, जिस वजह से वे कभी मां के उस प्रेम को ममता को समझ ही नहीं सके । "इसलिए वह अब पीहू को जीवन की हर वह खुशी देना चाहती है, जिसका उसके स्वयं के जीवन में अभाव रहा ।"

जब वह आस पड़ोस की मांओं को अपने बच्चों पर ममता बिखरते देखती थी, तब उसे हमेशा अपनी मां की याद आई, इस वजह से उसने और उसके भाई ने आज तक कोई त्यौहार खुशी से मनाया ही नहीं । हर त्यौहार पर उन्हें हमेशा अपनी मां की कमी खली । सरला ने सोचा था कि शादी के बाद सब सही होगा, लेकिन उसे मिला फिर से वही दुख, उसके और उसके भाई के लिए तब से वे त्यौहार, त्यौहार नहीं बल्कि कुछ सामाजिक कार्यक्रम मात्र रहे, जिन्हें मनाना उनके लिए केवल एक खानापूर्ति करने जैसा हो गया था ।

इसी बीच सरला को वो रात भी याद आई जब वह सत्रह बरस की थी । और तब उसका पहली बार दिल टूटा था, तब पूरी रात रोती हुई वह भगवान से केवल एक ही प्रार्थना करती थी, की भगवान किसी को भी उसके जीवन में उसके प्रेम और माता - पिता से जुदा मत करना । फिर चाहे

उसे एक सादा जीवन ही दे, और इसी के साथ ये सवाल लबों पर दोहराती हुई वह सो जाया करती, "की आखिर मां क्यों गई तू हमें छोड़ कर ।

तब स्कूल में उसकी कक्षा के सब उससे बार – बार एक ही सवाल दोहराते थे । सरला जो नदी के उस पार रहती है, वो तुम्हारी मां है ना?, वो तुम्हारे साथ क्यों नहीं रहती, तब पीछे से कुछ लड़के बोल उठते अरे वो किसी और के साथ रहती है । उस वक्त सरला केवल इतना कहती कि वह नहीं जानती उस औरत को, तब उसकी सहेली पूजा सब को डांटते हुए वहां से भगा देती । तब भागते हुए बच्चों में से कोई जोर से चिल्ला पड़ता, भगोड़ी की बेटी, और ये सुनते ही उसके आंसू टपक पड़ते, जिसे अक्सर पूजा अपने हाथों से पोंछते हुए उसे चुप करवाया करती।

उसे गली के उन आदमियों की बातें भी याद आने लगती । जो अक्सर उसे गली से गुजरते हुए, बड़ी – बड़ी आंखें निकालते हुए कहा करते, "कि हमारे घर हमारी बेटियों से खेलने मत आ जाना, अगर दिख गई तो बड़ी मार मारूंगा", तब सरला अपने कमरे में बिस्तर पर लेटकर रोने लगती, आज भी सरला की आंखों में आंसू वहीं थे, बस उसका कद जरा बढ़ गया था ।

घोर सन्नाटे की चादर ओढ़े इस रात में उसकी आंखों में नींद जरा सी भी नहीं थी, घड़ी दो बजने की और इशारा कर रही थी ।

उसके पास में ही पीहू सोई पड़ी थी, करवट बदलकर जब उसने पीहू को देखा, उसके करवट लेने से बिस्तर ने भी जैसे इस सन्नाटे में सरसराहट की सी आवाज दी । बाहर भले ही सन्नाटा पसरा था, लेकिन सरला के भीतर गहरी हलचल थी, वह लेटी एकटक सोई हुई पीहू की और देख रही थी, की अचानक से उसके मन में कुछ उठा, और उसकी आँखें भर आई । और फिर वह सोचने लगी, कितनी बदनसीब है वह, उसे तो मां के जाने के बाद

से उसके पिता का प्रेम भी सही से न मिल सका था, क्योंकि वे उसकी मां के जाने के बाद से अपने में मशरूफ रहने लगे थे, और फिर दिन पर दिन उनका गुस्सा और चिड़चिड़ापन बढ़ता चला गया था, हर छोटी बात पर वे सरला और उसके भाई पर गुस्सा करने लगते थे । और अब उसकी बेटी पीहू की जिंदगी भी उसे कुछ ऐसी ही दिखाई पड़ती थी । जिसमें पिता के प्रेम का कहीं कोई नामों निशां नहीं था । ये सोचते – सोचते उसकी आंखों से आंसू छलक कर जब उसके होंठों तक पहुंचे, तब उसे उन आंसुओं के नमकीन स्पर्श से एहसास हुआ कि वह रो रही है, हाथों की अंगुलियों से आंखों के आंसुओं को पोंछते हुए उसने खुद को चुप करवाया ।

जैसे शरीर के हर अंग का एक दूसरे के साथ कितना सुंदर तालमेल था, “जब मन अथाह पीड़ा में होता है तब आँखें उस पीड़ा को बाहर निकाल कर मन को शांत करने की कोशिश करती हों । और लब उन गिरते आंसुओं का एहसास दिमाग को कराते हों । और दिमाग हाथों की अंगुलियों को संकेत देता हो, की आंखों से झरती इन पानी की बूंदों को शांत करे, अपने कोमल स्पर्श से । जबकि आंखें नहीं रोती, रोता तो सिर्फ मन है जिसमें वो पीड़ा भरी है । आंखें तो केवल अपने अश्रुओं से उस पीड़ा को कम करने का प्रयत्न करती हैं ।”

उसे उसकी आंखों के सामने आज भी वे घटनाएं किसी चलचित्र की तरह चलती हुई प्रतीत होती है जिन्हें बचपन से वह भुलाने की कोशिश करती आ रही थी । घर के कमरे का वो बंद दरवाजा जो उस व्यक्ति के घर आने पर घंटों बंद रहता था, कैसे रात में कड़वे दूध को उन्हें जबरदस्ती पिलाया जाता था, आज भी उसके समक्ष वह प्रश्न ज्यों का त्यों खड़ा था, आखिर तब उसकी मां को क्या दिखा था उस व्यक्ति में, जो उसके पिता से कहीं

से भी बराबर का नहीं था । दुनिया भर के ऐब उसमें भरे पड़े थे, ऐसा कोई नशा नहीं था, जो वह तब न करता हो । और अंततः उसी नशे ने उस व्यक्ति की जान भी ली, क्या उसके पिता का अपनी अर्द्धांगिनी पर भरोसा करना कोई गुनाह था । उसे याद आया कैसे उसके पिता ने एक बार उसके छोटे भाई को डांट लगाते हुए तमाचा जड़ दिया था । जब उसने सरला को गुस्से में मां की गाली बक दी थी । उस वक्त उनके पिता ने उन दोनों भाई बहनों को समझाते हुए कहा था, कि वह जैसी भी थी तुम दोनों की मां है, उसने तुम्हें जन्म दिया है, और वह मेरी ब्याहता भी थी । जिसे मैं इस घर में ब्याह कर लाया था, तो बच्चों उसका सम्मान करो ।

और फिर अगले ही पल उसके लबों से धीमी आवाज में शब्द निकल पड़े "प्रेम और हवस" दोनों के बीच एक बड़ा गहरा अंतर है ।

फिर वह खुद से कहती है, हां मैं इतना समझती हूं, हर इंसान जीवन में स्वतंत्र है । हर इंसान जीवन में प्रेम व खुशियां चाहता है । पर इस सब के बावजूद हमें इतना जरूर ध्यान रखना चाहिए कि हमारे उस एक कदम से बाकी जिंदगियों पर क्या असर होगा । उन मासूम जिंदगियों के जीवन पर क्या असर होगा, तब उस वक्त उसकी मां के चले जाने से तीन – तीन जिंदगियों पर असर पड़ा था, पापा, भाई और वह ।

घर तो बिखर ही गया था, बस तब वे सब किसी तरह से जिए जा रहे थे ।

भोर हो चुकी थी, बाहर छत की मंडेर पर चिड़ियों के चहकने की आवाजें साफ सुनाई दे रही थी । और इधर सरला भर रात अपने आंतरिक विचारों की दुनिया में लड़ने के बाद सोई पड़ी थी, की अचानक से उसे आवाज सुनाई पड़ी । मम्मी, मम्मी उठो सुबह हो गई, मुझे स्कूल भी जाना है, जब उसकी आंख खुली तब उसके सर में भर रात न सोने की वजह से भारी

दर्द था । जैसे ही दोनों हाथों से उसने अपना सर पकड़ा, पीहू देखते ही समझ गई कि उसकी मां के सर में दर्द है । वह नन्हे कदमों से दौड़ी – दौड़ी रसोई घर से पानी का गिलास ले लाई और पास पड़ी हुई सर दर्द की दवाई उठा कर अपनी मां को देने लगी ।

“मम्मी ये दवाई खा लो, दर्द अभी सही हो जाएगा, और तब तक में आपके लिए चाय बनाकर लाती हूं”, सरला ने पीहू के सर को सहलाते हुए उसे सीने से लगा लिया ।

दोपहर को जब वह सोई हुई थी, तब अमित घर पर आते ही उसके ऊपर भड़क उठा । “ये देखो आदमी साला बाहर अपने जूते घिसाकर कमा रहा है, और इधर ये साली महारानी की तरह सोई पड़ी है । चल पानी का गिलास लेकर कमरे में आजा, और फिर वह उस पर किसी वहशी दरिंदे की तरह टूट पड़ा, सरला ने कहा भी की उसे माहवारी आई है ।

“तो मैं क्या करूं साली तुझसे शादी किस लिए की है, तेरा काम है पति की जरूरत हर तरह से पूरी करना । और मुझे मना करने का अंजाम तू अच्छी तरह से जानती है, क्यों मुझे तू खुद पर हाथ उठाने के लिए मजबूर करती है, चल आ बिस्तर पर ।”

बिस्तर पर अमित की वहशी भूख शांत हो चुकी थी । वह करवट लेकर लेट गया और बिना सरला की तरफ देखे रूखे स्वर में गुर्राया, "चल, बहुत नाटक हो गया अब उठ और जल्दी से मेरे लिए गरम खाना बना कर ला ।"

इस दरिंदगी से सरला का पूरा शरीर भीतर तक टूट चुका था । माहवारी का असहनीय दर्द अब पेट के निचले हिस्से में एक भयानक मरोड़ की तरह उठ रहा था । उसने चादर को अपने काँपते हाथों से शरीर पर लपेटने

की कोशिश की, लेकिन दर्द की एक तेज़ टीस उठते ही उसने अपने दोनों हाथों से पेट को ज़ोर से दबा लिया ।

आँखें आँसुओं से धुंधली थीं, लेकिन वह जानती थी कि अगर उसने उठने में ज़रा सी भी देरी की, तो अमित फिर से कोई बखेड़ा खड़ा कर देगा । वह दीवार का सहारा लेकर धीरे से बिस्तर से उतरी । पैर ज़मीन पर रखते ही उसके शरीर से एक ठंडी कराह निकल पड़ी, पेट को दोनों हाथों से पकड़े, दर्द से दोहरी होती हुई, वह धीमी और लड़खड़ाती सांसों के साथ किसी तरह रसोईघर की तरफ बढ़ने लगी ।

अगली शाम डरी सहमी सी वह राहुल से पार्क में मिली, उनकी वही पुरानी जगह घने पेड़ों के बीच में ढलते सूरज के सामने । लेकिन आज सरला के चेहरे पर वो खुशी नहीं थी । कल दोपहर का वाक़या उसके अंदर तक कौंध गया था, उसके चेहरे पर डर और आत्मविश्वास का एक अद्भुत मिश्रण था । उसके चेहरे पर पड़ रही सूरज की किरणों में आज वह राहुल की आँखों में किसी कुंदन की तरह नहीं चमक रही थी, बल्कि एक जलती हुई ज्वाला प्रतीत हो रही थी, अग्नि की वो ज्वाला जो जीवन दे भी सकती है, और जरूरत पड़ने पर भस्म भी कर सकती है । और उस वक्त राहुल शांत बैठा केवल सरला को सुन रहा था, कहो सरला क्या कहना चाहती हो –“राहुल ने सरला की तरफ देखते हुए उससे पूछ ।”

सरला ने पहले उसे उस पर कल दोपहर में बीती आपबीती सुनाई । जिसे सुनते ही राहुल सहम उठा, उसके शरीर के रोएं – रोएं उठ खड़े हुए, जिन्हें सरला साफ देख पा रही थी । लेकिन अगले ही पल उसने राहुल के हाथों पर हाथ रखते हुए उसे शांत करते हुए कहा, राहुल तुम्हें कुछ करने की जरूरत नहीं है, मैंने अब फ़ैसला कर लिया है ।

“अच्छा, क्या फ़ैसला सरला, मतलब तुम राजी हो मेरे साथ यहां से दूर चलने के लिए?”

सरला मौन थी ।

कहो सरला क्या फ़ैसला किया तुमने – “राहुल ने उसे फिर से दोहराते हुए पूछा।”

नहीं राहुल मैं तुम्हारे साथ कहीं नहीं जाऊंगी, बल्कि मैं अब अपनी लड़ाई स्वयं लड़ूंगी अपने लिए, अपनी बेटी पीहू के लिए ।

पर सरला ।

“नहीं राहुल मुझे पहले मेरी बात खत्म करने दो, राहुल मैं नहीं चाहती मेरे इस एक कदम से मेरी बच्ची पीहू पर कोई कलंक लगे । उसे भी लोग मेरी तरह भगोड़ी की बेटी कहें, मैं नहीं चाहती बचपन में जो दंश मैंने सहे वही दंश और ताने मेरी बच्ची सहे । नहीं राहुल कदापि नहीं, मैं लोगों की इस कहावत को कभी सही नहीं होने दूंगी, की “आखिर एक भगोड़ी की बेटी भगोड़ी ही निकली ।”

राहुल मैंने अपने जीवन में बहुत सहा है, पर पीहू ये सब कभी नहीं सहेगी मैं स्वयं उसे एक मां और एक पिता दोनों का प्रेम दूंगी । उसे वे सब खुशियां दूंगी, जिनका मेरे बचपन में अभाव रहा ।

सरला की जुबां से ये शब्द सुन रहे राहुल के चेहरे पर खुशी के साथ एक अलग ही तेज था । मानो आज उसकी भी तपस्या सफल हो गई थी, जिस साहस को वह इतने समय से सरला के भीतर जगाने का प्रयत्न कर रहा था, आखिर वह साहस उसकी स्वयं की ममता से प्रस्फुटित हो उठा था ।

सरला पर तुम अब करोगी क्या, और जाओगी कहां?

राहुल सबसे पहले तो अब मैं उस नरक को छोड़ना चाहूंगी, अब मेरा वहां दम घुटने लगा है । और फिर उसके बाद मैं कहीं काम खोज लूंगी, जिससे मैं और सरला आगे का जीवन खुशी से जी सके ।

सरला मेरी कोई मदद चाहिए तो जरूर बताना – "राहुल ने सरला के हाथ को अपने हाथों में थामकर उससे कहा" ।

नहीं राहुल मैं समाज के लोगों को कहने और बनाने के लिए बातें नहीं देना चाहती, तुमने मेरे लिए जो कुछ किया वह एक सच्चे दोस्त के नाते बहुत अधिक था, मैं सदैव से तुम्हारी ऋणी रहूंगी राहुल ।

अरे नहीं सरला, ये शब्द कहकर तुम मुझे शर्मिंदा ना करो, एक तरफ सच्चा दोस्त कहती है, और दूसरी तरफ ये ऋण भरी बातें ।

अच्छा ठीक है राहुल, "माफी चाहूंगी ये कहने के लिए, मगर बड़े ही साहस और दर्द के साथ कहना पड़ रहा है हमारा ये सफर यहीं तक था ।"

ये कहती हुई सरला वहां से उठ कर चल पड़ी, राहुल वहीं पर बैठा था, पर उसके चेहरे पर कोई गम नहीं था, बल्कि एक मंद सी मुस्कान थी । सरला ने जाते वक्त फिर पीछे मुड़कर नहीं देखा, शायद अपने आंसुओं को छुपा रही थी, "निजी स्वार्थ और ममता के बीच आज उसने ममता को चुना था ।"

अगली सुबह जब सरला उठी, उसमें तब एक अदम्य साहस था, बाहर जोरों से तेज हवाएं चल रही थी । मानो जो किसी बड़े तूफान के आने का संकेत दे रही हों, पीहू उसके बगल में ही सोई पड़ी हुई थी, और अमित सुबह से ही बाहर बरामदे में शराब पीने के लिए बैठा हुआ था । इतवार की हर सुबह उसका यही नियम था, सरला ने उसकी तरफ देखा और फिर देखा कर उसे अनदेखा कर दिया ।

रसोई में जाकर उसने अपने और पीहू के लिए नाश्ता बनाया । अमित के लिए नाश्ता बनाने का उसका कोई इरादा तो नहीं था, लेकिन फिर भी एक आखिरी दफा उसने उसके लिए भी नाश्ता बनाया । थोड़ी देर में वह तैयार होकर पीहू को जगा आई, दोनों मां बेटी ने नाश्ता साथ में ही किया, और फिर सरला ने अपना सूटकेस अलमारी से निकाला, जिसे उसने कल रात में ही पैक कर लिया था । उसमें सरला और पीहू के कुछ कपड़े और सरला की शादी के वक्त के कुछ गहने थे, जो उसके पिता ने उसे दिए थे ।

सरला जब अमित के सामने सूटकेस लेकर जाने को उठ खड़ी हुई । तब उसके मन में एक बार के लिए वही पुराना डर कौंध उठा, लेकिन अब वह और नहीं सह सकती थी । अगले ही पल वह एक हाथ में पीहू का हाथ पकड़े और दूसरे हाथ में सूटकेस लिए अमित के सामने दृढ़ता से जा खड़ी हुई ।

"क्यों री हरामजादी बैग उठाए कहां चली, कोई नया यार खोज लिया है क्या, अपनी मां की तरह तूने भी?"

"अमित बस अब बहुत हुआ, अब और नहीं, मैं यहां इस नरक में तुम्हारे साथ और नहीं रह सकती, मैं यहां से हमेशा के लिए अपनी बच्ची को लेकर जा रही हूं ।"

"अच्छा – तो अब चिड़िया के भी पर निकल आए हैं, हां मैं भी देखता हूं तू यहां से कैसे जाती है, भूल गई, साली वो हाल करूंगा तेरी रूह भी कांप उठेगी ।"

पीहू जो अपनी मां का हाथ थामे खड़ी थी, नजर उठाए, सरला की और देखने लगी । लेकिन सरला अब खौफ खाने वाली नहीं थी, वह किसी घायल शेरनी की तरह अमित पर चिल्लाई ।

“तू अब हाथ लगा कर देख ।”

बाहर अब बिजली कड़कने लगी थी, हवाओं ने आंधी का रूप धारण कर लिया था, वैसे ही जैसे सरला के भीतर की लो ने ज्वाला का रूप धारण कर लिया था।

जैसे ही अमित उस पर हाथ उठाने को झपटा, उससे पहले ही सरला ने उसके चेहरे पर जोर का एक तमाचा जड़ दिया, तमाचे की गूंज इतनी तेज थी कि बाहर की आंधी उसके समक्ष फीकी पड़ गई । और शराब के नशे में चूर अमित सीधे औंधे मुंह सोफे पर गिर पड़ा ।

उसमें इतनी भी हिम्मत नहीं थी कि फिर से दोबारा उठ कर खड़ा हो सके, पास में खड़ी पीहू ये सब देख कर खुशी से तालियां बजाने लगी । तब सरला को एहसास हुआ, काश वह ये कदम पहले उठा चुकी होती, लेकिन अभी भी कोई ज्यादा देर नहीं हुई थी ।

जब सरला ने पीहू को साथ लेकर उस नरक की दहलीज से बाहर कदम रखा, तब बाहर का तूफान एकदम शांत हो चुका था । मौसम पूर्णतः साफ था, जिसमें हल्का सा तेज था, और ठंडी पुरवाई पवने बह रही थी ।

सड़क पार करते ही उसने रिक्शा को रोका और उसे सीधे नजदीकी पुलिस चौंकी चलने को कहा ।

कुछ देर बाद वह पीहू की नन्ही उंगली पकड़ कर पुलिस चौंकी के अंदर दाखिल हुई, सामने टेबल पर बैठी महिला पुलिस अधिकारी सरला के

चेहरे की सूजन, उसकी गर्दन पर बने उँगलियों के उन नीले निशानों और उसकी आँखों के दृढ़ संकल्प को देखती है ।

सरला गहरी और थकी हुई सांस खींचते हुए, अपने दुपट्टे को ठीक करती है । और बिना डरे सीधे शब्दों में अपना बयान महिला अधिकारी के समक्ष देने लगती है ।

"नमस्ते मैडम, मेरा नाम सरला है, मैं यहां अपने पति अमित के खिलाफ घरेलू हिंसा की शिकायत दर्ज कराने आई हूँ ।"

"वह पिछले दस बरस से शराब पीकर मेरे साथ बर्बरता और क्रूरता कर रहा है । दो दिन पहले उसने मेरे साथ शारीरिक और यौन प्रताड़ना की सारी हदें पार कर दीं ।

अब मुझे और मेरी नौ बरस की बेटी पीहू को अमित से अपनी जान का खतरा है, और इसलिए आज मैंने हमेशा के लिए उस घर की दहलीज़ छोड़ दी है ।"

"मैं यहाँ अपनी 'घरेलू घटना की रिपोर्ट' दर्ज कराने आई हूँ । मुझे अमित के खिलाफ कानूनी तौर पर 'संरक्षण आदेश' चाहिए, ताकि वह मेरे नए ठिकाने या मेरे काम की जगह पर आकर हमें डरा-धमका न सके । कृपया अमित पर धारा 498A के तहत क्रूरता का आपराधिक मामला दर्ज करें । आज के बाद यदि मुझे या मेरी बेटी पीहू को कोई भी नुकसान पहुँचता है, तो उसका ज़िम्मेदार सिर्फ मेरा पति अमित होगा ।"

महिला अधिकारी सरला की आँखों में मातृत्व का ऐसा साहस और हिम्मत देखकर दंग रह जाती है । वह तुरंत रजिस्टर को आगे बढ़ाते हुए कहती है, "तुम बिल्कुल मत डरो सरला, हम तुम्हारी रिपोर्ट लिख रहे हैं । इस रिपोर्ट की एक प्रति तुम्हें बिना किसी शुल्क के तुरंत दी जाएगी, तुम्हारे इस

अदम्य साहस को मेरा सलाम है सरला । उस वक्त महिला पुलिस अधीक्षक से ये शब्द सुनकर सरला और अधिक साहस से भर उठी ।

उस शिकायत और संरक्षण आदेश की एक प्रति लेकर वह सीधे अपनी बचपन की सहेली पूजा को फोन लगाते हुए अपने आने की सूचना देती है ।

जब वह उसके घर पर पहुंची तब सूरज सर पर चढ़ आया था, ठंडी पुरवाई पवने भी अब मंद पड़ गई थी । पूजा के दरवाजे पर पहुंच कर जैसे ही उसने दरवाजे पर लगी घंटी बजाई, पूजा ने तुरंत ही दरवाजा खोल दिया, जैसे उसकी राह में कब से दरवाजे पर ही खड़ी थी । सरला को देखते ही उसने उसे गले लगा लिया, और पीहू को अपनी गोद में उठा कर घर के अंदर ले गई ।

पूजा के घर पर आई सरला पिछले आधे घंटे से मौन बैठी थी, हालांकि पूजा से कभी उसका कोई दर्द छुपा नहीं था । इसलिए पूजा ने भी उसको उस समय कुछ पूछना गैर जरूरी समझ और पीहू को लेकर अपने साथ चली गई, उसने पीहू को खाने की लिए चॉकलेट दी और पास की दुकान से लाकर कुछ खिलौने । यूं तो पूजा की शादी को भी पांच बरस बीत चुके थे, लेकिन अभी तक उसे कोई संतान न जन्मी थी, जब पीहू खिलौनों के साथ खेल में लग गई, तब वह सरला के पास आकर बैठ गई ।

तब से गुमसुम सी बैठी सरला पूजा की बांहों को पाकर, उनमें बचपन की उस स्कूल वाली सरला की तरह फूट – फुटकर कर रोने लग पड़ी । और पूजा भी वैसे ही बचपन की उस स्कूल वाली पूजा की तरह, उसकी आंखों से आंसुओं को पोंछते हुए उसे चुप करवाने लगी । और फिर सरला ने उसके समक्ष पूरी घटना रख दी, पूजा ने उसके इस कदम का सम्मान

किया, और उसे कहने लगी जब तक तू और पीहू चाहे यहां रह सकती हो, इसे अपना ही घर समझो सरला ।

नहीं पूजा मैं ज्यादा दिन तेरे और तेरी वैवाहिक जिंदगी में बोझ नहीं बनना चाहती । तू बस मेरे लिए कोई काम खोजने में मदद कर दे, फिर में पीहू के साथ किसी किराए के मकान में शिफ्ट हो जाऊंगी ।

“सरला क्यों मुझे शर्मिंदा कर रही है मेरी दोस्त” – पूजा ने उससे हक जमाते हुए स्वर में कहा ।

“नहीं – नहीं पूजा, जिद ना कर, और इसमें शर्मिंदा करने वाली भला कौन सी बात हुई ।”

“अच्छा ठीक है, मैं अभी मेरी कंपनी के मालिक से बात कर लेती हूं वहां सुपरवाइजर की एक पोस्ट खाली पड़ी है, वो शायद तुझे मिल जाए तू मेरे साथ सुबह तैयार होकर जल्दी चल पड़ना, पीहू को हम पास में लछमी काकी के पास छोड़ देंगे ।”

अगले ही दिन पूजा उसे उस सिलाई कंपनी में ले गई जहाँ वह खुद काम करती थी ।

सरला की मेहनत और संजीदगी को देखकर कंपनी के मालिक ने उसे सीधे सिलाई विभाग में सुपरविज़न (निरीक्षण) का काम सौंप दिया । और उसे पूजा के भरोसे पर दस हजार एडवांस के तौर पर भी दे दिए, पूजा अब खुश थी, शुरुआत में सिलाई मशीनों का शोर तो उसके कानों में चुभता था, लेकिन यह शोर अमित के चिल्लाने से कहीं अधिक सुकून देने वाला था । काम करते – करते जब उसकी कमर दर्द करने लगी, तब उसे एहसास हुआ कि ये दर्द अमित की हवस के दिए उस दर्द के सामने कितना मीठा था, जिसमें उसकी मेहनत थी।

दो दिन बाद ही सरला को पूजा की गली के पीछे वाली गली में एक मकान किराए पर मिल गया, मकान छोटा था, दीवारें थोड़ी सीलन भरी थीं और फर्श पर धूल जमी थी, लेकिन सरला के लिए यह किसी महल से कम नहीं था ।

पहली रात जब सरला ने उस कमरे की चौखट पर कदम रखा, तब उसने एक गहरी सांस ली ।

इस हवा में अमित की शराब या गुस्से की घुटन नहीं थी, उसने जैसे ही कमरे की खिड़की खोली, बाहर से ठंडी हवा का एक झोंका अंदर आ गया । सरला ने फर्श पर एक साफ चादर बिछाई और पीहू को सुला दिया । उस शांत कमरे में पंखे की धीमी आवाज़ के बीच, पीहू को बिना किसी खौफ के चैन से सोता देख सरला के दिल को बरसों बाद ऐसा सुकून मिला जो उसने कभी महसूस नहीं किया था।

अगली शाम को काम से लौटने के बाद, सरला ने अपने छोटे से चूल्हे पर चाय की केतली चढ़ाई, और फिर पूजा के साथ मिलकर उसने खिड़की के पास बैठकर चाय का पहला घूंट भरा, बिना किसी हड़बड़ी, बिना किसी खौफ के चाय का वह एक घूंट पीना ही उसकी जिंदगी की सबसे बड़ी आज़ादी बन चुका था

बाहर पेड़ पर उसी तरह दो परिंदे चहक रहे थे । लेकिन राहुल अब उसके साथ नहीं था, राहुल ने तो उसे अपनी नजरों में उठना सिखाया था, अगले पल सरला मुस्कुराई और उसने पीहू को सीने से लगा लिया, जो अब आज़ाद आसमान की तरह हंस रही थी ।

परत दर परत
Layer by layer

मुझे आज भी वह खामोश सी शाम याद है, जब मैंने उसे पहली बार देखा था । कंधे पर और बाइक के पीछे कुछ बैग उठाए, जब वह मेरे कमरे के सामने वाले मकान में बरसों से ऊपर खाली पड़े कमरे में रहने के लिए आया था । उस वक्त उस खामोश शाम की तरह उसके चेहरे पर भी एक अलग ही खामोशी सी छाई हुई थी ।

उसके बाद मैं कई दिनों तक उसे रोज शाम को जाते और आधी रात को वापिस थके हारे आते हुए देखता रहा । मगर हमारे दरमियान कोई बात न हुई । अक्सर शाम को जब वह लाल कमीज पहनकर, और “जोटो” डिलीवरी का बैग मोटर साइकिल के पीछे लगाए सामने वाले मकान से निकलता था । तब मैं अपने कमरे की बाल्कनी में ही खड़ा होता था । और जब रात के दो बजे थका हारा वह वापिस आता था, तब मैं अपनी पढ़ाई खत्म करके सोने की तैयारी कर रहा होता था । उसके काम की शिफ्ट खत्म हो रही होती थी और मेरी पढ़ाई की, एक अजीब संयोग था, ये हम दोनों के बीच ।

उस दिन रक्षाबंधन के कारण मेरी कोचिंग की छुट्टी थी, जब मेरी उससे पहली दफा बात हुई । तब मैं अपने कमरे की बाल्कनी में खड़ा बाहर गली

में नन्हे बच्चों की चहल पहल और उन्हें खेलते देख रहा था जब उसने मुझे पुकारा 'भाईजान, भाईजान'....., इतने दिनों से यह हमारी पहली दफा एक दूसरे के साथ बात थी।

हां बोलो भाई "मैंने कहा ।"

क्या आप मेरा मोबाइल फोन कुछ देर के लिए अपने यहां चार्जिंग पर लगा देंगे, मेरे यहां रात से ही लाइट खराब है, और मुझे कुछ देर बाद डिलीवरी के लिए जाना है "उसने कहा" ।

हां क्यों नहीं, "मैंने कहा ।"

अगले ही पल वह मुझे आकर अपना मोबाइल फोन और चार्जर देकर चला गया । जब कुछ समय बाद उसका मोबाइल फोन पूरा चार्ज हो जाने के बाद स्वतः ही चालू हुआ । तब मेरी नजर उसके फोन की स्क्रीन पर जा पड़ी । जिसे देखकर पहले तो मैं चौंक उठा, और फिर अगले ही पल मेरे चेहरे पर मुस्कुराहट दौड़ आई, और मन से आवाज आई, अच्छा तो ये भी अपनी ही रेस का घोड़ा है ।

"उसके मोबाइल फोन के वॉलपेपर पर मसूरी लबासना के **"शिलम परम भूषणम"** के साथ नीचे की तरफ **"सत्यमेव जयते"** की तस्वीर लगी हुई थी ।"

कुछ देर बाद जब वह अपना फोन लेने आया, तब मैंने उसे अन्दर आकर बैठने को कहा, कमरे में जैसे ही वह अन्दर आया, तो दीवारों पर लगे विश्व और भारत के नक्शे ओर चारों तरफ पड़ी किताबों को देखकर 'हकबका' सा गया ।

मैंने उससे पूछा क्या हुआ?

नहीं कुछ नहीं भाईजान, “उसने उत्तर दिया ।"

जैसे ही अगले पल मैं उससे पूछने लगा कि क्या तुम भी यू.पी.एस.सी के लिए तैयारी कर रहे हो?” इतना मेरे मुंह से निकला ही था कि वह भी बोल पड़ा, भाईजान क्या आप भी यू.पी.एस.सी ।

और फिर तब हम दोनों चुप हो एक दूसरे की तरफ देखकर मुस्कुराने लगे ।

कुछ देर बाद रुकते हुए मैंने उत्तर दिया, हां मैं यू.पी.एस.सी के लिए तैयारी कर रहा हूं और अगर मेरा अंदाजा गलत नहीं है, तो तुम भी शायद यू.पी.एस.सी के लिए पढ़ते हो ।

हां भाईजान पर आपको कैसे पता चला, “उसने जवाब देते हुए सवाल किया ।”

मैं मुस्कुराते हुए बोल पड़ा, “क्योंकि मैंने तुम्हारे मोबाइल की स्क्रीन पर लगे वॉलपेपर को देखकर अंदाजा लगा लिया था ।”

अच्छा भाईजान, “उसने उत्तर दिया”

हां, “अच्छा तुम्हारा नाम क्या है?”, “मैंने सवाल करते हुए उससे पूछा ।”

‘मनोज’ भाईजान, और आपका?, “उसने जवाब देते हुए सवाल किया ।”

‘अमन’, “अच्छा मनोज अपने बारे में कुछ बताओ भाई”, “मैंने उससे पूछा”

मनोज - “भाईजान माफी चाहूंगा, लेकिन अभी मुझे निकलना है । क्योंकि डिलीवरी का समय होने वाला है, और अगर लेट हो गया तो कहीं आज का इंसेंटिव न कट जाए, या ऑर्डर टारगेट पूरा करने में दिक्कत न हो, मैं आपसे फिर किसी दिन मिलूंगा भाईजान ।

उस दिन रक्षाबंधन को वह सुबह दस बजे बाइक पर जोटो डिलीवरी बैग बांध कर निकल गया, उसके जाने के बाद मेरे कमरे में मुझे एक अलग ही सन्नाटा सा पसरा हुआ प्रतीत हुआ । जैसे मेरी किताबें भी मुझसे आज अनकहे से सवाल कर रही हों, टेबल पर पढ़ने के लिए बैठा तो ध्यान नहीं लगा पाया । रक्षाबंधन पर तो घर आज मैं भी नहीं गया था, पर मैं अपनी खुशी से पढ़ने के लिए यहां रुका था । और वह शायद अपनी मजबूरी की वजह से नहीं जा सका ।

रात में दस बजे जब वह लौटा, तब उसकी बाइक के इंजन बंद होने की आवाज मेरे कानों में भी पड़ी । मैं तब जगा हुआ था, पर दिन भर की थकान होने की वजह से मुझे नींद आने लगी थी । और मैं सोने की तैयारी करने लगा था । पर जब आधी रात को मेरी आंख खुली उसके कमरे की बत्ती तब भी जली हुई थी, और वह हाथ में किताब पकड़े हुए अपने कमरे की बाल्कनी में टहल रहा था । जैसे दिन में वह अपनी किस्मत से लड़ा हो और रात में नींद से, उसके बाद करीबन घंटे भर तक मुझे नींद नहीं आई पता नहीं दिमाग में क्या चल रहा था ।

उसके बाद वह मुझसे इतवार को मिला, "भाईजान कहते हुए उसने मुझे पुकारा", और कहने लगा अगर किताबों से फुर्सत पा लिए हो तो आ जाओ इधर कुछ देर मेरी तरफ ।

हां क्यों नहीं बस अभी आया, "मैंने जवाब दिया ।"

जब मैं उसके कमरे पर पहुंचा, वह चाय बनाकर दो पायलों में लिए पहले ही बैठा हुआ था । उसने मुझे बैठने का इशारा करते हुए चाय का प्याला मेरी तरफ बढ़ा दिया, "लीजिए भाईजान चाय पीजिए ।"

अगले पल जब मैंने उसके कमरे में इधर उधर नजर दौड़ाई, तब मुझे ज्यादा कुछ तो नहीं दिखा, पर दीवारों पर नक्शे जरूर चिपके हुए थे । कोने में एक छोटा सा मंदिर, ओर एक तरफ किताबों का लगा ढेर, व उसके बिस्तर के पास रखी 'गिटार'।

जब मेरी नजर गिटार पर पड़ी, तब मैं उससे पूछ बैठा, "मनोज तुम गिटार भी बजाते हो?"

हां भाईजान कभी – कभी जब मन नहीं लगता, ऐसे ही शौंक से सीखने के लिए रखी है, "उसने उत्तर दिया ।"

फिर मैं उससे पूछने लगा, "अच्छा तुम कहीं से कोचिंग भी कर रहे हो या फिर खुद से पढ़ते हो भाई?"

मनोज - "नहीं भाईजान ऑनलाइन कोचिंग दिन में पांच घंटे, दो अलग – अलग विषय की क्लास रहती है ।"

अच्छा, "मैंने कहा ।"

मनोज – "अच्छा भाईजान, आप तो ऑफलाइन कोचिंग कर रहे होंगे ना?"

हां मनोज ऑफलाइन, यहीं सेक्टर 38 में 'टी. डी .के आईएस' से, पर तुम यहां नयागांव में कैसे?, मेरा मतलब ऑनलाइन कोचिंग तो तुम घर से भी कर सकते हो ना?, "मैंने जवाब देते हुए सवाल किया ?"

मनोज – "हां भाईजान कर तो घर से भी सकता था, पर घर पर माहौल नहीं मिल पाता । और फिर मैं घर का बड़ा लड़का हूं ना, कुछ जिम्मेदारियां, और दूसरा मैं अपना खर्च खुद से निकालना चाहता हूं, किसी दूसरे पर आश्रित नहीं रहना चाहता, बस इसलिए ।

ये तो बहुत अच्छी बात है भाई, “मैंने कहा ।”

“नयागांव असल में चंडीगढ़ से सटा एक कस्बा है, चंडीगढ़ से सटा होने के कारण यह चंडीगढ़ का ही हिस्सा लगता है, पर असल में यह इस ट्राइसिटी के मोहाली में आता है, ज्यादातर यहां कम बजट वाले स्टूडेंट्स और कर्मचारी किराए पर रहते है, इस कस्बे के एक तरफ हाई कोर्ट तो दूसरी तरफ पी. जी.आई हॉस्पिटल और पंजाब यूनिवर्सिटी होने से इस क्षेत्र का महत्व और बढ़ जाता है ।”

मनोज – “हां भाईजान बस इसीलिए यहां पर आया था, की पार्ट टाइम कुछ घंटे रात में ‘जोटो’ पर डिलीवरी का काम कर लिया करुंगा, और दिन में क्लास, बस दिक्कत यही होती है कभी – कभी रिवीजन का समय नहीं बच पाता ।

कोई बात नहीं भाई, वैसे भी तेरी हिम्मत बोहोत है, ज्यादा नहीं तो इस रेस में कछुए की चाल तो चल ही पा रहा है ना, वो भी अपने दम पर, “मैंने उससे कहा।”

मनोज – “हां भाईजान वो तो है, अच्छा भाईजान आपने कभी कोई एटेम्प्ट दिया है?”

हां पिछले साल ही, पर तब कुछ अंकों से मेरा प्री रह गया, “मैंने उत्तर दिया” ।

मनोज – “अच्छा भाईजान ।”
हां और कभी तुम्हें कोई मदद चाहिए हो तो मुझे बेझिझक बताना, “मैंने उससे कहा ।”

मनोज – “जी शुक्रिया भाईजान ।”

मनोज उम्र में मुझसे कुछ साल छोटा था । जिसकी वजह से, वह मुझे भाईजान कहकर ही पुकारता था, उसके चेहरे पर सादगी और गंभीरता का एक अलग ही अद्भुत सा मिश्रण झलकता था, और लबों पर वो मंद सी मुस्कान जो किसी के भी दिल में पहली नजर में जगह बना ले ।

जहां तक मैं जनता हूं इस पूरे मोहल्ले में उसकी मेरे सिवा किसी और से कोई बातचीत नहीं होती थी । उसकी खामोशी एक अलग ही दर्द बयां करती थी, मानो अन्दर किसी दर्द को समेटे हुए हो, जो मेरे लाख यतन करने पर भी कभी उसके लबों से नहीं छलकता था ।

अक्सर जब वह आधी रात को काम से लौटता था, और शाम को जब बाइक पर बैग लगाए निकलता था । तब मेरी और उसकी नजरों का तकरार हो ही जाता था । पर बातें इतवार को चाय के साथ ही होती थी, कभी मेरे यहां तो कभी उसके वहां ।

धीरे – धीरे वह मुझसे अपने काम और जीवन की छोटी मोटी बातें सांझा करने लगा, पर मन में जो दर्द था उसे कभी उसने लबों पर नहीं आने दिया ।

एक दिन इतवार को जब हम यूं ही उसके कमरे में बैठे थे, तब बातों – बातों मे वह फूड डिलीवरी वालों के काम के पीछे का छिपा कड़वा सच बताने लगा...,

“भाईजान जब पहले कभी मैं ‘जोटो’ से फूड ऑर्डर करता था, तब सोचता था कितना ज्यादा डिलीवरी चार्ज लिया जा रहा है । वो चालीस, पचास रुपए भी ज्यादा लगते थे । पर अब जब खुद ये काम करने लगा हूं, तब समझ आता है, इसके पीछे की वो मेहनत, दर्द, बचता ज्यादा कुछ नहीं पर लोगों में और सोशल मीडिया पर बस एक हवा सी बनी हुई है ।”

ऊपर से लोग, और रेस्तरां वाले, सही से बर्ताव नहीं करते वह अलग । कुछ रेस्तरां वाले तो ऐसे महसूस करवाते हैं, जैसे हम कोई चोर हों या बोहोत छोटा, आधा – आधा घंटा बाहर खड़े ऑर्डर मिलने का इंतजार करते रहो, ना ही बैठने को न ही पीने को पानी भाईजान, हम भी जानते हमारे अंदर जाने से भीड़ होगी, हम खुद नहीं जाना चाहते, पर कम से कम तहजीब से तो पेश आएं ।

सच कहूं तो कुछ महीने तो हो गए मुझे यहां चंडीगढ़ में काम करते हुए, मुझे यहां ऐसे दो ही रेस्तरां मिले है, जो सच में हम जैसे काम करने वाले की कद्र करते है । एक सेक्टर 22 में और दूसरा सेक्टर 17 में इन दोनों में मैं कई दफा गया, और हर बार मुझे इनके स्टाफ ने पानी पीने के लिए पूछा, तहजीब से बैठने के लिए कुर्सी की ओर इशारा किया ।

अभी कुछ ही दिन पहले की घटना है, मुझे मल्टी ऑर्डर लगा था सेक्टर 15 की मार्केट से ।

मल्टी ऑर्डर मतलब?, "मैंने उसे बीच में टोकते हुए पूछा ।"

मनोज – "भाईजान मल्टी ऑर्डर मतलब दो अलग – अलग जगह से ऑर्डर उठा कर, दो अलग – अलग जगह पहुंचाना था, ऐसा तब होता है जब सर्वर पर ऑर्डर बोहोत ज्यादा हों, पर डिलीवरी पार्टनर कम, तब एक ही बंदे को कई – कई ऑर्डर लगने शुरू हो जाते है ।

अच्छा, "मैंने कहा ।"

मनोज – "हां भाईजान ।"

अच्छा फिर क्या हुआ, जो घटना तुम अभी बयां कर रहे थे?, "मैंने पूछा"

हां भाईजान, उस दिन बारिश होने की वजह से सड़कों पर कहीं – कहीं पानी खड़ा था, इसलिए मैं बाइक धीरे और ध्यान से चला रहा था । ऊपर से मल्टी ऑर्डर, और जब मैं सेक्टर 40 की एक बिल्डिंग में दूसरी मंजिल पर ऑर्डर देने गया । तब वह बंदा बेवजह मेरे ऊपर भड़क उठा, बोलने लगा, इतना समय कैसे लगा दिया, क्या सेक्टर 15 से सेक्टर 40 में आने पर इतना समय लगता है ।

ऊपर से तू ये ऑर्डर भी ठंडा लेकर आया है देख हाथ लगा कर । लगा अपनी ऐप्लिकेशन से सपोर्ट टीम को फोन, मेरी बात करवा उनसे, या तो आज तेरे कपड़े फटेंगे या उनके, ये वो, बोहोत कुछ बोलने लगा, और मैं शांति से उन्हें समझाने लगा । क्योंकि मैं समझ गया था, कि उन्होंने नशा कर रखा है ।

अंत में मैंने उन्हें कहा, सर मेरे से कॉल नहीं लग रही, आप खुद लगा लेना और जो शिकायत करनी हो कर लेना, और आप मुझे मेरे ऑर्डर के पैसे दे दो ।

जब वे पैसे लेकर आए, तब उसमें बीस रुपए कम थे, जब मैंने उन्हें कहा तो बोलने लगे, क्यों ऑर्डर भी तू लेट से, और ठंडा लेकर आए, और पैसे भी पूरे मैं दूं ।

तब भाईजान मैं नीचे आ गया, मेरा कोई बहस करने का मन नहीं था । असल में ऑर्डर में कोई देरी नहीं थी, क्योंकि अगर ऑर्डर में कोई देरी होती है, तो तब हमें नोटिफिकेशन आने लगती है की ऑर्डर में देरी हो रही और कई दफा तो कॉल भी आ जाती है ।

मैं बैठा उसकी बातें सुन रहा था और कभी – कभी जवाब में सिर हिला देता था, वह कहने लगा....

भाईजान उस वक्त मुझे बुरा तो बहोत लगा था, पर मैंने खुद को समझा लिया कि जीवन में अच्छे और बुरे हर तरह के इंसान मिलते है । और हर किसी की बात को दिल पर नहीं लगाया जाता ।

“हां सही कहा मनोज तुमने जीवन में ऐसे घटिया लोग मिलते रहते है, और सब की बातों को दिल पर लेने बैठ गए, तब तो जी लिए मेरे दोस्त ।”

मनोज – “हां भाईजान कभी – कभी तो इसके उलट इतने अच्छे लोग मिल जाते हैं कि यकीन नहीं होता कि क्या इतने अच्छे लोग भी संसार में होते हैं । जैसे एक बार मैं ऑर्डर डिलीवर करने गया, जैसे ही मैंने उन्हें ऑर्डर देने के लिए कॉल किया, वे जब आई तब उनके हाथ में एक पानी का गिलास था, उन्होंने मुझे पानी तो पिलाया ही मेरे मना करने पर भी मुझे पचास रुपए अलग से दे दिए ।

“हां मनोज होते हैं भाई इस संसार में कुछ अच्छे लोग, अगर अच्छाई है तो बुराई भी है ।”

मनोज – “हां भाईजान सही कहा आपने, तो भाईजान दूसरी तरफ टूटी सड़कें, कीचड़, गढ़े और रात में असुरक्षित इलाके । मैं तो वैसे भी रात में ही डिलीवरी करता हूं, तो इस सबका सामना रोज ही करता हूं जिससे एक डर सा, अलग से लगा रहता है । जब रात में दस बजे के बाद ऐसी जगहों से ऑर्डर लगता है, तब एक बार एक लिए अंदर से मेरी रूह कांप जाती है । ऐसे में आवारा कुत्तों का डर अलग से, एक दिन तो मैं गिरते – गिरते बचा जब कुत्ते भौंकते हुए मेरे पीछे आने लगे । ऊपर से गूगल मैप कभी – कभी रात में इधर उधर से रास्ते दिखाते हुए उल्टी सीधी जगह पहुंचा देता है ।”

“भाईजान”, उसने मुझे पुकारा ।

हां बोलो, “मैंने उत्तर देते हुए पूछा ।”

मनोज – “कभी – कभी भाईजान मुझे समझ नहीं आता चंडीगढ़ से बिल्कुल सटे इलाके जैसे गांव और कस्बों का विकास सही से क्यों नहीं हो पाता?, शहर की सड़कें तो फिर भी सही हैं, लेकिन बाहर निकलते ही टूटी सड़कें इतनी गंदगी । जब किसी मंत्री जी को यहां पर आना हो, या कोई बड़ा सरकारी या राजनीतिक इवेंट हो, तब तो बड़ी सफाई और चाकचौबंद दिखाई देती है, तो फिर इसके बाहर की ओर ध्यान क्यों नहीं दिया जाता, जबकि चंडीगढ़ एक केंद्र शासित प्रदेश है । क्या केवल शरीर के मुख्य – मुख्य अंगों को ही साफ सुथरा रखना पर्याप्त है ।”

मैं उस वक्त निस्तब्ध होकर मनोज की तरफ देखने लगा, आखिर इसकी देखने और महसूस करने की शक्ति इतनी अद्भुत कैसे?”

फिर कुछ देर सोचने के बाद मैं कहने लगा, सही कहा मनोज तुमने इसे ‘एलीट प्लैनिंग’ की समस्या कह सकते है । चंडीगढ़ को ‘ला कार्बशियर’ ने एक सपने की तरह बनाया था, पर वो सपना सेक्टर की इन सीमाओं तक सीमित रह गया । समय के साथ – साथ शहर की आबादी बढ़ती गई, और शहर का बाहर की और विकास होता रहा । और इसके साथ ही दूसरे भी कई कारण है, जैसे कि “प्रशासनिक सीमा की समस्या”

मनोज – “प्रशासनिक सीमा की समस्या वह क्या भाईजान”, उसने मुझे टोकते हुए पूछा?

हां मनोज बता रहा हूं, प्रशासनिक सीमा की समस्या जैसे कि चंडीगढ़ एक केंद्र शासित प्रदेश है और जहां पर इसकी सीमा खत्म होती है । वहां से एक तरफ हरियाणा ओर दूसरी तरफ पंजाब की सीमा लग जाती हैं ।

इसलिए जब दो अलग – अलग सरकारें और प्रशासन एक ही सीमा पर मिलते है, तब उसे “नो मैन्स लैंड' (ऐसी जगह जिस पर किसी का अधिकार न हो) कह दिया जाता है, जहां पर चंडीगढ़ प्रशासन अपनी सीमा के बाहर पैसा खर्च नहीं करता, और राज्य सरकारें इन इलाकों को एक वोट बैंक और सस्ती लेबर से अधिक नहीं देख पाती।

मनोज – “हां सही कहा भाईजान आपने ।”

“हां मनोज और दूसरा “**विकासात्मक भेदभाव**”

विकासात्मक भेदभाव भाईजान, “उसने मुझे फिर से टोकते हुए पूछा”

हां विकासात्मक भेदभाव जैसे कि सरकारें अक्सर उन्हीं जगहों पर पैसा लगाती हैं, जो दिखावे के लायक हों । चंडीगढ़ का मुख्य हिस्सा 'शरीर के मुख्य अंगों' जैसा है, जिसे साफ रखना उनकी मजबूरी है । लेकिन सीमा के पास बसे कस्बे सिर्फ 'लेबर' या 'सस्ते किराए' के लिए इस्तेमाल होते हैं, इसलिए उन्हें बुनियादी सुविधाओं के मामले में लावारिस छोड़ दिया जाता है ।

“ये तो बिल्कुल सही कहा भाईजान आपने, जैसे सेक्टर 14 और 38 के कुछ इलाके ।”

“हां बिल्कुल मनोज और भी बोहोत से, और इसके साथ ही यह राजनीतिक इच्छा शक्ति की कमी को भी दिखाता है, क्योंकि ऐसे इलाकों की आवाज जल्दी से विधानसभा तक नहीं पहुंचती और अगर पहुंचती है तो अंत तक पहुंचते – पहुंचते धुंधली पड़ जाती है ।

आए दिन तो अखबार में इन इलाकों की समस्याएं लिखी मिलती है जिसका कोई समाधान नहीं दिखता, अब नया गांव में ही तुम देख लो बारिश के मौसम में कई दफा तो घुटनों तक पानी आ जाता, ऐसे मे काम

पर जाने और स्कूल जाने वालों की कितनी तकलीफ होती है ये तो तुम्हें पता ही है ।

मनोज – "हां मैं जनता हूं भाईजान, मैं खुद घुटनों तक पानी में बाइक निकाल कर ले गया हूं ।"

उस दिन हमारी बातचीत काफी अधिक लंबी रही, दोपहर को खाना खाने भी हम लोग साथ में ही गए । मनोज को यहां आए हुए कब तीन महीने बीत गए थे पता ही नहीं चला, वह अक्सर मुझे अपने काम के बारे में बताता रहता ।

कभी तैयारी और पढ़ाई को लेकर मुझसे किसी विषय पर चर्चा कर लेता, मुझे भी इस गली में एक साथी मिल गया था । जिससे रोजाना तो नहीं पर हफ्ते में एक बार मैं देश, समाज, दुनिया की घटनाओं पर चर्चा कर लेता था । उसके चेहरे पर कभी मुझे मायूसी या थकान नहीं दिखी, हर वक्त मुस्कुराता चेहरा या फिर कभी – कभी किसी गहरी सोच में डूबा हुआ दिखता, उसकी आंतरिक दुनिया और उसके अंतर्मन मे क्या चल रहा है, ये न कभी उसने अपनी जुबां पर आने दिया न चेहरे पर महसूस होने दिया, कभी मेरे द्वारा पूछ लेने पर वह उन्हीं घटनाओं को बयां करने लगता जो वह अक्सर अपने काम के दौरान देखता और महसूस करता था । जैसे एक रोज की बात है, जब मैं ऐसे ही किसी काम से उसके पास गया था, और वह अपनी कुर्सी पर बैठा कुछ सोच रहा था । जब मैंने पूछा "अरे भाई मनोज कहां खोए हो?"

कहीं नहीं भाईजान, अच्छा आप एक बात बताओ भाईजान, इंसान नहीं – नहीं **"एक आम आदमी नशा शौंक में करता है, या फिर मजबूरी में?"**

अरे मनोज ये कैसा सवाल है यार, “मैंने उससे पूछा ।”

मनोज – “अरे आप बताओ तो भाईजान?”

अरे भई मनोज ये तो बड़ा पेचीदा सवाल है यार, या यूं कहो आउट ऑफ सिलेबस । फिर हम दोनों कहका लगाते हुए हंसने लगे, तब से एक गंभीर सोच में डूबे मनोज के चेहरे पर ये पहली खिलखिलाती हुई हंसी थी ।

मनोज – “भाईजान मुझे लगता है एक आम गरीब आदमी नशा शौंक के लिए कम और अपनी दिन भर की थकान मिटाने के लिए ज्यादा करता है । या काम करने के दौरान कोई छोटा मोटा बीड़ी, सिगरेट, तंबाकू का नशा, जिससे उसे काम की थकान महसूस न हो, और वह काम मे लगा रहे ।

हां बिल्कुल मनोज कह सकते है, क्योंकि आम आदमी के पास इतना पैसा ही कहां होता है कि वह नशे को एक शौंक के रूप में पाल सके । हां पर उसकी यह एक गलत आदत कब एक लत का रूप ले लेती है उन्हें खुद पता नहीं चलता । और फिर धीरे – धीरे पूरी कमाई इसी सब में जाने लगती है ।

मनोज – “भाईजान क्या आपको नहीं लगता काम के घंटों में सुधार करके इसका कुछ हल किया जा सकता है?”

हल कैसे मनोज तू ही बता दे अब?, “मैंने उसकी और देखते हुए पूछा ।”

मनोज – “भाईजान मुझे लगता है, बारह घंटे से काम के आठ घंटे निर्धारित करके और उचित तनख्वाह देकर कुछ हद तक इस समस्या को हल किया जा सकता है । न ज्यादा काम की थकान, बंदा समय से अपने परिवार के पास, जिससे वह परिवार को भी समय दे पाएगा, परिवार भी खुश बंदा भी खुश ।”

बात तो कुछ हद तक तुमने काफी अच्छी कही मनोज, पर क्या यह जमीनी स्तर पर संभव है? “मैंने उससे पूछा ।”

“हां क्यों नहीं भाईजान कुछ हद तक जरूर ।”

“अच्छा तेरे मन में चल क्या रहा है ऐसा क्या देख लिया तूने अब ये बता जरा, “मैंने उसकी तरफ देखकर टोकते हुए उससे पूछा ।”

मनोज – “समझ जाते हो भाईजान आप भी, हां कुछ दिनों से ऐसी घटनाएं, और कुछ डिलीवरी का काम करने वाले लड़के मिले ।”
“अच्छा”, ‘मैंने कहा ।’

हां भाईजान जैसे अभी कुछ दिन पहले दो लड़के मिले, पूछने पर पता चला वे यहां पर दिन में सोलह – सोलह घंटे काम करते है ।”

क्या सोलह – सोलह घंटे....... “मैंने चौंकते हुए कहा ।”

“हां भाईजान मुझे भी यकीन नहीं हुआ था, लेकिन जब उसने अपना मोबाइल दिखाया, तब मुझे यकीन हुआ । दोपहर के बारह बजे आते हैं और सुबह के चार बजे तक काम करते हैं, पता नहीं भाईजान ऐसी क्या मजबूरी है उन लोगों की । तब मुझे एहसास हुआ कि इन डिलीवरी प्लेटफॉर्म पर भी काम के अधिकतम घंटे निर्धारित होने चाहिए, नींद पूरी न होने की वजह से कुछ भी दुर्घटना हो सकती है भाईजान ।”

ये तो तुमने सही कहा मनोज, मेरे लिए भी यह चौंका देने वाला सच है ।

हां भाईजान जैसे कि मैं हर बार की तरह काम न होने पर सेक्टर 15 की मार्केट में जाकर खड़ा हो जाता हूं । वैसे ही कल भी चला गया, और मैं क्या देखता हूं, वहां पर एक डिलीवरी बॉय चुपके से शराब पी रहा था, उसने ज्यादा तो नहीं पी, पर एक से दो पेग जरूर लगाए थे । वह भी

पंछियों के लिए पानी के जो मिट्टी के कटोरे लगे रहते हैं, उनमें से पानी लेते हुए । दूसरी तरफ मुझे वह लड़का भी दिखा जो मुझे कुछ दिन पहले मिला था, और बता रहा था कि वह सोलह घंटे काम करता है । वह भी एक तरफ अपनी बाइक पर बैठा, सिगरेट में कुछ नशीला पदार्थ भरकर उसके कश लगा रहा था । उसकी आँखें लाल होकर चढ़ी हुई थी । तो कुछ लड़के अपनी बातों में मशगूल थे, इन सब के बीच मैं एक तरफ अपनी बाइक पर बैठा, "अल्केमिस्ट" किताब पढ़ रहा था ।

मनोज सच कहूं तो भाई ये सब सुनकर मैं एक दम हैरान हूं, तूने मेरे सामने एक अलग ही सच्चाई लाकर रख दी, पर इस सबका समाधान तब तक नहीं होगा जब तक नए "लेबर कानून" इन डिलीवरी प्लेटफॉर्म पर सख्ती से लागू नहीं होंगे । नहीं तो तब तक ये शोषण चलता रहेगा । दिक्कत ये है कि ये डिलीवरी प्लेटफॉर्म सिस्टम तुम्हें 'कर्मचारी' नहीं 'पार्टनर' कहता है, ताकि वह सामाजिक सुरक्षा से बच सके ।"

"हां भाईजान सही कहा आपने, अच्छा भाईजान ।"

"हां मनोज कहो ।"

और सच्चाई सुनने की हिम्मत बाकी है अभी आप में, "उसने मेरी तरफ मुस्कुराते हुए देखकर पूछा"

अब क्या बाकी है भाई, अच्छा चलो बताओ, "मैंने उसकी और देखते हुए उससे कहा ।"

मनोज – "भाईजान ये जो ऐप्स पर हम इतनी सुंदर – सुंदर ललचाई खाने की जो तस्वीरें देखते हैं ना, असल में वहां उन 'क्लाउड किचिन' में कितनी सफाई रहती है ये मैं आए दिन देखता हूं । और तब मन में एक ही सवाल आता है क्या मैं लोगों के घर खाना पहुंचा रहा हूं या फिर बीमारी?,

असल में इन छोटे – छोटे क्लाउड किचिन में सफाई नाम की चीज ही नहीं रहती वही गंदे फर्श, दीवारों पर लगी गंदगी और बदबू, बिना ढके रखा हुआ खाना, जहां पर चूहें ऐसे घूम रहे होते है, जैसे मानो उनकी पिकनिक हो । अभी कुछ दिन पहले का वाक्य है, जब मैं एक क्लाउड किचिन से डिलीवरी लेने पहुंचा, मैंने उनसे वॉशरूम जाने के लिए पूछा, तब उन्होंने बिल्कुल अपनी पीछे की तरफ इशारा कर दिया जहां पर वे खड़े खाना बना और पैक कर रहे थे । जब मैं वॉशरूम गया तब वहां इतनी बदबू मेरा दम घुटने लगा, हाथ धोने के लिए पानी तक नहीं था, गनीमत ये रही की मेरे पास मेरी बोतल में पानी था मैंने उससे हाथ धोकर खाने का पैकेट लिया । ऐसे ही एक बार मेरे सामने चूहें बिना ढके रखे खाने में मुंह मार रहे थे । एक ही बिल्डिंग के अन्दर कई – काई क्लाउड किचिन चल रहे होते है, जिनके नाम पढ़कर ग्राहक को ये लगता है मेरा ऑर्डर न जाने कितने अच्छे रेस्टोरेंट से आ रहा होगा, और भी ऐसे कई वाक्य मैं आए दिन देखता हूं भाईजान ।”

कुछ देर के लिए मैं शांत हो गया, क्योंकि अक्सर मैं भी ऑनलाइन खाना मांगा लेता हूं, और जो मनोज बता रहा था ये सुनकर मुझे मेरे कानों पर यकीन नहीं हो रहा था, फिर भी कुछ देर बाद मैं बोल पड़ा ।

हां मनोज असल में यह पारदर्शिता की कमी है, रेस्तरां में जहां पर लोग बैठते हैं साफ रखा जाता है क्योंकि वह उनका विज्ञापन स्थल है । और किचिन अक्सर, अंत में पीछे की तरफ होते है, इसके साथ ही प्रशासन के पास इन हज़ारों क्लाउड किचिन को चेक करने के लिए पर्याप्त स्टाफ नहीं है । जिससे यह खाद्य सुरक्षा मानकों की सीधे – सीधे धज्जियां उड़ाना है, हम कह सकते हैं कि ये क्लाउड किचिन भी नो मैन्स लैंड का

हिस्सा बन गए हैं, जहां कमाई करना तो सब की जिम्मेदारी है पर सफाई की जिम्मेदारी किसी की नहीं ।

मनोज – "हां भाईजान सही कहा आपने", कल मुझे बहुत बुरा महसूस हुआ, जब मैंने ऐसे ही एक क्लाउड किचिन से एक मैडम को खिचड़ी और नारियल पानी की बोतल का ऑर्डर लाकर डिलीवर किया, मुझे ऑर्डर लेते ही लग गया था । कि ये जिस किसी का भी ऑर्डर है शायद उसकी तबीयत ठीक नहीं होगी तभी इतना हल्का और पौष्टिक खाना ऑर्डर किया है । पर जब वे ऑर्डर लेने आए तब मैं उन्हें चाह कर भी कह ना सका । कि जहां से आपने ऑर्डर मंगवाया है वहां उतनी सफाई नहीं है, अगली बार कोशिश करना बीमार होने पर खुद से बना लेने की, पर भाईजान मेरे बोल गले से ही न निकल सके । जब वे आई तब उनकी चाल और चेहरे के फीके पड़े रंग से ही पता चल रहा था कि उनकी तबीयत खराब है, और घर से बाहर रहने पर तबीयत खराब होने का दर्द मैं अच्छे से समझता हूं । भाईजान सच बताऊं तो उस रात में मेरा खुद भी खाना खाने का मन न हुआ, पेट में भूख और मन मे ग्लानि, इन दोनों के बीच फंसकर मुझे कब नींद आ गई, पता ही नहीं चला ।

मनोज अक्सर मुझसे इस तरह की कड़वी – कड़वी सच्चाइयां जो वह रोजाना किसी न किसी रुप में देखता था । बयां करता रहता, जैसे एक औरत का स्कूटी पर अपने डेढ़ साल के बच्चे को साथ लिए, फूड डिलीवरी करना ।

मनोज को मैं इतने महीनों से देख रहा था, और उसे देख कर कभी – कभी मेरे मन में आता, जैसे वह कोई 'साइलेंट बैटल' लड़ रहा है । जिसे वह अपने चेहरे पर ज़रा सा भी जाहिर नहीं होने देता था ।

अक्सर हम सूखना झील पर इतवार की शाम घूमने निकल जाया करते थे । और कभी – कभी तो मनोज अकेला ही चला जाता था, पूछने पर कह देता भाईजान मन था तो चला आया, उसे सूखना झील के किनारे रात में देर तक बैठना पसंद था, यूं ही बिना किसी गुफ्तगू के बैठे चांद को निहारते रहना, और अपने ही विचारों की आंतरिक दुनिया में खोए रहना । तब मैं समझ नहीं पाता था आखिर वह चांद को इतनी गौर से देख कर उसमें ऐसा क्या तलाशता है । उसकी एक खासियत थी, जो मुझे अच्छी लगती थी, वह जब भी झील के किनारे बैठता था, अपने मोबाइल फोन को या तो बंद कर देता था या फिर एरोप्लेन मॉड पर डाल देता । ताकि वह उस समय को अच्छे से जी सके, उसे इसके बीच किसी भी तरह का दखल पसंद नहीं था ।

मेरा ये 'भाईजान' नामकरण भी उसी ने ही किया था । उसके अलावा मुझे इस नाम से कोई संबोधित नहीं करता था, फिर एक शाम मुझे पता चला कि मनोज यहां से अपने घर चला गया है । यह कोई अचानक घटी घटना नहीं थी, इसका कुछ – कुछ अंदेशा मुझे पहले से ही था । क्योंकि कुछ दिन पहले बातों – बातों में मनोज ने मुझे बता दिया था कि शायद वह कुछ दिन बाद अपने घर पर हमेशा के लिए चला जाए । मेरे पूछने पर उसने सिर्फ इतना ही कहा था, "भाईजान कुछ पारिवारिक कारण है, जिनकी वजह से उसे जाना पड़ रहा है", पर ये पारिवारिक कारण क्या थे, ये मुझे आज तक नहीं पता चला न ही मैंने उससे दबाव देकर पूछना चाहा । जिस दिन वह गया, उससे एक दिन पहले शाम को वह मुझसे मिलने जरूर आया था, पर जाने के विषय का जिक्र उसकी जुबां पर नहीं था । खैर जब मैं अपने कमरे की और बढ़ रहा था, तब मुझे सामने वाले मकान की आंटी ने आवाज देकर पुकारा..अमन..अमन..., ये वही आंटी थी जिनके मकान में मनोज किराए पर रहता था । जब मैं उनके पास पहुंचा

तब उन्होंने मुझे एक पैकिंग किया हुआ, लिफाफा देते हुए कहा, ये तुम्हारे लिए मनोज देकर गया है, कह रहा था, अमन भाईजान को दे देना...., लिफाफा उनके हाथ से लेकर उन्हें शुक्रिया अदा करते हुए मैं अपने कमरे की ओर बढ़ गया । कमरे में जाते ही उत्सुकता में सबसे पहले मैंने उस लिफाफे को खोल कर देखा ।

उस लिफाफे में एक डायरी थी, और उस डायरी पर चिपकाया हुआ एक पर्चा जिस पर मेरे लिए एक नोट लिखा था, वही नोट हूबहू मैं आपसे यहां सांझा कर रहा हूं...

"भाईजान माफ करना, आपसे ऐसे मिले बिना ही जा रहा हूं, बस घर पर कुछ दिक्कत थी, इसलिए जाना पड़ रहा है, आपको ये लिफाफा मेरे जाने के बाद मिलेगा, और साथ में ये डायरी । भाईजान ये मेरी डायरी है, जिसे मैंने यहां आने के बाद लिखना शुरु किया था । इसमें मैंने काम के दौरान मेरे अनुभव, और मेरी भावनाएं लिखी है । साथ मैं कुछ कविताएं भी, जिन्हें मैं अक्सर रात के सन्नाटे मे चंडीगढ़ की इन सुनसान सी सड़कों पर डिलीवरी करते वक्त मेरे अंतर्मन में चल रहे द्वंद से शब्द जोड़ कर बना लिया करता था । मैं आपको ये डायरी इसलिए दे रहा हूं क्योंकि एक मर्तबा आपने मुझसे जीकर किया था, की आप एक किताब लिखना चाहते है, जिसमें कुछ कहानियां होंगी । तो मुझे लगा शायद मेरी डायरी आपकी कुछ मदद कर सके । हो सके तो मेरी डायरी के इन किस्सों को मेरी इस छोटी सी कहानी को आप अपने नजरिए से अपनी किताब में जगह देना ।"

"धन्यवाद"

आपका छोटा भाई – मनोज

मनोज की डायरी के ऊपर लगा यह पर्चा पढ़ कर उस वक्त मेरी आंखें भर आई । मानो मेरा कोई अपना मुझसे दूर चला गया, और जाते – जाते कमबख्त मुझे लिखने के लिए प्रेरित कर गया । मैं उस वक्त सब भूल कर नम आँखें लिए मनोज की डायरी पढ़नें बैठ गया, इस बीच मुझे ना खाने की सुध रही ना ही पढ़ने की । उस वक्त मनोज की डायरी पढ़ कर मुझे एहसास हुआ, वो कितने दर्द मे भी मुस्कुराता हुआ जी रहा था । जोटो पर रात में डिलीवरी करना और दिन में पढ़ना, सच में उसमें एक अदम्य साहस था । उसका यही साहस मानो उसके दर्द पर विजय पा लेता था, हां जब कभी वह मायूस या निराश होता था, तब इस डायरी में लिखने बैठ जाता होगा । और उतार देता होगा अपने दर्द को कलम की स्याही से इन कोरे पन्नों पर, इन पन्नों की हल्की नमी गवाही दे रही थी, इस बात की कि अक्सर वह अपने दर्द को लिखते हुए रो भी पड़ता होगा, और सामने से जैसे ये कोरे पन्ने उसके ह्रदय की वेदना के साथ – साथ खुशी – खुशी समेट लेते होंगे उसके आंसुओं को भी ।

मुझे समझ नहीं आ रहा उसकी डायरी का जिक्र करना मैं कहां से शुरु करूं, उसके प्रेम से या रातों मे इस शहर की सड़कों पर डिलीवरी करते उसके मन में चल रहे विचारों के सैलाब से । या फिर उसके यहां पहली बार आने के बाद उसका अपनी एक दोस्त के नाम लिखे उस अनकहे खत से । या उसके कमरे में रखी उस गिटार से जिसका जिक्र उसने ये कहते हुए किया था, भाईजान ऐसे ही बस शौंक के लिए रखी है । सच कहूं तो साला बड़ा छुपा रुस्तम आशिक था, भाईजान – भाईजान कहते हुए सब बता देता था पर कभी इस बारे मे जिक्र तक न किया ।

अक्सर लोग सड़कों पर डिलीवरी देते हुए लड़कों को सिर्फ एक 'ऑर्डर' समझते है, पर असल मे उस हेलमेट के पीछे कितने ख्वाब और

खामोशियां छुपी होती है, हम कल्पना भी नहीं कर सकते । मनोज की ये कहानी भी कुछ ऐसी ही दास्तान कहती है । अक्सर उसका रातों मे डिलीवरी करने के दौरान चांद को निहारना और मुस्कुरा देना, सच में यार क्या ही कहने दीवाने के, उसका उसकी डायरी मे लिखा ये पन्ना मैं आप सब के साथ सांझा कर रहा हूं………

"अक्सर रातों मे डिलीवरी करते वक्त जब तेरी याद आती है, तू कैसी है?, तेरा हाल जानने को जब जी तड़प उठता है । तब मैं अक्सर बाइक चलाते – चलाते आसमां में उस चांद को निहार लेता हूं, और फिर पाता हूं उसमें तेरी झलक । जिसे देखते ही उदास से मेरे इस चेहरे पर अपने आप ही एक मुस्कुराहट दौड़ी चली आती है, और साथ ही ठंडी हवाओं के साथ मन मे ये पैगाम की तू ठीक है ।"

सच कहूं तो चांद को निहारना अब एक अलग ही सुकून देता है, मानो उसमें तेरी ही झलक हो, हां इस डर के मारे चांद से बातें तो नहीं करता मैं, कि कहीं लोग मुझे देख कर पागल ना समझ बैठें । पर रात मे एक दफा चांद को निहार कर उससे तेरा हाल जरूर जान लेता हूं मैं ।"

मनोज के इस खत को पढ़ कर मुझे समझ आया, की वह जितना साहसी था, उतना ही मासूम भी, सच कहूं तो इसके बाद मैं मनोज का फैन होने लगा था । पर मन में एक सवाल भी था, की आखिर ये उस लड़की से बात क्यों नहीं कर लेता था । इस सवाल को मन मे लिए जब मैंने डायरी का पन्ना पलटा तब डायरी से एक खत निकलकर नीचे जमीन पर गिर पड़ा । ये वो अनकहा खत था जिसे उसने अपनी दोस्त के नाम लिखा था, खत का शीर्षक था – "पॉजिटिव दूरी"

"पॉजिटिव दूरी"

"रितिका मैं इन दिनों तुमसे एक 'पॉजिटिव डिस्टेंस' बनाने की कोशिश कर रहा हूं, (वही पहले की तरह) तू भी सोचती होगी ना, हफ्ते मे दो – दो बार कॉल करने वाला बंदा अब ना कॉल करता है ना मैसेज । अब खुद भी तैयारी करने लगा है तो शायद इसलिए, नहीं ऐसा बिल्कुल नहीं, तेरे लिए मैं कभी व्यस्त नहीं हो सकता ।"

और रितिका तू ये भी जानती है, मेरी लाइफ में मेरे लिए तू कितनी खास है । और मुझे तुमसे कितना लगाव है, बस इसलिए शायद मैं वो एक पॉजिटिव दूरी बनाने की कोशिश कर रहा हूं, (दूर नहीं कर रहा खुद को और ना ही दूर जा रहा हूं)

बस वो एक पॉजिटिव दूरी ताकि कल को मुझे दुख न हो । और हमारी दोस्ती, देख तू मुझसे कई गुना अच्छी है और मैं कुछ भी नहीं ।

कल को तेरी शादी भी होगी, दूरी वैसे भी बननी ही है । और मुझे मेरा पता है अगर लाइफ में कुछ न हुआ, मैं वैसे भी दूर हो जाना है, "कसम से मैं नहीं मिला पाऊंगा तुझसे नजरें कभी ।"

और फिर मुझे इतना भी पता है, अगर मुझे तुझसे कॉन्टैक्ट रखना भी है तेरे टच में रहना है तो मुझे कभी न कभी शादी भी करनी पड़ेगी । क्योंकि बैचलर्स (कुंवारों) को एक टाइम के बाद कोई नहीं इज्जत देता, ना ही लोग अपने घर आने देते है, (हमारे समाज का ये एक कड़वा सच है) ।

बस एक बार फिर से यही दोहराऊंगा कि ऐसा नहीं है, जॉब और तैयारी में व्यस्त हूं, और वो भी उतना की तेरे लिए टाइम ना निकाल पाऊं......,

आई थिंक यू अंडरस्टैंड........,

जैसे तू मुझे हमेशा समझती आई है.....मनोज ।"

उस वक्त मनोज का रितिका के लिए लिखा हुआ ये अनकहा खत पढ़, मेरी आँखें भर आई । जैसे – जैसे मैं डायरी के पन्ने पलटता जा रहा था, मनोज का एक नया चेहरा मेरे समक्ष प्रकट होता जा रहा था । जिसका कभी उसने मुझसे जीकर नहीं किया था, मेरा मानना ये है, "असल मे हीलिंग होना तब शुरू होती है, जब आप परिस्थितियों को स्वीकार करने लगते हो" और मुझे लगता है उस वक्त मनोज ने यही किया, कई जगह वह अपनी उस दोस्त को याद कर लिखता हुआ रो पड़ता । तो कई जगह उसके लिखे हुए शब्दों में एक अदम्य साहस झलकता । तो कभी – कभी वह खुद की तुलना चंडीगढ़ के सेक्टर्स की मार्केट में मोज मस्ती करते हुए युवाओं को देख, और यूनिवर्सिटी में पढ़ते, हॉस्टल्स में रहते युवाओं से करते हुए थोड़ा जलने लगता । यूनिवर्सिटी के लड़कों को देख कर उसका मन होता कि काश वो भी इनकी ही तरह यूनिवर्सिटी में पढ़ता । ऐसे ही मुझे उसकी डायरी में लिखा एक और पन्ना मिला जिसे उसने नाम ही 'जेल्स' (जलन) दिया था ।

"जेल्स"

"यहां इस शहर में रहते हुए और जोटो डिलीवरी पर काम करते हुए कई महीने गुजर गए । जब डिलीवरी करते वक्त लोगों को देखता हूं, खास तौर पर मेरी उम्र के लड़के लड़कियों को, तब थोड़ी जेल्स होती है । उन्हें दोस्तों के साथ मोज मस्ती करते हुए गाड़ियों मे घूमते देख, तो एक और खुद को देखता हूं जो जीवन में संघर्षरत है ।"

"कल ऑर्डर लेने दो जगहों पर गया बड़ी अच्छी थी, एलांते मॉल और "casa Bella vista restaurant" इनमें casa bella vista मुझे

सबसे अच्छा लगा । सेक्टर 10 में एकांत और मनोरम सा, शाम का वो समय और भी मन को लुभाने वाला था, ठंडी हवाओं के साथ धीमे – धीमे बजता संगीत वातावरण में एक अलग ही खुशबू भर रहा था । तब मन हुआ कभी मौका मिला तो तेरे साथ एक बार जरूर आऊंगा "ये मेरे साइलेंट लव के ख्वाब ।"

और ये जेल्स होना आम बात है,

पर सबसे अच्छी बात बताऊं तो एक शाम तेरे साथ वहां आने की खुशी का एहसास ।"

उस दिन मैं पन्ना दर पन्ना मनोज की डायरी पढ़ता जा रहा था । जिसे एक तरफ रखकर कुछ और करने का मेरा जरा सा भी मन नहीं था । शाम के सात बज चुके थे, और मेरे टिफिन वाले भैया मेरा टिफिन रख कर जा चुके थे, पर पता नहीं क्यों उस शाम भूख होते हुए भी मेरा खाने का मन नहीं था । जबकि उस शाम भैया मेरे लिए स्पेशल टिफिन दे कर गए थे । पर मैं नहीं समझ पा रहा था आखिर मेरा मन उस वक्त इतना भारी क्यों था, शायद मनोज के चले जाने का दुख था, या फिर उस दिन मनोज की ये कहानी पढ़ कर मेरा मन भारी हो गया था ।

मुझे कुछ समझ नहीं आया, बमुश्किल से मैंने न चाहते हुए भी थोड़ा खाना खा लिया, और टिफिन खाली कर एक तरफ रख दिया, इस डर से कि कहीं भैया सुबह टिफिन में खाना ऐसे ही रखा देख कर पिछली बार की तरह डांटने न लगे । भले ही मेरा रिश्ता इन भैया से ग्राहक और दुकानदार का था, पर ये यहां इस अजनबी शहर में खयाल अपनों की तरह रखते थे, खाने को लेकर कभी महसूस ही नहीं होने दिया, की मैं अपने घर से दूर हूं ।

जैसे ही मैंने पन्ना पलटा मनोज की अंग्रेजी में लिखी एक कविता मेरे सामने आ गई....

“what a dream I had,

I m running away from you

And looking for you,

Dreams are a reflection of reality.......

ये लाइनें मनोज ने सुबह उठते ही किसी ख्वाब को देखने के बाद लिखी थी । मानो असल जिंदगी के साथ- साथ वह ख्वाबों में भी लड़ रहा हो ।

रात के ग्यारह बजने वाले थे, और मनोज की डायरी उस वक्त भी मेरे हाथों में थी, ऐसे ही मनोज ने सेक्टर 17 के एक रेस्तरां का जिक्र किया था, जहां वह अपनी उस दोस्त के साथ जाने की इच्छा का जिक्र करता है ।

ऐसे ही एक शाम जब मनोज का डिलीवरी करने जाने का मन नहीं था, तब न चाहते हुए भी वो अपनी जिम्मेदारियों और मजबूरियों को देखते हुए चला गया । और वो कहते हैं ना मेहनत करने वालों की खुदा भी सुनता है, उस दिन मनोज के साथ कुछ ऐसा ही हुआ । बाकी आप मनोज से खुद ही सुन लो......,

“आज सुबह से ही मेरा शाम को डिलीवरी करने जाने का मन नहीं था । शरीर के साथ – साथ मन भी थका हुआ लग रहा था, मन था कि आज नहीं जाऊंगा, और क्लास खत्म करते ही शाम को सो जाऊंगा । पर जैसे ही शाम हुई, मैंने खुद के साथ वही हर बार की तरह वाली जबरदस्ती की और तैयार हो खुद को लेकर निकल पड़ा । अगर इस बड़े शहर में रहना है तो खर्च के लिए पैसे तो चाहिए ही होंगे ना, बस यही सोचते हुए । पर

सच कहूं तो भगवान आपके साथ पहले से खड़े होते है, बस देरी होती है तो आपका हिम्मत करके एक कदम बढ़ाने की, जैसे ही जॉन में जाकर मैंने आईडी ऑन की मुझे सेक्टर 7 की मार्केट से सेक्टर 22 का ऑर्डर लगा । और जब मैं ऑर्डर डिलीवर करने वाली लोकेशन पर पहुंचा, तब उन मैडम ने मुझे पांच सो रुपए की नोट दी, उनका ऑर्डर तीन सौ सत्तर रुपए का था, और मेरे पास वापिस देने को छूटे पैसे भी नहीं थे । जैसे ही मैंने उन्हें कहना चाहा, कि मेरे पास छुटे नहीं हैं, मैं आपको यू.पी.आई कर देता हूं, उससे पहले ही वे बोल पड़ी, बाकी के पैसे आप रख लो । मैंने कहा भी, की ये ज्यादा हैं, आपके एक सो तीस रुपए बचते हैं, उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा कोई बात नहीं आप रख लो ।

मुझे मन ही मन एक बार के लिए अच्छा नहीं लगा, पर फिर मैं अपने काम मैं मशगूल हो गया, और उसके बाद कुछ ऑर्डर डिलीवर करने के बाद मुझे एक और ऑर्डर लगा । जिसमें सो रुपए टिप अलग से पहले ही डाल दी गई थी, ये ऑर्डर मुझे सेक्टर 35 की मार्केट से उठा कर, सेक्टर 37 में देना था । जब मैं सेक्टर 35 में ऑर्डर लेने पहुंचा, रेस्तरां से ऑर्डर मिलने में कुछ समय बाकी था । तब मेरी नजर वहां एक तरफ नीचे जमीन पर बुक्स रख कर बेचते हुए व्यक्ति पर पड़ी, मेरी खुशी का ठिकाना न रहा । मैं पास गया तो देखा, वहां वे दोनों किताबें पड़ी थी, जिन्हें मैं कब से लेना चाहता था, एपीजे अब्दुल कलाम जी की “अग्नि की उड़ान” और “आषाढ़ का एक दिन” । मैंने बिना कुछ सोचे दोनों ही ले ली जिनका दाम साढ़े तीन सो रुपए था । पर मुझे आज अलग से पहले ही टिप के तौर पर दो सो तीस रुपए मिल चुके थे । इसलिए बाकी के पैसे मैंने अपनी बचत के पैसों से डालते हुए वे दोनों किताबें खरीद ली, और अंत में जब मैं ऑर्डर डिलीवरी करने पहुंचा, तब मैंने उन मैडम को भी बताया

कि उनकी दी हुई टिप मैंने सही जगह खर्च की है, ये सुन कर वे खुश हो गई ।

मुझे अच्छा भी लग रहा था और नहीं भी, क्योंकि मैं "बस किसी के रहमो करम का हिस्सा नहीं बनना चाहता था", मैं चाहता हूं कि मैं टिप देने वालों का हिस्सा बनूं, ना कि टिप लेने वालों का । और इसी भारी मन और हल्की खुशी के साथ मैंने भगवान जी का धन्यवाद करते हुए उनसे ये प्रार्थना की ।"

मनोज के बयां किए इस किस्से को पढ़ कर, मैं कह सकता हूं, की वह बड़ा ही स्वावलंबी किस्म का लड़का था, जिसे किसी की दया का पात्र बनना पसंद नहीं था । भले ही वह अपनी ये जंग अकेले लड़ रहा था, पर इस दौरान उसमें कितना साहस था, वह ये डायरी बयां करती है । साथ ही इस डायरी ने मनोज को उसके बुरे वक्त में भी संभाला । अक्सर अपनी तकलीफों का जिक्र किसी के समक्ष न करते हुए वह इस डायरी मे लिख दिया करता था, शायद वह किसी के सामने खुद को कमजोर नहीं दिखाना चाहता था, मेरे सामने भी नहीं । मैं ये भली तरह जानता हूं कि इस इतने बड़े अजनबी शहर में उसका मेरे सिवा जानने वाला और दिली करीबी और कोई नहीं था, और न ही कोई उसके गम का साथी, या उसे हौंसला देने वाला, उसके लिए जो था, वह खुद था । एक अज़ीज़ दोस्त, एक मार्गदर्शक और हौंसला देने वाला भी । "यूं तो किसी के साथ न होने पर भी मंजिल की और बढ़ना कोई गुनाह नहीं, और फिर ज्यादातर लोगों ने मंजिले अकेले ही सफर तय कर पाई है", पर "अगर सफर मे कोई साथ हो तो रास्ते आसान हो जाते है", बस अफसोस इस बात का है कम्भख्त लड़का बाहरी दुनिया की हर बात का जिक्र मुझसे करता था । पर भीतरी

दुनिया की मेरे सामने खिड़की तक न खोली, और अब जाता – जाता पूरी किताब मेरे सामने रख गया ।

मुझे भी न जाने उस रात क्या फितूर सवार था, जो मैं मनोज की इस डायरी को पूरी तरह खत्म करके सो जाना चाहता था । पर हर पलटता पन्ना एक नई सच्चाई, किस्से और दर्द से भरे साहस की गवाही दे रहा था । इसके बाद भी, मुझे उसकी डायरी से कई ऐसे अनकहे खत लिखे मिले जिनका जिक्र यहां मेरे लिए कर पाना मुश्किल है, आखिर इतना दर्द कोई कैसे लिख सकता है । कभी – कभी मैं समझ नहीं पाता, हर तीसरे पन्ने पर उसके खुद से किए सवाल थे । एक पन्ने पर लिखे सवाल मे वह खुद से पूछता भी है, की क्या वह अपनी उस दोस्त से ये दूरी हमेशा के लिए बना रहा है?, और फिर नीचे उस सवाल का जवाब स्याही के साथ – साथ आंसुओं द्वारा भी दिया जान पड़ता था । तो किसी पन्ने पर अपने घर की स्थितियों को लेकर किया गया जिक्र मिलता, एक पन्ने पर फिर अंग्रेजी में लिखी कविता मिली, जिसे उसने यहां से जाने के कुछ ही दिन पहले लिखा था….,

Magical voice

A few days ago, when I spoke to you after months.

As soon as your voice reached the depths of my heart,

I hung up the call out of fear but…..

"Your magical voice has already done its work..

Just like a cool breeze clears away the layer of dust revealing

Something golden and shining beneath……

Like barren dry land becoming

Moist again after the rain,

And that land yearing for more rain….

Like spring blooming again in a

Forest…….

Your magical voice was something

like that as if it brought life back

to the dead…

my heart is longs to hear it again".

इसके अगले ही पेज पर मनोज ने इस कविता की रचना की प्रेरणा के बारे में जिक्र किया हुआ था । कई महीनों बाद उसकी, अपनी उस दोस्त से हुई बात का, और उस वक्त मनोज को उससे बातें करते वक्त जो महसूस हुआ, उसी को उसने इस कविता में पिरो दिया । कितना प्यारा और शायराना अंदाज था ना, मन के भावों को शब्दों में पिरो देने का ।

कहते हैं, प्रेम में लोग अक्सर बच्चे, कवि और शायर बन जाते है, पर प्रेम मे साहसी बनते हुए मैंने इस लड़के को देखा था । न कोई उम्मीद और ना ही किसी के सामने उस प्रेम का कोई जिक्र, न ही बाहरी दुनिया के समक्ष कोई रोना – धोना बस कुछ प्रार्थनाएं उनमें भी उस प्रेम को मांगने से ज्यादा उसके काबिल बना देने का जिक्र । और अपने आराध्य से दूरी बन जाने का एक सुन्दर और प्यारा सा डर….ये सब मैं कह पा रहा हूं, मनोज की लिखी ये प्रार्थना पढ़ कर…..

"काबिल"

"नहीं मांगता तुझे मैं कभी मेरे रब से,

इसलिए की कहीं अगर कल को तू न मिली

तो तब मैं कहीं मेरे रब से ही खफा न हो जाऊं,

मेरा उस पर से विश्वास न डगमगाने लगे,

मेरे और मेरे रब के रिश्ते में कहीं दरार न आने लगे,

की एक शख्स तो मंगा था बस, वो भी न दे सका ।

बस मांगता हूं तो सिर्फ इतना कि तेरे काबिल बना दे,

ताकि कल को तुझसे इजहार ए मोहब्बत करूं, तो मुझे

ये मलाल न रहें मैं तेरे काबिल नहीं, और फिर तुझे

जीवन की हर खुशी भी तो देनी है ।

फिर तू मिले या न मिले, बस मुझ मे ऐसी कोई

कमी न हो जो कहे कि मैं तेरे काबिल नहीं ।

एक तू और दूसरे कान्हा, तुम दोनों ही तो हो मेरे

और अगर तुम दोनों ही से रिश्ता न रहा मेरा,

तो फिर इस दुनिया में मेरा कौन रहेगा ।"

जब मैंने ये प्रार्थना पढ़ कर खत्म की तब रात का एक बज चुका था । मेरे कमरे की बाल्कनी से मनोज का वह कमरा दिख रहा था, जिसमें रोजाना इस वक्त तक बत्ती जली रहती थी, मगर आज अंधेरे के साथ घोर सन्नाटा पसरा था । मेरी आंखों में नींद अब साफ झलकने लगी, सोने का मन तो नहीं था, लेकिन मैंने कल की चिंता करते हुए बिस्तर पर जाना उचित

समझा । मनोज की डायरी एक तरफ रखते हुए, मन मे एक भारीपन सा था...., जिसे मैंने आंखों में नींद के शोर तले भूल जाना चाहा ।

कोचिंग से जब मैं लौटा मनोज की डायरी वहीं टेबल पर पड़ी मेरा इंतजार कर रही थी । नीचे गली मे मुझे आंटी जी भी मिली थी, ये पूछते हुए कि आखिर उस पैकेट में था क्या?, तब मैं बस हल्का सा मुस्कुराते हुए, सीढ़ियां चढ़ आया । और मन ही मन कहने लगा, वो पैकेट की डायरी महज अब एक डायरी नहीं, एक कहानी की शक्ल लेने वाली है, ऐसी कहानी जिसकी कभी कल्पना नहीं की जा सकती ।

मनोज अक्सर आई. ए. एस, आई. पी. एस ऑफिसर और हाई कोर्ट जजेस तक के यहां डिलीवरी देने जाता रहता था । पर कभी उनसे मुलाकात न कर सका, अगर कभी सोचता कि गेट पर खड़े गार्ड से कह कर मिल लेगा तो इतने में ही अगला ऑर्डर लग जाता और उसको जाना पड़ता । चंडीगढ़ से ऑर्डर डिलीवर करना शुरू करता और आधी रात होने तक कभी पंचकूला तो कभी मोहाली पहुंच जाता । सड़क पर दौड़ती मोटर साइकिल के पहिए के साथ – साथ उसके मन में भी विचारों का सैलाब दौड़ता रहता, जो उसे कभी कुछ, तो कभी कुछ कहता....

प्रॉमिस

जोटो पर पार्ट टाइम डिलीवरी करते, अब तो लगभग कई महीने बीत गए, इस दौरान शहर के मुख्य – मुख्य भाग और सभी सेक्टर घूम चुका हूं । आई. ए. एस ऑफिसर से लेकर हाई कोर्ट्स के जज़ेस और एम.एल.ए हॉस्टल्स तक ऑर्डर डिलीवर कर आया ।

आधी रातों को सुनी सड़कें देखीं, और उन सड़कों पर मैं और मेरे विचार ।

कभी आखिरी ऑर्डर डिलीवर कर खरड़, मोहाली, पंचकूला, जीरकपुर से आधी – आधी रातों को वापिस कमरे पर आते हुए रास्ते में 'पंजाब क्रिकेट स्टेडियम', 'गोल्फ क्लब' और न जाने बड़े – बड़े कौन – कौन से मॉल देखे....

उदास भी होता, निराश भी, और हताश भी, शब्द भीतर चल रहे होते जैसे सड़क पर बाइक का पहिया घूमता चलता जाता है, वैसे ही मन में विचार ।

और फिर तब मैं खुद को एक ही बात कहता, "यस यू कैन"....

जिन सड़कों पर आज तू खाना डिलीवर करता घूम रहा है. कल को मुझे इन्हीं सड़कों पर तेरी सरकारी गाड़ी चलती नजर आनी चाहिए, फिर चाहे हालात परिस्थितियां जो भी हों, और इसी के साथ वह खुद को जवाब देता हुआ कहता भी, "हां जरूर चलेगी, और उस दिन को आना होगा, हर हाल में आना होगा, और मैं उस दिन को लाऊंगा ।"

मनोज का खुद से किया हुआ, ये वादा पढ़कर उस वक्त मुझे खुद पर थोड़ी शर्म आने लगी । मैंने तो कभी खुद से ऐसा वादा नहीं किया था । और ये लड़का खुद से वादा कर भी रहा था तो इतने अदम्य साहस और आत्मविश्वास के साथ जिसने तब मुझे अंदर से झकझोर कर रख दिया ।

जिस गिटार के बारे में पूछने पर उसने मुझसे जवाब देते हुए, सिर्फ इतना कहा था, कि यह केवल उसने शौंक के तौर पर बजाने के लिए रखा है । असल मे गिटार पर वह 'हैप्पी बर्थडे' की धुन को प्रैक्टिस किया करता था, आप समझ ही गए होंगे, आखिर वह हैप्पी बर्थडे की धुन क्यों और किसके लिए थी । ये पन्ना पढ़ कर मुझे मनोज के लिखी उस प्रार्थना की पंक्ति याद आ गई, "मुझ मे ऐसी कोई कमी न रहे..."

और फिर अगले पन्ने पर अंग्रेजी में लिखी एक और कविता, जिसमें वह अपने उस साइलेंट लव को अपने भीतर किसी भूलभुलैया की तरह देखता है । जिसमें से वह जितना बाहर निकलने की कोशिश करता है, मानो उसमें उतना ही और गहरा "खोया जाता....,"

"The love I carry for you

Inside me,

Feels like a maze;

the more I try to escape it,

the more I get lost in it."

इसके बाद पन्ना दर पन्ना मैं मनोज की डायरी इस उम्मीद से पढ़ता चला गया, की शायद आखिरी पन्ने पर उसने अपने उस "साइलेंट लव" का जिक्र किया होगा । पर नहीं डायरी के उस आखिरी पन्ने पर भी एक कविता लिखी थी, जो उसकी जिम्मेदारियों और सपनों के मध्य उसके अस्तित्व को बयां करती थी ।

"मेरे कंधों पर रखा, किताबों का वह बोझ

मुझे जिम्मेदारियों के उस बोझ से,

कहीं ज्यादा हल्का और सुकून दे,

प्रतीत होता है ।।"

इतने महीनों बाद आज भी जब मैं कभी सड़कों पर लाल या नीली शर्ट पहने हुए किसी डिलीवरी बॉय को देखता हूं तो मेरी आंखें उस हेलमेट के पीछे तलाशने लगती हैं, उस मुस्कान को । "और इसी के साथ ही मेरे मन के पटल पर जीवंत हो उठती हैं, मनोज की वे स्मृतियां ।"

जो इस देश के किसी कोने में लड़ रहा होगा, अपनी जिम्मेदारियों और किताबों से, कोशिश कर रहा होगा, उनमें समन्वय बैठने की ।

धुंध और दीप

रात के करीब दस बज रहे थे, रोजी बैठी अपनी टेबल कुर्सी पर संस्कृत विषय को पढ़ रही थी । क्योंकि कल उसका बारहवीं जमात का संस्कृत का बोर्ड इम्तहान है, कमरे के इस सन्नाटे में केवल किताब के पन्ने पलटने की ही आवाज आ रही थी । और रोजी अपने पढ़ने में मशगूल, पास में ही उसकी अम्मी बैठी स्वेटर बुन रही थी, वे भी रोजी के साथ जगी हुई थी, की कहीं उसकी बची को अकेला न महसूस हो । इधर रोजी बार - बार धातु रूप याद करने की कोशिश कर रही थी, लेकिन आज उसका मन बार - बार भटक रहा था । क्योंकि अब उसे कल के इम्तहान की चिंता सताने लगी थी, मास्टर जी के कहे शब्द मानो उसके कानों में बार - बार गूंज रहे थे । उसे वे दिन याद आ रहे थे, जब मास्टर जी से जिद्द कर उसने अपने बोर्ड के इम्तिहानों में अलग से संस्कृत विषय को लिया था । तब मास्टर जी ने रोजी से कहा था, “रोजी स्कूल में संस्कृत विषय का कोई अध्यापक नहीं है, तू कैसे पढ़ेगी बच्ची, कहीं तू इस विषय में फेल न हो जाए”, और मैं नहीं चाहता कक्षा की एक होनहार छात्रा की मार्कशीट खराब हो । पर मास्टर जी के इतना समझने पर भी उसने मास्टर जी की एक न सुनी थी । क्योंकि वह अपने पिछले विद्यालय में संस्कृत विषय को पढ़ चुकी थी, इसलिए वह इस विषय को आगे भी सुचारु रूप से पढ़ना चाहती थी । बगैर ये फिकर किए वह पास होगी या फेल, न जाने

उसे इस विषय से क्या आत्मीय लगाव हो गया था । घर पर जब वह उर्दू के अल्फ़ाज़ सुनती है, और स्कूल में जब संस्कृत के श्लोक पढ़ती है, तो उसे इन दोनों में एक जैसी पवित्रता दिखती है । जिसे पढ़ने पर उसे सकूं मिलता था, उसने अपने बोर्ड के इम्तहान के लिए इस विषय को खुद से पढ़ने का फैसला किया था, और अपनी अम्मी से पैसे लेकर वह बाजार से इस विषय के लिए किताबें भी ले आई थी, जिनमें से वह रोज थोड़ा - थोड़ा खुद से पढ़ लेती थी । पर आज अचानक न जाने क्यों उसके 'वहम ओ गुमान' में ऐसे खयाल आ रहे थे ।

अगले ही पल वह अपनी कुर्सी से उठ खड़ी हुई, और खिड़की से पर्दे को एक तरफ करते हुए, बाहर की ओर ताकने लगी, सहसा उसे उस घनी सर्द काली रात को देखकर कुछ याद आने लगा

हां पिछले वर्ष की वो घटना, जब इसी तरह की घनी सर्द काली रात थी । उस रात कड़ाके की ठंड और धुंध पड़ रही थी, की अचानक से रात के आठ बजे उसके घर की कुंडी कई दफा ठक - ठक बजी । तब उस वक्त वह बैठी अपना स्कूल का काम कर रही थी, दरवाजे पर जाकर उसने देख तो सामने सुमित व इंदर खड़े थे, दोनों कक्षा में उसके सहपाठी थे ।

तब उन लोगों के दरमियान जो गुफ्तगू हुई थी, उसे वह याद आ गई ।

रोजी - "अरे सुमित, इंदर तुम दोनों इस वक्त यहां ।"

सुमित - "हां रोजी हम ।"

रोजी - "कहो कैसे आना हुआ?"

इंदर - "रोजी वो हम तुम्हारी अर्थशास्त्र विषय की नोटबुक लेने आए हैं, ताकि सुबह स्कूल पहुंचने से पहले उसे पूरा कर सकें, तुम्हें तो पता ही है ना किरण मैडम का ।"

एक पल के लिए तीनों शांत रहे, जैसे मैडम का खयाल गुमान में आ गया हो, किरण मैडम काम न करने, या पढ़ाई न करने पर बच्चों को पीटती नहीं थी । बजाए इसके वे उन्हें भरी क्लास के सामने डांट लगाती, और बेइज्जत करती थी।

किरण मैडम का ये तरीका और अध्यापकों से अलग था । वे अक्सर ना पढ़ने वाले बच्चों को बुलाती और उनके सामने किसी आईने की तरह उनका भविष्य उनके वर्तमान के आधार पर रख देती । “आज पढ़ लो नहीं तो कल जब तुम्हारे सामने से तुम्हारे दोस्त अफसर बन कर बड़ी गाड़ी से निकलेंगे तब तुम उन्हें धूल उड़ाते हुए सलाम करोगे ।"

"सब लोग देखिए इन्हें ये हैं हमारी क्लास के "फ्यूचर स्टार", इन्हें लगता है, कि बिना पढ़े ही दुनिया इनके कदमों में होगी । चलो सब एक बार इनके लिए ताली बजाओ, तकी इनकी नींद खुले ।"

कुछ ऐसा अंदाज था किरण मैडम का, "कहते हैं ना जो काम डंडे की मार न कर सके, वह शब्दों की चोट के देती है ।"

रोजी - "हां मुझे पता है इंदर, पर तुम्हें याद है ना, मैडम ने क्लास में सख्त हिदायत दी थी, की कोई भी अपनी कॉपी किसी से भी सांझा नहीं करेगा ।"

तब इंदर के बोलने से पहले ही सुमित बोल पड़ा ।

सुमित - "पर रोजी....."

रोजी ने उन दोनों के चेहरों की तरफ देखा, जो बाहर पड़ रही, इस कड़ाके की सर्दी और धुंध में लाल हो गए थे । उनके हाथों की अंगुलियां सख्त लाल होकर जैसे जमने लगी थी ।

तब रोजी ने सुमित को टोकते हुआ कहा था, अच्छा रुको अभी आई ।

तब भीतर अपने कमरे में जाते वक्त, उसे थोड़े दिन पहले पढ़े श्लोक का स्मरण हो उठा, “परोपकाराय पुण्याय पापाय परपीड़नम् ।” अर्थात (दूसरों का भला करना ही सबसे बड़ा पुण्य है और दूसरों को दुःख देना सबसे बड़ा पाप) ।

कमरे से अर्थशास्त्र की नोट बुक लाकर उन्हें देते हुए, वह कहने लगी, मुझे याद से कल लौटा देना । तब इतने में रोजी की अम्मी आवाज सुनकर बाहर आ गई, “अरे रोजी कौन है बेटा”, अम्मी ये मेरे सहपाठी हैं, स्कूल का काम करने के लिए मेरी कॉपी लेने आए थे ।

अम्मी - "अरे बेटा कहां से आए हो?", तब सुमित बोलने ही वाला था कि रोजी ने टोकते हुए जवाब दिया ।

रोजी - "अम्मी, ये दोनों मेरे स्कूल की बगल वाली गली में ही रहते है ।"

अम्मी - "क्या स्कूल के बगल मे ।"

रोजी - "हां अम्मी ।"

अम्मी - "तो ये दोनों पांच किलोमीटर दूर से कॉपी लेने आए है, और तूने इन्हें इस कड़ाके की ठंड में दरवाजे पर खड़ा किया हुआ है, भीतर बुला लेती ।"

रोजी - "जी वो हमारे ध्यान से उतर गया था ।"

अम्मी - "आओ बच्चों भीतर, चाय पीकर जाना ।"

इंदर - "नहीं आंटी जी शुक्रिया, अभी तो जाकर बस नोटबुक पूरी करनी है ।"

अम्मी - "अच्छा ठीक है बच्चों, जरा ध्यान से जाना ।"

फिर वे दोनों वहां से चले गए ।

सुमित और इंदर कक्षा के उदंड विद्यार्थी थे, जिनका पढ़ाई से कोसों दूर का नाता था । पर उन्हें मार से ज्यादा कक्षा में अपनी बेइज्जती का डर लगता था । जिस खातिर वे इतनी दूर ठंड और रात की परवाह किए बगैर रोजी से नोटबुक लेने पहुंच गए थे ।

रोजी की अम्मी ने उन दोनों के चले जाने के बाद, रोजी से पूछा, “अच्छा ये कौन विषय की कॉपी लेने आए थे रोजी?”

रोजी - "जी अम्मी अर्थशास्त्र ।"

अम्मी - "अच्छा वही किरण मैडम पढ़ाती हैं ना ये तो, जिनका तू अक्सर जीकर करती है ।“

रोजी - "जी अम्मी ।"

अम्मी - "पर बच्ची उन्होंने तो सख्त हिदायत दी थी ना, की कोई किसी को अपनी कॉपी नहीं देगा, तो अब तो तुम्हें कल उनसे डांट सुननी पड़ेगी ?"

रोजी - "कोई बात नहीं अम्मी हम सुन लेंगे, और फिर आप ने ही तो हमें तालीम दी है ना, की दर पर आए दुश्मन को भी मना नहीं करते । तो ये तो फिर भी मेरे सहपाठी थे अम्मी, इन्हें कैसे मना कर देती, वो भी इस ठंड में इतनी दूर से जो आए थे ।"

तब रोजी की जुबान से ये शब्द सुनकर, उसकी अम्मी की आँखें भर आई थी, और तब उन्होंने रोजी को अपने सीने से लगा लिया था ।

रोजी को ये भी याद आया, की अगले दिन उन तीनों की कॉपी देख कर मैडम ने रोजी को बुलाया था । और उन्होंने उससे पूछा था कि ये क्या है, जब मैंने सख्त हिदायत दी थी, उस वक्त रोजी का जवाब सुनकर मैडम भी शांत हो मुस्कुरा दिए थे ।

तब उसने मैडम को कहा था कि मैडम अगर कड़ाके की ठंड में ऊपर से धुंध ऐसे में कोई रात में आठ बजे, पांच किलोमीटर साइकिल चला कर आपके घर पर आए, वो भी शिक्षा मांगने तो आप क्या करेंगे, इसलिए मैंने इन्हें नोटबुक दे दी ।

ये सब खयाल उसके गुमान में चल ही रहे थे कि, पीछे से उसे उसकी अम्मी ने पुकारा, “रोजी क्या हुआ, वहां खिड़की पर खड़ी क्या ताकती है बेटा?”

रोजी - "नहीं अम्मी कुछ नहीं, वो बस हमें कल के इम्तहान को लेकर थोड़ी सी चिंता हो रही थी ।"

अम्मी - "चिंता काहे की चिंता बेटा, तूने तो ये विषय खुद से चुना है, क्योंकि तुझे इसे पढ़ना अच्छा लगता है, ना की तूने इसलिए चुना कि तुझे इसमें पास या फेल होना है, चल अब आकर सो जा सुबह उठना भी है ।”

रोजी - "हां अम्मी बस आए, और उसने बिस्तर पर जाते - जाते मन ही मन दोहराया "उद्यमेन ही सिद्ध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः। अर्थात (कार्य मेहनत से ही सिद्ध होते हैं, केवल मन की इच्छाओं या सोचने मात्र से नहीं)

सुबह रोजी परीक्षा भवन के बाहर, हर बार की तरह एक घंटे पहले ही पहुंच गई थी, पर वहां कोई भी नहीं था । उसके मन में था, कि परीक्षा भवन के बाहर अन्य स्कूलों से आए विद्यार्थियों से वह परीक्षा के संबंध में

चर्चा कर लेगी, पर वहां पर एक गहरा सन्नाटा पसरा हुआ था । उसे लगा शायद अभी समय है धीरे - धीरे बच्चे आना शुरू होंगे, पर जब अंतिम बीस मिनट रह गए और परीक्षा भवन के बाहर उसे कोई भी विद्यार्थी नहीं दिखा, जिसकी परीक्षा हो । तब उसकी धड़कने तेज होने लगी, उसके मन में तरह - तरह के खयाल आने लगे, क्या आज सच में परीक्षा है भी, या नहीं?, वह अपने रोल नंबर की शीट में लिखी परीक्षा की तारीख, अपनी घड़ी की तारीख से मिलाने लगी, “तारीख तो सही है”, उसने मन ही मन खुद से कहा ।

अंत में वह परीक्षा भवन के गेट के बाहर बैठे, चौकीदार अंकल के पास चली गई।

रोजी - "अंकल जी, आज मेरा इम्तहान है यहां पर", वे बड़े तहजीब से उससे पेश आए । अच्छा बेटा आओ मेरे साथ, और फिर वे उसे मैडम के पास ले गए ।

अंकल - "मैडम ये बच्ची आई है, कह रही है इसका पेपर है आज यहां पर ।"

मैडम - "आप जाइए, आओ बेटा आप मेरे साथ आओ, वे रोजी को अपने साथ ऊपर सुप्रीडेंट साहब के पास लेकर चली गई, सर ये बच्ची आई है, इसका पेपर है आज ।"

सुप्रीडेंट साहब - "आ गए बच्चे आप, हमें तो लगा था आप आएंगे नहीं, पूरी तहसील में केवल आप ही का संस्कृत का एग्जाम है आज ।"

ये सुनकर रोजी थोड़ी चौंक सी गई ।

सुप्रीडेंट साहब ने पास में खड़ी एक आंटी को बोलकर, रोजी के लिए अपने सामने ही हॉल में टेबल लगवा दिया । ये कहते हुए कि अब अकेली लड़की को अंदर कमरे में क्या ही बैठाएंगे ।

रोजी टेबल पर बैठ गई, कुछ देर बाद सुप्रीडेंट साहब ने रोजी को अपने पास बुलाया ।

सुप्रीडेंट साहब - "अच्छा बेटा आपका नाम क्या है?"

रोजी - "जी रोजी ।"

सुप्रीडेंट साहब थोड़ा चौंकते हुए बोले, "बेटा मुस्लिम हो?"

रोजी "जी हां सर ।"

तब सुप्रीडेंट साहब की आंखों में, रोजी के लिए गहरा सम्मान उभर आया, सुप्रीडेंट साहब और रोजी की इस वार्तालाप को पास बैठे, अन्य अध्यापक भी बैठे सुन रहे थे ।

सुप्रीडेंट साहब - "बेटा एक जवाब दो ।"

रोजी - "जी सर ।"

सुप्रीडेंट साहब - "बेटा आपने संस्कृत ही क्यों ली?, उर्दू या होमसाइंस जैसा विषय क्यों नहीं?"

रोजी - "जी मेरे स्कूल में न ही संस्कृत पढ़ाई जाती और न ही उर्दू, हमने ये विषय अलग से अपनी बोर्ड इम्तहान में शामिल करवाया है । और दूसरा संस्कृत हम पहले भी पढ़ चुके हैं, मुझे इस भाषा से एक अलग ही आत्मीय जुड़ाव महसूस होता है।"

सुप्रीडेंट साहब व अन्य अध्यापक एक साथ - "वाह बेटा।"

सुप्रीडेंट साहब - "बेटा शायद आप जैसे कुछ बच्चे इस विषय और भाषा को जीवंत रख पाएं, परीक्षा के लिए हमारी शुभकामनाएं ।"

रोजी - "जी धन्यवाद ।"

अगले पल सुप्रीडेंट साहब ने रोजी की तरफ प्रश्न पत्र के चार अलग - अलग कोड रखते हुए कहा, जो प्रश्न पत्र मन हो उठा लो । रोजी एक - एक करके प्रश्न पत्र देखने लगी, उन सब प्रश्न पत्रों में से उसे आधे से ज्यादा आता था ।

सामने प्रश्न पत्र रखे देख, वह थोड़ा सोचने लगी, इतने में सुप्रीडेंट साहब ने कहा, बेटा इतना नहीं सोचना कोई एक उठा लो । उसने एक प्रश्न पत्र उठाया, और अपनी टेबल पर बैठकर हल करने लगी । रोजी को जितना प्रश्न पत्र आता था, उसने बड़े इत्मीनान के साथ उसे हल किया । बाद में जब परीक्षा का आधा घंटा रह गया, तब बमुश्किल से उसका दस नंबर का रह गया था, जो उसे नहीं आता था । उसके लाख जतन करने पर भी, उसे उस प्रश्न का उतर नहीं सुझा । तब उसने अंत में अपनी उतर पुस्तिका जमा कर दी ।

परीक्षा भवन के हॉल से सीढ़ियां उतरते वक्त वह बड़ी खुश थी, मानो कोई बड़ी जंग जीत ली हो, पूरा स्कूल परिसर खाली पड़ा था । धूप अब साफ हो चुकी थी, पेड़ों पर सूरज की किरणें पड़ने से वे चमक उठे थे, जैसे परीक्षा के बाद रोजी का मन चमक उठा हो । गेट पर बैठे अंकल जी अब वहां से उठकर एक तरफ धूप में जाकर बैठ गए थे ।

रोजी फिर से एक दफा मुड़कर उस परीक्षा भवन को देखती है, उसे न ही अब वे दोनों लड़के याद थे । और न ही उस रात की वो धुंध, उसे बस अपने हाथों पर नीली स्याही के निशान दिख रहे थे । और स्कूल की

दीवार पर हवा में हिलता हुआ बोर्ड, जिस पर लिखा था, "विद्यां ददाति विनयं विनयाद्याति पात्रताम्" अर्थात "विद्या (शिक्षा) मनुष्य को 'विनय' (नम्रता) प्रदान करती है, और विनय से ही मनुष्य के अंदर 'पात्रता' (योग्यता) आती है, और विनय ही सफलता और सुख की पहली सीढ़ी है" ।

उसे अपनी अम्मी की कही बात याद आने लगी, नाम का अर्थ केवल पुकारा जाना नहीं होता, उसे सार्थक करना है मेरी बच्ची ।

चेहरे पर हल्की मुस्कुराहट लिए, वह अब अपने घर को चल पड़ी । बिना ये सोचे कि उसके परीक्षा के नतीजे का क्या होगा, वह इस परीक्षा में फेल होगी या पास, उसे इसके बारे में अब नहीं सोचना था ।

द्वंद

रविवार का दिन था, और दोपहर के करीब डेढ़ बजने को आए थे । सर्दी का मौसम तकरीबन लौटने को था, जिससे मौसम में हल्की सी गरमाहट आ गई थी ।

इसी बीच वह नई उम्र का लड़का अपने कमरे में लेटा विचारों की एक अलग ही दुनिया में खोया हुआ था । उसके मन में हालिया युद्ध के भयावह दृश्य चल रहे थे । कि सहसा उसे कुछ खटपट की आवाज सुनाई दी, पता चला उसके पिता पैतृक नगर से घर पर लौटें हैं, वे बताने लगे कि आज नगर में नगर देवता का पूजन व भंडारा हो रहा है । और वे उसी पूजन से आए हैं

अनेकों लोगों को आज नगर में भोजन करवाया जाएगा, और न जाने कितने ही भूखों की भूख को एक पहर की तृप्ति मिलेगी ।

लड़का जो पहले से ही अपनी विचारों की दुनिया में खोया था, जिसके अंतर्मन में हाल ही के युद्ध की घटनाओं के विनाशकारी और भयावह चित्रण चल रहे थे।

यह सब कमरे में लेटा सुन रहा था, की तभी अचानक से उसे उसकी मनोस्मृतियां उनके पैतृक नगर में ले गई, जहां नगर देवता का वह भव्य मंदिर है । और उसके आस पास की वे गालियां, जिनमें बैठाकर लोगों

को नगर देवता का प्रसाद रूपी भंडारा, वितरित किया जा रहा होगा । अपनी कल्पनाओं में यह सब देखकर उसका ह्रदय प्रफुल्लित हो उठा ।

तो अगले ही पल उसकी कल्पना किसी पंछी की भांति, हवा के झोंकों की तरह उसके पैतृक नगर से निकलकर उसे अनंत आकाश में पृथ्वी से ऊपर ले गई ।

जहां पर उसे लगा जैसे पृथ्वी मानो उसकी चेतना में उतर आई हो ।

आकाश में एक गोला और उसके ऊपर मानव द्वारा खींची गई सरहदें, और उन सरहदों से बने अलग- अलग देश, और उन देशों में से एक था उसका अपना देश ।

वह एक पल के लिए सोचने लगा, आज इस देश में न जाने कितने ही ऐसे भंडारे, गुरुद्वारों में चलने वाले आठों पहर के लंगर चल रहे होंगे, किस किए?

केवल मानवता हेतु ।

मानवता का कल्याण एवं भूखे बे सहारों का पेट भरने के उद्देश्य से चलाए जा रहे होंगे ।

उसे यह मानव का मानव के प्रति प्रेम व करुणामय रूप प्रतीत हुआ ।

यह सब वह उसकी चेतना में उतरी, पृथ्वी पर देख ही रहा था कि, अचानक से उसकी अंतर्दृष्टि, पृथ्वी के दूसरे हिस्से पर जा पड़ी, जहां से गहरा काला धुआं उठ रहा था ।

उसे लोगों की चीख-पुकारें सुनाई देने लगीं..., ये क्या है?, मानो उसने भीतर ही भीतर सवाल किया, आवाज आई एक विनाशकारी विध्वंसकारी युद्ध ।

मानव का मानव के प्रति क्रूर व भयावह रूप ।

मन के क्षितिज पर उभरी पृथ्वी पर, आकाश से मानव के इन दो रूपों की अनुभूति कर, वह कुछ देर के लिए दुखित हृदय से शांत हो गया ...., शायद उत्तर भीतर था...।

अंतर्मन में देखने पर उसने पाया, जैसे वे युद्ध धरती के किसी एक कोने पर न होकर, उसके स्वयं के भीतर लड़े जा रहे हों, जैसे उसे प्रतीत हुआ, वह अपना ही एक हिस्सा खो रहा हो ।

इतने में अगले ही पल उसने महसूस किया, की उसकी आँखें भर आई हैं, उसे वे आंसू अपने नहीं उन लाखों लोगों के प्रतीत हुए, जो उस विनाश की चपेट में थे।

वह लड़का जो अपने ही कल्पित मन में अनंत आकाश में पृथ्वी से ऊपर जा पहुंचा था ।

वहां से वापस पृथ्वी पर आ गया, उसने आँखें खोली पृथ्वी वहीं पर थी, पर अब वह मनोरूपी दर्शक नहीं था ।

उसने मन ही मन अपने इष्ट को चीखते हुए पुकारा, हे नाथ, और प्रार्थना करने लगा, ये विनाश जल्द ही समाप्त हो, उसे नहीं जानना किस की विजय होगी, और किस की पराजय ।

बस मानवता बची रह जाए, ब्रह्मा के रचे इस संसार में...,

अगले ही पल अचानक बाहर से एक आवाज गूंजी मंटो अरे ओ मंटो.....,

तेरी लाठी तो बाहर बरामदे में छुटी है रे, फिर तू बगैर सहारे के भीतर कैसे चला आया?

मंटो खामोश रहा, और फिर उसने सिर झुका लिया ।

आँखें तो उसकी बरसों से बंद थी, पर आज उसने बगैर आंखों के इस दुनिया को साफ-साफ देखा था ।

आज के विनाशकारी युद्धों से परे,

मैं लौटना चाहता हूं
उस समय में
जब पृथ्वी सांस लेती थी
बिना शोर के ।
जब जंगल ही शहर थे,
और नदियां
किसी सीमा को नहीं जानती थीं ।
जब मनुष्य था भी तो बस
एक जीव की तरह-
अहंकार से हल्का,
आसमां और जमीं से जुड़ा ।
मैं लौटना चाहता हूं
विकास से नहीं,
विनम्रता से भरी दुनिया में ।
जहां बुद्धि कम हो तो चले,
पर हृदय पूर्ण हो ।
और यदि लौटना संभव न हो,
तो कम से कम इतनी आशा रहे –
कि कभी
मनुष्य की चेतना जगे,
और वह पृथ्वी को अपना घर समझे ।

चटक

सर्दियों की उस दोपहर, जब मैं घर जाने के लिए बस में बैठा था । उस वक्त मेरे कानों में तालियों की वो आवाज गूंजी, जिसने मानो वक्त को जैसे एक पल के लिए रोक दिया हो । ये कोई मामूली ताली की आवाज नहीं थी, इस आवाज में एक तीखी चटक थी । सपाट हथेलियों के मिलने से पैदा हुई एक ऐसी सदा, जो आशीर्वाद भी थी, और एक दबी हुई चीख भी ।

अक्सर जब मैं चंडीगढ़ के सेक्टर 17 बस स्टैंड से घर जाया करता था, तब इन्हें देखता था ।

ताली बजाकर **ला बाबू** कहते हुए, उन्होंने मेरी तरफ हाथ बढ़ाया । और मैंने हर बार की तरह मुस्कुराते हुए, इस भाव से हाथ उठा दिया कि नहीं देने बहना, ("मुझे इन्हें पैसे ना देने मे इनसे कोई ज़्याती बैर नहीं था") ।

और फिर हर बार वे भी मुस्कुराते हुए आगे निकल जाती थी । पर उस दिन उन्होंने मेरे सर पर हाथ रख कर प्यार से सर को हिलाते हुए कहा, कभी तो दे दिया कर बाबू, क्या करेगा इतने पैसे बचाकर । ये सुनकर उस वक्त मैं भी मुस्कुरा दिया । इतने महीनों से मानो हम दोनों को भी एक दूसरे की पहचान हो चुकी थी ।

और तभी अगले ही पल मेरे मुंह से निकल पड़ा, दीदी मैं आपको पैसे नहीं देता इसकी भी एक वजह है । "तब हमारी इन बातों को बस में बैठी बाकी सवारियां भी सुन रही थी ।", उन्होंने हल्का सा चौंकते हुए मुझसे पूछा "वजह, वजह क्या बाबू?.....,"

वजह ये दीदी की मैं आप लोगों को कमजोर नहीं समझता, 'कमजोर', उनके मुंह से निकला ।

हां दीदी कमजोर, "आप सब कमजोर नहीं हो ।"

उस वक्त वे मेरी तरफ एक टक देखती रह गई, और बस में बैठी दूसरी सवारियां जो हमें सुन रही थी, वे सब भी इसी तरफ देखने लगी ।

आओ दीदी बस के बाहर चलकर बात करते हैं, ये कहते हुए मैं उन्हें अपनी सीट से उठते हुए, बस से बाहर लेकर चला आया । उस वक्त हमें देख रहे लोगों के चेहरों पर एक अलग ही सवालिया भाव था । बस से नीचे आते ही उन्होंने पास रखी बेंच पर बैठने का इशारा करते हुए कहा "हां तो कहो....,"

हां दीदी अगर मैंने भी आपको पैसे दे दिए, तो मैं भी समाज के उन लोगों में शामिल हो जाऊंगा, जो आप सब लोगों को कमजोर समझते हैं । जबकि आप सब कमजोर नहीं हो, आप सब भी समाज में वो बराबर का हक रखते हो । भले ही शरीर से पुरुषों के मुकाबले थोड़ा कम हो, पर इस काबिल हो आप, की अपनी बुद्धि और विवेक का उपयोग कर समाज मैं अच्छा योगदान दे सको, कुछ नया सृजन कर सको ।

और मैं इस घटिया, और छोटी मानसिकता वाले समाज को भली तरह जानता हूं । जब आप में से कोई सामाजिक क्षेत्र में काम करने जाता है,

तो तब उसे टोंट मार – मार कर, घटिया मजाक कर, उसका मनोबल गिरा देते हैं, ये समाज के सभ्य कहलाने वाले छोटी सोच के लोग ।

और फिर आप सब को चंद रुपए देकर, और दया का पात्र बनाकर, मैं इन लोगों मे शामिल कदापि नहीं होना चाहता । और फिर ऐसा करने पर मैं आप सब के लिए, जीवन में कभी कुछ कर भी नहीं पाऊंगा ।"

"तू क्या करना चाहता है हमारे लिए", उन्होंने मेरी तरफ देखते हुए एक दबी और तीखी आवाज मे मुझसे सवाल करते हुए पूछा ।

नहीं जानता दीदी, क्या कब और कैसे, बस इतना कि आप सब को भी समाज में आपका वो उचित स्थान मिले जिसके आप सब हकदार हो । शिक्षा, स्वास्थ्य, और रोजगार बिना इस भय के कि लोग क्या कहेंगे, और बगैर अपनी पहचान छुपाए, आप सब भी गर्व से सर उठा कर जी सको ।

उस वक्त उनकी हल्की सी आंखें भर आई थी । और इन्हीं भरी आंखों से उन्होंने मुझे सीने से लगा लिया और सर पर हाथ रखते हुए, कहने लगी तू जीवन मे जो करना चाहता है, वह जरूर हो ।

मेरी बस कब की जा चुकी थी, जाती बस को हम दोनों ने देखा था, पर बातों मे लगे, न उन्होंने मुझे टोका, और न ही मैंने बीच में उठ कर जाना चाहा ।

इस सब के बाद हम दोनों के दरमियान कुछ पल की एक खामोशी सी छाई हुई थी । मैं बैठा अगली बस का इंतजार करने लगा, और वे न जाने किस सोच में डूबी थी । कुछ देर बाद मुझे भाई कहते हुए, वही तीखी सी आवाज सुनाई दी, उनके हाथों में चाय के दो कप थे । उन्होंने कप को मेरी तरफ बढ़ाते हुए कहा लो चाय पी लो भाई ।

उस दिन मुझे एक बड़ी बहन मिल गई थी ।

गीता दीदी देखने में मुझसे बस कुछ ही साल बड़ी लगती थी । चाय की चुस्की लेते ही मैंने उनसे सवाल करते हुए पूछा, दीदी आपने आगे की पढ़ाई पढ़ने का नहीं सोचा?.....,

उनकी आंखों में तब एक अलग ही चमक उठी, और फिर अगले ही पल बुझ गई । फिर वे बताने लगी कि उन्हें पढ़ने का बहुत शौंक था । वे डॉक्टर बनना चाहती थी, लेकिन जब भी मैं स्कूल में जाती थी, तब सिर्फ बच्चे ही नहीं बल्कि बड़े भी मेरा मजाक उड़ाते थे । और एक दिन उनकी हिंसा और शोषण इतना बढ़ गया कि मुझे तंग आकर स्कूल बीच में ही छोड़ना पड़ा ।

और फिर अगले ही पल उन्होंने एक हल्की सी हंसी हंसते हुए कहा, **"भाई अगर हम जैसे लोग किताबें उठा लें तो लोगों को डर लगने लगता है, इसलिए हमसे हमारी किताबें छीन ली जाती हैं" ।** और उस दिन मुझे समझ आया कि वे सिर्फ एक किन्नर नहीं बल्कि एक अधूरा सपना थी, जो इस खोखले समाज के भेदभाव की भेंट चढ़ गया था ।

ये आवाज अकेली गीता दीदी की नहीं थी, बल्कि उनके उस पूरे समुदाय की है । हर उस ताली के पीछे छुपे दर्द की है । जो उन्हें मजबूर करती है चौराहों, बस स्टैंड, रेलवे स्टेशनों पर मांगने के लिए, और इस सब का जिम्मेदार मैं इस समाज को मानता हूं ।

जिसने कभी इन लोगों को दिल से नहीं स्वीकारा, बस हमेशा अपनी दया का पात्र बनाकर रखा । कुछ को पैदा होते ही मार दिया । कहीं पढ़ने गए तो मजाक बनाकर, उल्टी सीधी हरकतें करते हुए छेड़कर इनका मनोबल गिरा दिया । और तो और अगर कहीं कोई इज्जत की जिंदगी बसर करने के लिए कमाने निकल पड़ा, तो उसे कमाने नहीं दिया गया । और फिर मजबूरन इन्हें चौराहों पर उन्हीं लोगों के सामने हाथ फैलाने पड़े ।

हम दोनों के दरमियान उस दिन ढेरों बातें हुई, लेकिन उस दिन के बाद मैं फिर कभी उनसे नहीं मिला । ना ही वे मुझे कभी बस स्टैंड पर दिखाई दी, लेकिन उनकी वह चटक वाली ताली की आवाज मेरे कानों में आज भी गूंजती है । **"वो ताली मुझे अब केवल एक मंगल ध्वनि नहीं बल्कि एक सवाल लगती है । की क्या हम कभी उन्हें सिर्फ दुआ देने वाले समझने के बजाए, उन्हें अपने साथ दफ्तर, स्कूल, बाजार में बराबरी से बैठने का हक देंगे?"**

असल इंसानियत उन्हें पैसे देकर दया का पात्र बनाना नहीं है, बल्कि उन्हें 'इंसान', और बराबर का 'नागरिक' समझना है । जब तक हम अपनी सोच नहीं बदलेंगे, तब तक गीता दीदी और उन जैसी हजारों अपनी पहचान छुपाकर या सड़कों पर ताली बजाकर मांगते हुए, अपना गुजारा करने के लिए मजबूर रहेंगी । इन्हें दया का पात्र न समझकर अपने बराबर का ही एक इंसान समझें, जो हम सब में से ही एक हैं ।

"ये कहानी सिर्फ कहानी नहीं बल्कि एक कड़वी हकीकत का आईना है ।"

भारत में 2011 की जनगणना के अनुसार लगभग पांच लाख किन्नर है, "ये पांच लाख भी वे हैं जिन्होंने समाज के सामने बिना किसी डर के अपनी पहचान को रखा है", और असल संख्या इससे कहीं ज्यादा है जो अपनी पहचान के लिए संघर्ष कर रही है ।

जहां देश की साक्षरता दर 74% है वहीं इस समुदाय की साक्षरता दर केवल 46% है, लगभग 52% बच्चे सामाजिक शोषण की वजह से बीच में ही स्कूल छोड़ देते हैं ।

लगभग 92% किन्नर लोग आज भी मुख्य अर्थव्यवस्था से बाहर हैं, इनमें से अधिकतर चौराहों पर मांगने और बधाई देने वाले जैसे कामों पर निर्भर हैं। केवल 2% ही ऐसे हैं जो संगठित क्षेत्र में काम कर पाते हैं।

ट्रांसजेंडर लोगों के लिए "सुरक्षा का अधिकार कानून"- 2019 आने के बाद, अब उन्हें पहचान पत्र तो मिलने लगा है। लेकिन सामाजिक स्वीकृति आज भी एक लंबा संघर्ष बनी हुई है।

और मैं चाहता हूं कि इस गहराई को आपको और मुझे, बल्कि हम सब को मिल कर पाटना होगा। ताकि इस भेदभाव को खत्म कर, मानवता को सर्वोपरि वरीयता दी जा सके।

फ़र्ज़ के पहिए

यह तब की बात है, जब सड़कों पर सन्नाटा पसरा हुआ था, और शहर की हर चमकदार सड़क बेजान जान पड़ती थी । हवाओं में सिर्फ एम्बुलेंस और पुलिस की गाड़ियों के सायरन का खौफ तैरता था । और दूर कहीं, उस चुभती हुई धूप में, खेतों के बीच से गुजर रही बिजली की तार पर दो कबूतर उलटे लटके हुए दिखाई पड़ते थे ।

उस वक्त सोनू के पिता अपने एक मित्र के साथ, खाली पड़ी नहर पर, फावड़ा और कसी लेकर, अपनी लूना को चढ़ाने के लिए रास्ता बनाने में लगे हुए थे; क्योंकि सड़क पर खाकी वर्दी वालों का पहरा था ।

सोनू, जहां उसके पिता काम करते थे, उसी फैक्टरी में बंद ताले के पीछे कुछ लोगों के संग सफाई करवाने के काम में जुटा हुआ था । यूं तो उसने भी अपने पिता के संग जाने की जिद्द की थी, लेकिन उसके पिता उसे तब अपने साथ लेकर नहीं गए ।

शाम को जब वह अपने पिता के साथ, फैक्टरी से घर जाने को, नहर के उस रास्ते से निकला, जो उसके पिता ने भरी दोपहरी में बनाया था । तब उस बनाए रास्ते को देख कर, उसके चेहरे पर मुस्कान खिल उठी । और तब उसे समझ आया, “मंजिल तक पहुँचने के रास्ते स्वयं नहीं बनते,

बल्कि उन्हें बनाना पड़ता, वैसे ही जैसे हाथों में लकीरें तो रहती है, लेकिन हमें अपनी किस्मत स्वयं लिखनी पड़ती है ।"

अब रोजाना सोनू और उसके पिता, झाड़ियों के बीच में नहर के उस संकरे रास्ते से फैक्टरी, और फैक्टरी से घर आया - जाया करते । उस दौरान पूरी सड़क पर एक सन्नाटा पसरा पड़ा रहता, केवल कुछ ट्रक और एम्बुलेंस कभी – कभार गुजरती दिखाई पड़ जाती थी ।

चौदह वर्ष का सोनू हमेशा से फैक्टरी में काम नहीं करता आया था, वह तो हसमुखी स्वभाव का पढ़ने में होशियार बालक था, जिसके चेहरे पर गंभीरता के दर्शन कभी – कभार ही होते थे । सोनू अपनी दो बहनों में मंझला था, उसकी बड़ी बहन निधि, बारहवीं जमात में पढ़ती थी, और छोटी बहन अनु, छठी जमात में ।

और काम पर तो वह अपने पिता के साथ जिद्द पकड़ कर आया था, "अगर आपको कुछ होगा, तो फिर चाहे मुझे भी हो जाए ।"

हुआ यूं था कि, संसार में बढ़ते कोरोना महामारी के प्रकोप से भारत सरकार ने पूरे देश में इक्कीस दिन के लिए लॉकडाउन घोषित कर दिया । उस दौरान सब जहां थे, मानो वहीं कैद होकर रह गए, फैक्टरियां, स्कूल, कॉलेज, सब बंद करा दिया गया । तब सोनू के पिता दो दिन तक तो घर पर बैठे रहे, लेकिन फिर अचानक उन्होंने काम पर जाने की बात कह दी, जिससे पूरे घर में हड़कंप मच गया था । तीनों बच्चे एक तरफ, एक तरफ पिता और एक तरफ उन बच्चों की मां, जो इस दुविधा में थी, आखिर पति की तरफदारी करे या बच्चों की । अंत में उन्होंने तटस्थ रहने का फ़ैसला कर, घर की इस जंग को पिता व बच्चों तक सीमित रहने देने का फ़ैसला किया ।

सोनू निधि के पास जाकर – “देखो न दीदी, पापा बाहर ऐसे हालातों में भी काम पर जाने की जिद्द कर रहें हैं ।”

सामने से निधि - “क्या कहा?, नहीं, ऐसे हालात में नहीं जाने देंगे पापा को ।”, ये सुनते ही अनु भी पीछे – पीछे उन दोनों के साथ हो पड़ी, तीनों भाई बहनों ने अपने पिता को घेरा जमा लिया

निधि बोली – “पापा ये हम क्या सुन रहें है, बाहर ऐसे हालात में, हम आपको काम पर नहीं जाने देंगे, कह देते हैं ।”

अरे बेटा तुम सब समझने की कोशिश करो, कुछ नहीं होगा मुझे”, उनके पिता ने कहा ।

इतने में उनकी बात को काटते हुए अनु बोल पड़ी – “ऐसे कैसे चले जाओगे पापा आप, “हम बाहर से कुंडी लगा कर आपको बंद कर देंगे ।”

तब गुड़िया की बात पर उनके पिता हंस पड़े, - “अरे गुड़िया, और बच्चों जिद्द न करो, सरकार का क्या है, लगा दिया लॉकडाउन, पर मुझे तो मेरे बच्चे पालने हैं ना, मेरे छोटे - छोटे बच्चे हैं, और फिर कोरोना नहीं मारेगा, उससे पहले हमें पेट की भूख मार देगी । घर में चंद पैसे पड़े होने जरूरी है, क्या पता कब कौन विपदा आन पड़े ।”

सोनू – “अच्छा पापा अगर आप जाओगे, तो मैं भी, आपके साथ वहां काम पर चलूंगा ।

“अरे बेटा सोनू, तू क्या करेगा जाकर, अभी तेरी पढ़ने की उम्र है, काम के लिए तो अभी समय पड़ा है, बेटा ।”

सोनू – “नहीं पापा कह दिया सो कह दिया, अगर आपकी भी जिद्द है, तो फिर मेरी भी, “अगर आपको कुछ होगा, तो फिर चाहे मुझे भी हो जाए ।”

“अरे नहीं बेटा सोनू, ऐसे नहीं बोलते, चल पड़ना साथ, जा अपनी मां को बोल दे तेरे लिए भी रोटी बांध देंगी ।”

बस वो सुबह थी, और आज का दिन, सोनू अब हर दिन अपनी उस जिद्द और पिता के लिए, उसके प्रेम की वजह से, रोजाना अपने पिता के पीछे लूना पर बैठकर नहर की उस संकरी पगडंडी पर झाड़ियों के बीच से होता हुआ, फैक्टरी पहुंच जाया करता ।

उसे अब यहां अपने पिता के साथ आते हुए, एक सप्ताह बीत गया था । फैक्टरी में सभी कर्मचारी तो नहीं आते थे पर जो आते थे, उनसे उसकी अच्छी जान पहचान हो गई थी ।

सुबह सबसे पहले आते ही वे सब, फैक्टरी के मुख्य गेट पर ताला लगा देते थे, ताकि पेट्रोलिंग जीप अगर गुजरे तब फैक्टरी बंद ही जांच पड़े । और जब दूर कहीं उन्हें पुलिस जीप की गाड़ी का सायरन बजता सुनाई देता, तब वे सब अपनी – अपनी मशीनें बंद कर दुबककर चुप – चाप बैठ जाते, जैसे पेट की भूख के लिए न जाने कौन बड़ा अपराध कर रहे हों ।

यहां अपने पिता के साथ, काम पर आने से सोनू मानो एक नई दुनिया से रूबरू हुआ हो, उसे अब इस छोटी सी उम्र में भली तरह समझ आने लगा था, की पैसे कमाने कितने मुश्किल हैं, और कमाने कितने जरूरी । तब उसे ये भी स्मरण हुआ आखिर क्यों उसके पिता काम पर आने की जिद्द कर रहे थे, क्योंकि ऐसे जिद्द करने वाले वहां वे अकेले नहीं थे । वहां और भी पिता थे, जो अपने परिवार और बच्चों के लिए, महामारी की परवाह

किए बगैर घर से बाहर काम पर निकल आए थे । अक्सर वे सब लोग बत्ती कट जाने पर बातें करने बैठ जाया करते थे, तब सोनू उन बड़ों के बीच में कुछ बातें तो नहीं करता था, लेकिन खड़ा सुनता जरूर रहता ।

वहां सिर्फ हेमराज नाम का ही एक ऐसा व्यक्ति था, जिसे जीवन और दुनियादारी की कोई फिक्र नहीं थी । वह तो केवल अपने पेट के लिए काम पर आया करता था, यहां यह ध्यान देने वाली बात है, हेमराज जैसे व्यक्ति के लिए पेट की भूख केवल रोटी कह देना, गलत होगा । असल में उसके लिए रोटी और दवा से ज्यादा जरूरी 'दारू' थी । भले ही उसे रोटी मिले या न मिले पर दारू शाम को जरूर चाहिए थी, और कारीगरी के मामले में तो वह एक नंबर था, शाम तक पांच सौ रुपए कमा लेता था । जिसमें से दो सौ रुपए तो उसे हर शाम किसी भी हाल में मालिक से चाहिए ही चाहिए थे । और अब तो लॉकडाउन की वजह से शराब के ठेके भी बंद पड़ गए थे, जिस वजह से उसे दो नंबर में दारू खरीद कर पीनी पड़ती थी, जो अब उसे और महंगी पड़ती थी ।

वहां काम करने वाले सब हेमराज से खास तौर पर दूरी बना कर रखते थे, क्योंकि भरी गर्मी के इस मौसम में भी वह कई – कई दिन नहीं नहाता था, उसे देख कर, राजेंद्र अक्सर बोल देता था, "अरे इसे क्या कोरोना होगा, उल्टा ये कोरोना को हो जाएगा, हेमराज नाम की बीमारी, इसे देख कर कोरोना भाग जाए ।" और ये व्यंग्य कहीं हद तक सही भी दिखाई पड़ता था, क्योंकि उन लोगों ने कभी हेमराज को बीमार पड़े नहीं देखा था, हां उसके शरीर पर चोटें लगना आम बात थी, क्योंकि वह पीकर अक्सर नली, नालों में गिरता पड़ता रहता था ।

अपनी गली के कुत्तों का वह मानो मसीहा था, जबरदस्ती उनके मुंह में ठुस – ठुस कर उन्हें चिकन और रोटियां खिलाया करता, और फिर वहीं

गली के चौराहे पर उन कुत्तों के साथ सो जाता । ऐसे व्यक्तित्व का धनी होने पर भी, वह अपने जीवन में हर महीने एक दिन राजा जरूर बनता था । और उसी रात बिखरी भी, और यह दिन होता था, उसे तनख्वाह मिलने का दिन ।

उस दिन वह अपने एरिया के बेवड़ों के लिए हेमराज राजा भाई हुआ करता, "आओ सब आओ, कितनी पीनी है, मेरी तरफ से पियो, सब को वह दारू की पार्टी दिया करता, और फिर अक्सर लोग उसे ज्यादा दारू पिला कर नशे में उसके पैसे निकाल कर ले जाते । और अगली सुबह वह फिर से राजा से रंक बन जाता । दोपहर के भोजन के समय जब सब खाने बैठ जाते, तब वह बारी – बारी अपने कुछ चुनिंदा साथियों से एक – एक रोटी जमा कर अपना पेट भर लेता, और अगर बच जाती तो लिफाफे में रख कर शाम के लिए ले जाता, ऐसे ही वह सबसे एक - एक बीड़ी मांगता फिरता, "भाई बीड़ी दियो ।"

सोनू उसे पिछले एक सप्ताह से देखता आ रहा था, मगर आज उसे पता नहीं क्या हुआ, कि वह उसे समझाने बैठ गया, जैसे कि उसे यकीन था कि उसके समझाने से वह बदल जाएगा ।

सोनू – "हेमराज अंकल क्या आप जानते हैं, आप इन सब से बेहतर जिंदगी जी सकते हैं ।"

हेमराज – "क्या बोल रहा है बेटा ।"

सोनू – "अरे हां अंकल, आपका तो कुछ खर्च ही नहीं है, आप रोज शाम को पांच सौ रुपए आराम से कमा लेते हो, हैं ना ।"

हेमराज – "हां ये तो है, तो इससे क्या ।"

सोनू – "तो अंकल आप कुछ पैसे जमा करो और बुलेट मोटर साइकिल खरीद लो, उससे काम पर आया करो । सूट - बूट पहनकर, यहां आकर काम वाले कपड़े पहन लिया करो, और जाते वक्त फिर से सूट - पैंट पहनकर चले जाया करो । और अगर दारू पीनी ही है, तो आराम से अपने कमरे में जाकर पी लिया करो, और उसके लिए एक कमरा किराए पर ले लो आप ।"

सोनू से ये सब बातें सुनकर हेमराज के चेहरे पर चमक और होंठों पर मुस्कान आ गई, जैसे भीतर कोई रोशनी जल उठी हो, और फिर इसी के साथ वह अगले पल सोनू से कहने लगा, हां बात तो तूने सही कही है बेटा, चल ठीक है मैं कोशिश करूंगा ।"

और फिर वह चौदह साल का लड़का, सारा दिन पूरी फैक्टरी में सबसे कहता फिरता रहा, की हेमराज अब बदलने वाला है, वह नहा – धो कर सूट – बूट में रहा करेगा ।

अगले कुछ दिन तक हेमराज में बदलाव दिखा भी, बालों में तेल लगा हुआ, चेहरा एकदम चमकता हुआ सा, पैरों में नए बूट और तन पर साफ धुले लेकिन कुछ हद तक पुराने, जिन्हें शायद उसने सड़क किनारे लगने वाली पुराने कपड़ों की सेल से खरीदा होगा ।

लेकिन हेमराज का ये नया रूप ज्यादा दिनों का मोहताज नहीं रहा, मानो वह अपनी पुरानी शख़्सियत का आदी हो चुका था । या फिर यूँ कहें कि भीतरी दुनिया में वह अकेला था, जो कभी – कभी शराब के नशे में बच्चों की तरह रोने लगता, और फिर खुद ही चुप भी हो जाता । ये सब देख कर सोनू को कुछ बुरा तो लगा, लेकिन फिर उसने उससे कुछ कहा नहीं ।

और उस शाम जब वे सब मशीन पर काम कर रहे थे, तब पुलिस की जीप का सायरन उन्हें सुनाई पड़ा, जिसे सुनते ही हर बार की तरह उन्होंने झट से मशीन बंद कर दी । लेकिन उस रोज यह सायरन तीसरी दफा था, जिसे सुनते ही सोनू घबरा उठा । तब सोनी उसे शांत करते हुए, झकझोर कर कहता है, "आदमी का बच्चा है तू, आदमी का, इतना नहीं डरा करते ।"

ऐसे ही एक दिन जब सोनू, राजेंद्र को खोजता हुआ, जसपाल से उसके बारे में पूछने लगा, "अंकल जी राजेंद्र भाई नहीं आए क्या आज काम पर?", तब सामने से जसपाल ने बड़ी गंभीर मुद्रा, और दुखित स्वर में सोनू से कहा, "ओ हो यार, राजेंद्र?, ओ तां अल्लाह नूं प्यारा हो गया यार", सामने से सोनू, "क्या बात कर रहे हो अंकल, और कब?"

जसपाल अंकल जवाब देते हुए, "बस हूणे – हूणे यार ।"

तब सोनू हंस पड़ा मानो उनका व्यंग्य समझ गया हो, और बोल पड़ा, "क्या अंकल आप भी कुछ भी मजाक करते रहते हो ।"

फिर सामने से जसपाल अंकल भी हंस दिए, और उसी मंद सी हंसी के साथ कहने लगे, "अरे यार नहीं आया ओ अज, कोरोना तों घट अपनी बोटी (बीवी) तों ज्यादा डर दावा ओ, ओने ही ओनु बंध के रखया होणा ।"

इतने में पीछे खड़ा काका बोल पड़ा, "अरे जसपाल वो डरता है अपनी बोटी से या तू", तेरे को तो तेरी बीवी दरवाजे से ही घसीटते हुए, अंदर ले जाती है, चल वे माहिया किथे सी इन्ने दिन सारी वेरी काम – काम - काम ।"

इतने में सोनू बोल पड़ा, "क्या सच में काका अंकल ।"

"अरे हां सोनू, चाहे पूछ ले इससे ही", काके ने कहा ।

तब काके की बात को काटते हुए, जसपाल बोल पड़ा “ओए अस्सी शेर हैंगे आ ।”, तभी काका उसकी बात को काटते हुए बोल पड़ा, “अरे माना शेर है, उसके सामने तो भीगी बिल्ली बन जाता है, हाँ जी, हाँ जी करते घूमता रहता है ।”

जसपाल उसकी बात का जवाब देते हुए बोला, “अरे चल छड्ड यार, घरवाली दे सामने तां हर कोई भीगी बिल्ली बण जांदा, हूण इस मुड़े नूं की पता जिदे सामने तूं गलां मारी जांदा, इदा जदों व्याह होणा ओदों इस नूं पता चलणा ।”

ये सुनते ही सोनू हल्का सा मुस्कुरा दिया, तभी अगले पल सामने दीवार पर बत्ती जल उठी । जसपाल काके को हाथ से इशारा करते हुए बोला, "जा हूण, काम करला जाके ।”

अगले पल काका हांफते हुए सोनू से कहने लगा, “चल सोनू चलें, शीट की कटिंग करनी है ।”

जब काका सोनू और बाकी सब वहां पर काम कर रहे थे, तब काका बताने लगा कि उसने अपने बच्चों के भविष्य के लिए बहुत सी योजनाएं बना रखी है । असल में काके के पास तीन बच्चे थे, सबसे बड़ा लड़का छह बरस का, फिर मंझली लड़की चार बरस की और एक सबसे छोटी लड़की दो बरस की । वह बताते हुए कहने लगा कि उसने अपनी दोनों लड़कियों का डाकखाने में निवेश खाता खुलवा रखा है, जिसकी हर महीने वह दस हजार की किस्त जमा करता है, और जब उसकी लड़कियां ‘बालिग’ हो जाएंगी तब उन्हें वह पैसा मिल जाएगा । जिससे उनकी आगे की पढ़ाई और शादी के लिए, उस वक्त उसे कोई दिक्कत नहीं होगी । इसी के साथ

वह कहता है कि वह अपनी दोनों लड़कियों को खूब पढ़ाएगा, जितना वे पढ़ना चाहेंगी, और लड़के के साथ पढ़ाई को लेकर कोई जबरदस्ती नहीं करेगा । अगर लड़के को पढ़ना होगा तो पढ़ेगा नहीं तो नहीं सही, अगर उसका किसी खेल में मन होगा, तो वह उसे किसी खेल अकादमी में दाखिल करा देगा । साथ ही उसके बालिग होते ही उसको एक मोटर साइकिल निकलवा कर दे देगा, और उसे कहेगा बेटा मजे कर बाप के पैसों पर, फिर इसी के साथ वह एक लंबी सांस भरता हुआ कहता है, 'जो जिंदगी उसने नहीं जी वह अब उसका बेटा जिएगा', वह इतना कमाएगा की उसके बच्चों को कभी किसी तरह की कोई तकलीफ नहीं होगी ।"

साथ ही वह कहता है कि वह अपने बच्चों की शादी को लेकर भी उन पर किसी तरह की कोई पाबंदी नहीं लगाएगा । मेरे तीनों बच्चों को जहां चाहे जिससे चाहे शादी करनी हो वे करेंगे । हां पर लड़के से एक बार के लिए वह ये जरूर कहेगा कि हो सके तो किसी अनाथ लड़की से शादी कर के, उसकी जिंदगी खुशियों से भर दे, उसे भी परिवार का हम सब का प्यार दे, पर अपनी इस इच्छा को लेकर भी वह उसके ऊपर कोई दबाव नहीं बनाएगा, बाकी उसकी जैसी चाहे इच्छा वह वो करे ।

तब सोनू उन्हें बोल पड़ा, "अंकल जी अभी से इतना कुछ सोचे हुए हो आप ।"

काका जवाब देते हुए, "अरे हां बेटा सोनू, सोचना पड़ता है, अभी नहीं सोचेंगे तो फिर कब, मैं तो तुझे भी कहता हूं, कहां अपनी इस जिद्द में कमाने के चक्कर में पड़ा है, अभी न तेरे बीवी न बच्चा, अभी पढ़ाई कर और जिंदगी जी ।"

तब सोनू हल्का सा सर नीचे झुकाए उन्हें बोल पड़ा, "जी अंकल ।"

“हां बेटा, गलतियां ही हैं, जो बाद में एक्सपीरियंस बनती हैं, अब हमें देखो हम तुम्हें इतना समझाते है, क्योंकि हमने जो गलतियां की, हम नहीं चाहते वही सब जीवन में तुम भी करो ।”

‘जी अंकल सही कहते हो आप’, “सोनू ने उन्हें जवाब देते हुए कहा ।”

"सोनू, जीवन में अगर हम कभी किसी गलत रास्ते पर पड़ जाएं बेटा, तो ज़िंदगी एक मौका जरूर देती है । ज़िंदगी के उस रास्ते में एक यू-टर्न ज़रूर आता है; बस हमें यह पता होना चाहिए कि कब वह यू-टर्न लेकर वापस मुड़ना है ।”

सोनू उस वक्त उनकी बताई बातें सुन कर मौन था, की अगले ही पल उन्हें खबर सुनाई दी कि लॉकडाउन अब और आगे बढ़ा दिया है, ये सुनते ही काम कर रहे सभी लोगों के बीच एक हड़कंप सा मच गया । और इसी के साथ उन सब के चेहरों पर एक अलग सी मायूसी छा गई । फिर वे सब आपस में बातें करते हुए कहने लगे, न जाने अब और कितने दिन ऐसे ही छुप – छुप कर काम पर आना होगा । इतने में अगले पल काका बोल पड़ा, “यार मेरे तो बच्चों की डाकखाने की पिछले दो महीने की किस्त भी रुकी पड़ी है, ऊपर से स्कूल से मैडम का फोन आया था कि बच्चों का दाखिला जमा करा जाओ नहीं तो अगली कक्षा में नाम नहीं चढ़ेंगे, और साल बर्बाद हो जाएगा, ऐसे में मालिक से एडवांस भी नहीं मांग सकता ।

तभी जसपाल बोला, “हां सही कहया काके तूं, ऐस वेले तो जो बणदा ओहि मिल जावे ।”

“हां सही कहा जसपाल तूने”, ‘काके ने उसे जवाब देते हुए कहा ।’

उस पल सोनू को एहसास हुआ, हर दम चहकता रहने वाला काका इतना मायूस भी हो सकता है, तभी सोनी उसे हौसला देते हुए बोला, "काके आदमी का बच्चा है तू, आदमी का बच्चा, चिंता न कर सब सही होगा कोई न कोई रास्ता निकल आएगा ।"

और फिर अगले ही पल काके ने हल्का सा खांसते हुए, अपनी छाती पर हाथ रख लिया, जब सभी उससे पूछने लगे क्या हुआ, तो वह कहने लगा नहीं कुछ नहीं बस कुछ दिनों से यहां हल्का सा दर्द होने लगता है । जब सोनी ने उसे दवाई ले आने को कहा, तो वह इस पर हंसता हुआ बोला, "अरे इसे तो दवा नहीं दारू सही करेगी, और फिर कौन डॉक्टरों के चक्कर में पड़े ।" काका ऐसा व्यक्ति था, जिसे अपने स्वास्थ्य की तो चिंता थी नहीं, लेकिन जब उसे घर से फोन आता था, कि उसके किसी बच्चे की तबीयत खराब है, तब वह तुरंत काम छोड़ कर भाग खड़ा होता । शायद दुनिया का हर बाप ऐसा ही होता है, फिर वह अपने लिए नहीं बल्कि अपने बच्चों के लिए जीता है ।

महामारी अपना प्रकोप दिखा रही थी, और ये सब अपने फ़र्ज़ के आगे अपना हौंसला, लॉकडाउन के आगे विस्तार से इनका हौसला जरा भी नहीं टूटा था । अब भी वे सब नहर की उस संकरी सी पट्टी से झाड़ियों के बीच से होते हुए, अपनी – अपनी साइकिल, स्कूटी और लूना को लेकर काम पर पहुंच ही जाते थे । क्योंकि उन सब के हौंसले बुलंद थे, और उन्हें विश्वास था, एक दिन सब सही होगा । यही उम्मीद मायूस से उन चेहरों को फिर से उठा देती थी ।

कुछ दिन बाद जब सोनू को राजेंद्र काम पर दिखा, तब उसे देख कर उसकी हल्की सी हंसी आ गई ।

जब राजेंद्र ने उससे पूछा कि “क्या हुआ सोनू, क्यों मुस्कुरा रहा है”, तब सोनू सामने से बोल पड़ा, “राजेंद्र भाई, आप इतने दिन नहीं आए, जसपाल अंकल बता रहे थे, आपको भाभी ने बांधकर रखा हुआ है, और आप भाभी से डरते हैं ।”

तब राजेंद्र सामने से जवाब देता हुआ बोल पड़ा, “अरे उस सरदार को क्या पता, वह तो खुद अपनी बीवी से डरता है, तुझे बताया नहीं काके ने?”, “हां बताया था भाई”, सोनू ने जवाब देते हुए कहा, तब सामने से राजेंद्र बोला, “तो बस फिर, उस सरदार की बातों में ना आया कर ।”

वक्त का पहिया घूमता रहा, बंदिशों के कोहरे को चीरते हुए आखिरकार वह सुबह आई, जब अखबारों ने लॉकडाउन समाप्ति का ऐलान किया । पाबंदियां अब हट गई थी । सड़कों पर एम्बुलेंस के सायरन की आवाज अब कम सुनाई पड़ने लगी थी, और बाजार फिर से कुछ जरूरी एहतियातों के साथ खुल उठे थे ।

सोनू के पिता की लूना, अब नहर वाले उस झाड़ियों के रास्ते से हट कर मुख्य सड़क पर शान से दौड़ने लगी थी । इसी के साथ सोनू की जिद्द भी अब पूरी हो चुकी थी, क्योंकि अब उसके स्कूल खुल चुके थे, उसके पिता ने उसके हाथ में किताबों से भरा झोला थमाते हुए उसे स्कूल के गेट पर छोड़ दिया ।

लेकिन बीते इन दिनों सोनू एक नई दुनिया से रूबरू हुआ था, उसने परिवार और बच्चों के लिए इन अलग – अलग चेहरों में फ़र्ज़, हिम्मत और इच्छाएं एक सी देखी थी, काके की कही बातें, हेमराज का जबरदस्ती कुत्तों को चिकन खिलाना, जसपाल का हूणे – हूणे वाला मजाक और सोनी का उसे झकझोरते हुए कहना “आदमी का बच्चा है तू”, ये सब बातें उसके दिमाग में किसी धुंधली याद की तरह छप गई थी ।

कभी कभार वह अपने पिता से इन सब की खैरियत के विषय में पूछ लेता था, और काके से तो उसकी खास तौर से फोन पर अक्सर बात हो जाया करती थी, एक दफा तो काके ने उसको फोन करते हुए शहर में किसी खेल अकादमी के बारे में पता करने को भी बोला था, लेकिन उसके लड़के की तब उम्र कम होने से उसका दाखिला न हो सका था ।

स्कूल जाने वाला सोनू अब स्कूल की अंतिम जमात में था । स्कूल की वार्षिक परीक्षाएं खत्म होने के बाद उसके सब दोस्तों ने ऋषिकेश घूमने जाने का प्रोग्राम बनाया था । सोनू भी तब वहीं खड़ा था; जब सब ने उससे पूछा, तो उसने मना कर दिया, लेकिन फिर अगले ही पल उसे कुछ सालों पहले 'काके' की कही बातें याद आ गईं, "अभी पढ़ाई कर और जिंदगी जी, कमाई तो सारी उम्र करता रहेगा", और फिर उसने भी जाने के लिए हाँ कह दी ।

ऋषिकेश में गंगा के उस घाट पर दृश्य बड़े ही मनमोहक थे, गंगा का वह ठंडा पानी जिसमें से बाहर निकलने को सोनू का मन ही न होता था । और शाम के समय की वो गंगा आरती, मानो किसी के भी हृदय को अथाह शांति से भर दे, उस क्षण एक पल के लिए सोनू को काके का स्मरण हुआ, लेकिन फिर धुंधला सा पड़ गया ।

दो दिन बाद जब वह घर वापिस लौटा, तब उसके पिता काम पर गए हुए थे, जब वे शाम को घर लौटे, तब सोनू ने मां के हाथ से चाय का कप लिया, और उनके पास चला गया । “पिताजी प्रणाम”, करते ही उसने उनके समक्ष चाय रख दी, और उसके पिता ने उसे पास में बैठने की और इशारा कर दिया ।

कुछ देर बाद चाय की चुस्की लेते ही, सोनू के पिता के मुंह से निकला, “सोनू, बेटा वो काका भी चल बसा”, पिता के मुंह से ये सुनते ही सोनू

को एकदम भीतर से झटका सा लगा, जैसे उसे ये किसी सपने सा प्रतीत हुआ हो, उसे अपने सुने पर भरोसा नहीं हुआ, और अगले ही पल उसके मुंह से निकला, “क्या, और कैसे पिता जी?”

“बेटा दो दिन पहले ही इतवार को उसे अचानक दिल का दौरा पड़ा, अस्पताल ले जाने का भी वक्त न मिला”, ‘उसके पिता ने जवाब देते हुए कहा ।’

“मगर पिताजी वे तो देखने में अच्छे भले थे, और अभी कुछ सप्ताह पहले ही तो मेरी उनसे फोन पर बात हुई थी ।”

“हां बेटा, मगर तू तो जनता ही था ना उसे, कितना सोचता था वह, और फिर आराम भी कौन सा करता था, पूरे दिन तो कमाने में लगा रहता था ।”

“तो पिताजी आप गए थे, उसके घर पर?”, ‘सोनू ने अपने पिताजी की और देखकर उनसे पूछा ।’

“हां बेटा, सभी गए थे ।”

उस वक्त अपने पिता से ये दुखद वृतांत सुनकर सोनू मौन सा गया, मानो भीतर कुछ गहरा चल रहा हो, वह काके के उन बच्चों के बारे में सोचने लगा, कि आखिर अब पिता का साया सर से उठने के बाद उनका क्या होगा ।

काके ने उन सब के भविष्य को लेकर कितनी योजनाएं बनाई थी, लड़कियों के लिए हर माह डाकखाने की किस्त, लड़के को किसी स्पोर्ट्स अकादमी में डाल देना । और उसके बालिग होते ही उसे नई मोटर साइकिल निकलवा कर दे देना, और कहना ‘बेटा ऐश कर पिता के पैसों पर’, “जो जिंदगी तेरा पिता नहीं जी सका वह तू जी ।”

मगर विधाता को भी जैसे कुछ और ही मंजूर था । जो समय से पहले ही वह शख्स चल बसा, और फिर तभी उसे जसपाल अंकल का हूणे – हूणे वाला मजाक स्मरण हो उठा और सोनू के मन ने जैसे दोहराया, यकीन नहीं होता, वह इंसान दो दिन पहले ही अल्लाह को प्यारा हो गया, जिसने उसे जीवन की कई बड़ी सीख देकर जीवन को जीना सिखाया था ।

असल में जिम्मेदारियां निभाने वाला, हर वह शख्स शायद ये भूल जाता है,

की इन जिम्मेदारियों में उसकी एक जिम्मेदारी खुद के लिए भी बनती है,

और वह है, "खुद को काबिल बनाने की जिम्मेदारी", दुनिया की इस भीड़ में,

"खुद का ख्याल रखने की जिम्मेदारी.....।"

लेखक की ओर से

यह बेहतर होगा कि कुछ लम्हों, यादों को धुंधला पड़ने से पहले ही हम कलम से कागज पर उकेर दें ।

कुछ जिन्हें हम लिखकर सदा के लिए भूल जाना चाहते हैं, जैसे किसी अध्याय को बंद कर देना, (पर वास्तव में ऐसा होता नहीं) और कुछ को हमेशा के लिए अमर कर देने के लिए ।

यह कहानियों का छोटा सा संग्रह लिखना मेरी कोई व्यावसायिक इच्छा नहीं, बल्कि मेरी आंतरिक प्रेरणा थी, जैसे एक बच्चा भीड़ में बिछड़ जाने पर खोया हुआ सा अपना अस्तित्व तलाशने लगता है, बस कुछ वैसे ही।

लेकिन इसी के साथ ही मैं हर उस व्यक्ति को भी धन्यवाद देना चाहूंगा, जो मेरे जीवन में आया, जिनमें से कुछ आज तक मेरे साथ हैं, (लेकिन न जाने कब तक) और कुछ कब के चले गए ।

हर आने और जाने वाले लोगों ने मुझे कुछ न कुछ बनाया, मुझे लगता है, मैं आज जो कुछ भी हूं, इन्हीं लोगों की वजह से हूं ।

अगर जाने वाले वे चंद लोग ठहर जाते, तब शायद आज मेरा वजूद कुछ और होता, पर शायद उनका चले जाना ही नियति थी ।

लेकिन अगर सर्वाधिक जाना मुझे आज भी किसी का खलता है, तो वह है मेरी मां, आज भी मुझे लगता है, काश कि अगर वे होती तो जीवन कितना खुशनुमा होता, लेकिन सच कहूं तो उतना बुरा भी नहीं है ।

मनोज की कहानी से अगर मुझे कुछ सीख मिलती है, तो वह केवल इतनी सी की अगर आपके हृदय में किसी के लिए कुछ भावनाएं हैं, तो उन्हें खुलकर कह दो ।

मेरा मानना ये है कि अगर तुम नहीं कहोगे, तब भी एक दिन तुम उसे खो दोगे, जब वह शख्स किसी और का होगा ।

और फिर अंततः दुनिया में हमेशा के लिए कुछ भी नहीं रहता, आप भी नहीं । अगर कुछ बचता है तो सिर्फ वह अधूरी टीस, जो जीवन भर आपको कचोटती है, और अंततः आपके साथ ही मिट जाती है ।

अंत में एक हिदायत आप सब को जरूर देना चाहूंगा, चाहे जीवन कैसा भी हो, इन दो शब्दों पर तो कभी मत बिताना 'शायद' और 'काश', शायद ऐसा हो पाता या शायद ऐसा हुआ होता । या फिर 'काश' मैं उसे बोल पाता/पाती ।

मन में जो है उसे खुलकर कहो, आखिरकार जीवन एक ही मिला है ।

धन्यवाद !